अंशु

अंशु

शिव कुमार झा टिल्लू

ISBN : ९७८-९३-८०५३८-३३-४

मूल्य: भा. रु.१००/-

पहिल संस्करण : २०१०.

श्रुति प्रकाशन रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-११...२
Typeset by: Umesh Mandal.
Distributor: *Pallavi Distributors*, Ward no- ६, Nirmali (Supaul), मो.- ९५७२४५.४.५, ९९३१६५४७४२
Anshu: Anthology of ***Maithili Criticism*** *by Shiva Kumar Jha Tillow.*

शिवकुमार झा 'टिल्लू' शिव कुमार झा टिल्लू १९७३-

शिव कुमार झा ''टिल्लू'',पिताक नामः स्व. काली कान्त झा ''बूच'', माताक नामः स्व. चन्द्रकला देवी,जन्म तिथिः ११-१२-१९७३,शिक्षाः स्नातक (प्रतिष्ठा),जन्म स्थानः मातृक- मालीपुर मोड़तर, जि. - बेगूसराय, मूलग्रामः ग्राम-पत्रालय - करियन, जिला - समस्तीपुर, पिन: ८४८१०१,संप्रतिः प्रबंधक, संग्रहण,जे. एम. ए. स्टोर्स लि.,मेन रोड, बिस्टुपुर जमशेदपुर - ८३१००१, अन्य गतिविधिः वर्ष १९९६ सँ वर्ष २००२ धरि विद्यापति परिषद समस्तीपुरक सांस्कृतिक ,गतिवधि एवं मैथिलीक प्रचार-प्रसार हेतु डॉ. नरेश कुमार विकल आ श्री उदय नारायण चौधरी (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक) क नेतृत्वमे संलग्न।

११.मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान

१२. समीक्षा-मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)
१३.समीक्षा- तरेगन
१४. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा
१५. हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनीत उत्पल)- समीक्षा
१६.समीक्षा-अरिपन (कविता संकलन)

१७.समीक्षा-बिन बाती दीप जरय
१८.मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान
१९.पोथी- समीक्षा भावांजलि
२०.कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक- (समीक्षा)
२१.रमाजीक काव्य यात्रा
२२.सूर्यमुखी
२३.अम्बरा- (कविता संग्रह, राजदेव मण्डलक)

२४. *मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान*

१.मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण

उपन्यास कोनो गद्य साहित्य रूपी व्यष्टिक आत्मा मानल जाइत अछि। मैथिली साहित्यमे लगभग सए वर्ख पूर्व धरि उपन्यास विधाक रचना लगभग शून्य छल। ऐ कारण ओइ अवधि धरि मैथिलीकेँ पूर्ण साहित्यिक भाषा नै मानल जाइत छल। जनसीदन जी ऐ भाषा साहित्यक पहिल मान्य उपन्यासकार छथि। हिनक पाँच गोट उपन्यासक पश्चात् एखन धरि देसिल वयनामे साहित्यक समग्र विधाक चित्रण करैत बहुत रास उपन्यास पाठक धरि पहुँचल अछि। परंच ऐ साहित्यक संग सभसँ पैघ बिडम्वना रहल जे पछातिक समाज जकरा सामाजिक शब्दमे दलित कहल जाइत अछि, ओकर महिमामंडनक गप्प तँ दूर प्राय: ऐ साहित्यमे अकस्मात् अवांछित अभ्यागत्तक रूपमे क्षणप्रभा जकाँ कतौ-कतौ चर्चित अछि। दलित वर्ग तँ सामाजिक, सांस्कृतिक आ शैक्षणिक रूपेँ सम्पूर्ण आर्यावर्त्तमे पिछड़ल छथि मुदा मिथिला-मैथिलीमे हिनक स्थानक विवेचन हिनका सबहक जाति जकाँ अछोप अछि। एकर प्रमुख कारण मिथिलामे धर्मसुधार आन्दोलन, विधवा विवाहक सकारात्मक दृष्टकोण प्राय: मृतप्राय रहि गेल। दार्शनिक उदयानाचार्य, भारती-मंडन, आयाचीक ऐ भूमिपर सनातन संस्कृतिक पुनरूद्वार तँ भेल मुदा ऐ पुनरूद्वारपर आडंवर धर्मी व्यवस्थाक अमरतत्ती मूल संस्कृतिक बिम्बकेँ सुखा देलक। समाजक साम्यवादी सोच भगजोगिनी बनि सवर्ण-दलितक मध्य भिन्न सामाजिक दशाक मध्य मात्र टिमटिमाइत रहल। ऐ कारण सम्यक दृष्टिकोण रहितहुँ मैथिली भाषाक स्थापित रचनाकारक लेखनी व्यथित आ शोषित दलितक मर्मस्पर्शी जीवन गाथाकेँ प्रकाशित नै कऽ सकल। कथा-कविता आ गल्पमे तँ दलितक चित्रण भेटैत अिछ मुदा उपन्यासमे अत्यल्प। अपन व्यथाक विवेचन दलित वर्गक साहित्यकार सेहो नै कऽ सकलाह, किएक तँ हिनक संख्या एखन धरि नगन्य अछि। संभवत: दलित रचनाकारक उपन्यास अपन वयनामे मैथिलीकेँ एखन धरि नै भेटलनि।

सभसँ जनप्रिय उपन्यासकार हरिमोहन झाक साहित्यमे दलित वर्ग अनुपस्थित जकाँ छथि। यात्रीक बलचनमा ओना ऐ वर्ग दिस संकेत करैत अछि ओहिना जेना ललितक पृथ्वीपूत्र, धूमकेतुक मोड़ पर आ रमानंद रेणुक दूध-फूल। यात्रीक पारो आ नवतुरिया विषएक चयनक कारण दलित वर्ग दिस धियान नै दऽ सकल। धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'क 'कादो ओ कोयला' छोट लोकक विरनीक कथा

कहैत अछि तँ हुनकर 'ठुमकि बहू कमला'मे दलित वर्गक संघर्षक कथा ठीठर आ रामकिसुनक माध्यमसँ कहल गेल अछि। मणिपद्मक उपन्यासक राजा सहलेस दलित दुसाधक नायक सहलेसक कथा कहैत अछि तँ 'लोरिक विजय' उपन्यासक नायक तँ यादव छथि मुदा हुनका मित्र वर्गमे बंठा चमार, वारू पासवान, राजल धोबी, ई सभ दलित वर्गक छथि- लोरिकक किछु विरोधी सेहो दलित वर्गक शासक छथि- मोचलि- गजभीमलि, हरवा आदि बंठाक संहार परिस्थितिवश करैत छथि आ तइसँ लोरिक विजयमे दलित कथाक ढेर रास प्रसंग आएल अछि। नैका बनिजारामे सेहो नैकाक पत्नी फुलेश्वरीकेँ किनवाक वर्णन अछि। हुनकर फुटपाथ भिखमंगा सबहक कथा कहैत अछि तँ लिलीरेक पटाक्षेप भूमिहीनक नक्सलवाड़ी आन्दोलनक कथा कहैत अछि।

आधुनिक कालक प्रसिद्ध उपन्यासकार विद्यानाथ झा 'विदित'जी ऐ विषएपर अपन लेखनीकेँ कोशीक भदैया धार जकाँ झमाड़ि कऽ प्रयोग कएलनि। ओना तँ विदित जी एखन धरि आठ-नौ गोट उपन्यासक रचना कएलनि अछि, परंच हिनक तीन गोट उपन्यासमे दलितक दशाक चित्रण मैथिली साहित्यक लेल अपूर्व निधि मानल जा सकैछ। हिनक विप्लवी बेसराक कथामे आदिवासीक कथा धौना, टेकू सुफल, बांसुरी, मोहरीलाल, गौरी, मारसक संग सफलता पूर्वक कहल गेल अछि। 'कौसिलिया' उपन्यासमे तँ फुलिया चमैनक पात्रताक चित्रण अनुपमेय अछि। विदित जीक तेसर उपन्यास 'मानव कल्प'मे मिथिला, अंग आ झारखंडक ऑचरमे बसल लगभग सम्पूर्ण दलित समाजक विवेचन कएल गेल।

ओना तँ श्रीमती शेफालिका वर्मा जी मानव धर्मी रचनाकार छथि। हिनक समग्र साहित्यिक कृतिमे 'जाति' शब्द भूमंडलीकृत अछि। 'नाग फांस' उपन्यासमे जातिवादी व्यवस्थासँ शेफालिका जी बचबाक प्रयास कएलनि, परंच ऐ उपन्यासक एकटा पात्र आकाशक पत्नी तरंगक प्रकृतिसँ बुझना जाइत अछि, जे ओ दलित छथि।

कहबाक लेल तँ सभ साहित्यकार अपनाकेँ साम्यवादी कहैत छथि मुदा साम्यवादी जीवन शैलीक जौं चर्च कएल जाए तँ संभवत: मैथिलीक सर्वकालीन साहित्यमे ध्रुवताराक स्थान श्री जगदीश प्रसाद मंडल जीकेँ भेटबाक चाही। हिनक सभ उपन्यास (मौलाइल गाछक फूल, जिनगीक जीत, जीवन-मरण, जीवन-संघर्ष, उत्थान-पतन)मे दलितक चित्रण अनायास भेटि जाइत अछि। लिखबाक शैली ओ

बिम्बक चयन ततेक पारदर्शी जे सवर्ण- दलितक मध्य कोनो खाधि नै। सम्पूर्ण समाजमे सकारात्मक तारतम्य स्थापित करबाक जगदीश जीक स्वप्न मात्र उपन्यासमे नै रहत, ऐसँ मिथिलाक समाजिक परिस्थितिमे भविष्यमे 'सर्वे भवन्तु सुखिन:....। सिद्धान्तक स्थापना अवश्य हएत। हिनक अविरल मर्मस्पर्शी आ प्रयोगधर्मी कृति 'मौलाइल गाछक फूल'मे दलित समाजक महादलित मुसहर जातिक रोगही, बेंगवा, कबुतरीक मनोदशा आ नित्यकर्मसँ समाजमे शांतिक ज्योति जगएबाक कल्पना अनमोल अछि। दड़िभंगाक प्लेटफार्मपर सँ भंगी डोमक मानवीय भावनाक मारीचिका एकठाॅ भक्क दऽ उगि जाइत अछि। भजुआ, झोलिया आ कुसेसरी सभ सेहो डोम जातिक छथि जिनकर सहायता सम्यक सोचबला ब्राह्मण रमाकान्त जी करैत छथि। ऐ कृतिक सभसँ अजगुत पात्र छथि रमाकान्त जी। हिनक छोट पुत्र कालक डाँगसँ अधमरू वनिता सुजाता जे धोविन छथि तिनकासँ विवाह कऽ लैत छथि। विवाहे टा नै विवाहसँ शिक्षा ग्रहन करबाक लेल प्रेरणा आ अर्थ सेहो सुजाताकेँ भेटलनि जइसँ ओ डॉ. सुजाता बनि गेली। गाममे रहनिहार आ अपन मातृभूमिक प्रति असीम श्रद्धा रखनिहार रमाकान्त बाबूकेँ अपन पुत्र महेन्द्रक ऐ निर्णएसँ कोनो पीड़ा नै भेलनि। हिनक सम्पूर्ण परिवार ऐ निर्णएकेँ सहृदए स्वीकार कऽ लेलकनि।

जगदीश बाबूक दोसर उपन्यास 'जीवन-मरण'मे हेलन-गुदरी डोम दम्पतिक चर्च कएल गेल अछि। जीबछ, छीतन, रंगलाल चमार जातिसँ सम्बन्ध रखैत छथि। जिनगीक जीत उपन्यासमे पलहनिक नेपथ्यक पात्रता दर्शित अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक 'सहस्त्रबाढ़नि'मे दम्माक जड़ी एकटा आदिवासी द्वारा आनव आ किछु वर्ख बाद ओ जड़ी जंगलमे नै भेटब वोन कम होएवा दिस संकेत करैत अछि तँ हुनकर 'सहस्त्रशीर्षा' मिथिलाक लगभग सभ दलित जातिक विष्तृत विवेचना करैत अछि। तीनटा घरक रहलोपर धोविया टोली एकटा टोल बनि गेल अछि। झंझारपुर धरि मारवाड़ीक कपड़ा एतए साफ कएल जाइत अछि। महिसवार ब्रह्मण सभ जे बरियातीमे बेलवटम झाड़ि कऽ सीटि-सीटि कऽ निकलैत छथि से कोनो अपन कपड़ा पहिरि कऽ। बैह मंगनिया कपड़ा, महगौआ मारवाड़ी सभक। मारवाड़ी सभक ई कपड़ा रजक भाय दू दिन लेल भाड़ापर हिनका सभकेँ दैत छथिन्ह। कोरैल बुधन आ डोमी साफी, धोवि। डोमी साफी आब

डोमी दास छथि, कारण कबीरपंथी जोतै छथि। फेर एकटा आर टोल, चमरटोली अछि। चमार- मुखदेब राम आ कपिलदेव राम। पहिने गामसँ बाहर रहए, बसबिट्टीक बाद। मुदा आब तँ सभ बॉस काटि कऽ उपटाए देने अछि आ लोकक वसोबास बढ़ैत-बढ़ैत ऐ चमरटोली धरि आबि गेल अछि। घरहट आ ईंटा-पजेबा सभ अगल-बगलमे खसिते रहैत अछि। ढोलहो देबासँ लऽ कऽ सिंगा बजेबा धरिमे हिनकर सबहक सहयोग अपेक्षित। गाए-माल मरलाक बाद जा धरि ई सभ उठा कऽ नै लऽ जाइत छथि लोकक घरमे छुतका लागले रहैत अछि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान, दुसाध। गेना हजारीक निचुलका खाड़ीक संबंधी। वएह गेना हजारी जे कुशेश्वर स्थानमे एकटा कुशपर गाए द्वारा आबि कऽ दूध दैत देखने रहथि तँ ओइ स्थानकँ कोड़ए लगलाह, महादेव नीचाँ होइत गेलाह, सीतापुत्र कुश द्वारा स्थापित ई महादेव गेना हजारीक ताकल।

मुकेश पासवानक बेटी मालती बैंक अधिकारी छथिन्ह आ जमाए मथुरानंद डी.पी.एस. स्कूलक प्रचार्य छथि, वसंत-कुंज लग फार्म हाउसमे रहै जाइ छथि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान गामेमे रहै जाइ छथि। १९६७ई.क अकालमे जखन सभटा पोखरि, गड़खै सुखा गेल मुदा डकही पोखरि नै सुखाएल प्रधानमंत्री आएल रहथि तँ हुनका देखेने रहन्हि सभ जे कोना एतए सँ बिसाँढ़ कोड़ि कऽ मुसहर सभ खाइत छथि। चर्मकार मुखदेव रामक बेटा उमेश सेहो ओइ मुक्ताकाश सैलूनक बगलमे अपन असला-खसला खसा लेने अछि, रहैए मुदा किशनगढ़मे। चप्पल, जुताक मरो-म्मतिक अलावे तालाक डुप्लीकेट चाभी बनेबाक हुनर सेहो सीख लेने अछि। कुंजी अछि तँ ओकर डुप्लीकेट पंद्रह टाकामे। कुंजी हेरा गेल अछि तँ तकर डुप्लीकेट सए टाकामे। आ जे घर लऽ जएवन्हि तँ तकर फीस दू सए टाका अतिरिक्त। मुसहर बिचकुन सदायक बेटा रघुवीर ड्राइवरी सीख लेने अछि। वसंत कुंजक एकटा व्यवसायीक ओइठाम ड्राइवरी करैए आ रहैत अछि किसनगढ़मे। डोमटोलीक बौधा मल्लिक बेटा श्रीमंत सेक्टरक मेन्टेन्सक ठेका लेने छथि। हुनका लग दू सए गोटे छन्हि जे सभ क्वार्टरक कूड़ा सभ दिन भोरमे उठेवाक संग रोड आ पार्किंगक भोरे-भोर सफाइ करै छथि। ऐमे सँ किछु गोटे विशेष कऽ नेपालक भोरे-भोर लोकक शीसा महिनवारी दू सए टाकामे पोछै छथि आ अखबारक हॉकर बनल छथि। रहै छथि किशनगढ़मे मुदा अपन मकानमे- मुसहर बिचकुन सदाय।

दलित संस्कृतिक प्रति उदासीनताक मुख्य कारण अछि समाजमे पसरल छूति व्यवस्था। ओना तँ ऐ प्रकारक अवस्था प्राय: सम्पूर्ण आर्यावर्त्तमे रहल अछि, परंच आन ठामक जनभाषासँ दोसर धर्मक लोकक हृदेगत स्पर्शक कारण दलित संस्कारक चित्रण आन भाषामे मैथिलीसँ बेसी भेटैत अछि। मिथिलामे तँ इस्लाम धर्मी छथि, परंच मातृभाषा मैथिली रहलाक वादो हुनका सबहक मध्य साहित्यक सृजनशीलता उदासीन रहल। एकरा मैथिलीक दुर्भाग्य मानल जा सकैत अछि जे एखन धरि ऐ भाषामे दलित वर्गसँ उपजल साहित्यकार उपन्यास नै लिख सकलनि। प्राय: यएह स्थिति इस्लाम धर्मी साहित्यकारक संग सेहो अछि। फजलुर रहमान हासमी, मंजर सुलेमान सन साहित्यकार तँ मैथिलीकेँ आत्मसात कएलनि परंच उपन्यासकार नै बनि सकलाहेँ। ई लिखबाक तात्पर्य जे इस्लाममे जातिवादी व्यवस्था सनातन सांस्कृतिक अपेक्षाकृत न्यून अछि।

दलित वर्गक संख्या मिथिलामे लगभग आठ आना अछि, संपूर्ण समाजक मातृभाषा मैथिली मुदा शिक्षा-चेतनाक अभावक कारण ऐ वर्गमे मैथिली साहित्यक प्रति सृजनात्मक दृष्टिकोण नै पनपि सकल। आगॉक जातिमे सम्यक् विचारक अभाव रहल अछि, किछु साहित्यकार ऐ परिधिसँ तँ बाहर छथि परंच वर्गक बीचक खाधि लक्ष्मण रेखा बनि हुनको सभमे जनभाषा वाचकक प्रति सिनेह नै आबए देलक। संभवत: मैथिली आर्यभाषा समूहक पहिल जनभाषा थिक जकरापर जातिवादी कलंक लागल अछि। संस्कृतक संग यएह विडंवना रहल परंच ओ कहिओ जनभाषा नै रहल। जखन कि मैथिली वर्तमान कालमे सवर्णसँ बेसी दलित-पछातिक मातृभाषा अछि। पलायन तँ सभ जाति समूहमे भऽ रहल अछि परंच मजदूरी केनिहार दलित प्रवासमे सेहो मैथिलीकेँ आत्मसात कएने छथि। एकर विपरीत मिथिलामे रहनिहार सवर्ण परिवारक आधुनिक पिरहीक नेना वर्गमे मातृभाषाक स्थान हिन्दी लऽ रहल अछि। 'ज्योतिक-कोखि अन्हार' जकाँ मातृभाषाक वास्तविक संरक्षकक विवेचन ऐ साहित्यक उन्नयनक नै कऽ रहल छथि। उतर विहारक बेस रास स्थानमे पसरल मैथिली तँ कखनो-कखनो मात्र मधुबनी दड़िभंगाक मातृभाषा प्रमाणित कएल जाइत अछि।

रचनाकारक दृष्टिकोण रचनामे किछु आर आ वास्तविक जीवनमे किछु आर रहल। साम्यवादी व्यवस्थापर सियाहीक प्रयोग केनिहार उपन्यासकारमे वास्तविकता जौं रूढ़िवादी रहत तँ सम्यक समाजक कल्पनो करब असंभव।

व्यथा वएह बूझि सकैत अछि जकरामे जीवन्त अविरल हृदए हो वा स्वयं व्यथित हुअए।

निष्कर्षत: आशक संग-संग विश्वास अछि जे वर्तमान युगक साहित्यकार समाजक कात लागल वर्गक प्रति सिनेही बनि मैथिली साहित्यकेँ गरिमामयी बनाबथु। पूर्वाग्रहकेँ अनुगृहीत करबाक पश्चात एहेन कल्पना-वास्तविक भऽ सकैत अछि। जौं अपमानित अछोपकेँ सम्मानित कएल जाए तँ मिथिला पुनि ओइ मिथिलामे परिणत भऽ सकैत अछि जतए राजा जनक परिवार, समाज आ राज्यहितमे धर्मक पालनक हेतु राजासँ हरबाह बनि गेलनि।

२. 'समकालीन मैथिली कविता'क

समीक्षा

साहित्य अकादमी द्वारा सन् १९६१ई.सँ लऽ कऽ १९८० धरि प्रकाशित मैथिली कविताक बीछल संकलनक प्रकाशन सन् १९८८ई.मे भेल अछि, एकर शीर्षक देल गेल 'समकालीन मैथिली कविता'। सन् १९०९मे मिथिलाक माटिपर जन्म लेल साहित्यकार स्व. तंत्रनाथ झासँ लऽ कऽ आधुनिक पिरहीक कवि श्री सुकान्त सोम सहित २१ गोट कविक ६८ गोट कविताक संग्रहक संपादक द्व छथि- श्री भीमनाथ झा आ श्री मोहन भारद्वाज। 'त्रिधारा' आ 'वीणा' सन चर्चित कविता संग्रहक रचयिता भीमनाथ जी मूलत: कवि छथि आ श्री मोहन जी मैथिलीक चर्चित समीक्षक मानल जाइत छथि।

ऐ संग्रहमे जागृत विषयक रचनाक संग, विचार मूलक, श्रैंगारिक विरह, बाल साहित्य आ देशकालक दशापर आधारित रचनाकेँ प्राथमिकता देल गेल। प्रस्तावनामे उल्लेख कएल गेल जे पहिने मात्र पंद्रह गोट कविक रचना संकलन करबाक छल मुदा विछवामे कठिनता कारणेँ एकरा २१ धरि कऽ देल गेल। आब प्रश्न उठैत अछि जे कविक संख्या २१ आ कविताक गणना ६८। बीस बर्खक जे परिधि बनाओल गेल ओइमे बहुत रास एहेन रचनाकार छूटल छथि जनिक रचना सभ ऐ पोथीमे छपल किछु रचनासँ बेसी बिम्बित मानल जा सकैछ। जौं 'समकालीन मैथिली कवि' शीर्षक रहितए तँ प्रासंगिक मानल जा सकैत छल, परंच कविता-समकालीन लिखल गेल आ किछु चर्चित कविताकेँ कात कऽ देल गेल ई सर्वथा भ्रामक। संपादक मंडल कविक गणना बढ़ा सकैत छलाह, किएक तँ किछु कविक चारि-चारि रचना छपल अछि मायाबाबूक तँ पाँच गोट कविता देल गेल। मायाबाबूक रचनासँ कोनो गतिरोध नै मुदा जौं किछु चर्चित कविता छुटि गेल छल तँ मायाबाबूक संग-संग अन्य रचनाकारक छपल कविताक गणना कम कएल जा सकैत छल। मैथिली भाषाक दुर्भाग्य मानल जाए कि ऐ संग्रहमे समाजक मुख्य धारसँ कात लागल रचनाकारक संग-संग कवयित्री सबहक एकोटा

रचना नै देल गेल। मैथिलीक चर्चित कवयित्री डॉ शेफालिका वर्मा जीक कविता संग्रह विप्रलब्धा १९७४ई.मे प्रकाशित भेल। हुनक पहिल कविता 'पावस प्रतीक्षा' १९६५ई.मे मिथिला मिहिरमे छपल छल। श्रीमति सुभद्रा सिंह 'पाध्या' १९७० दशकमे मैथिलीक चर्चित कवयित्री छलीह। श्रीमति श्यामा देवी, श्रीमती इलारानी सिंह सन मॉजल कवयित्रीकें विसरब आश्चर्य जनक अछि। 'समए रूपी दर्पणमे' कविताक कवि गोपेशजी, 'हे भाई' कविताक कवि फजलुर रहमान हाशमी जी, 'कोइली' शीर्षक कविताक कवि श्री चन्द्रभानु सिंह जी, बालुक करेजपर गीतक रचनाकार श्री विलट पासवान विहंगम, जागरण गान/ माला/ तोहर ठोर/ परिचए पात आ उदासी सन मिथिला मिहिरमे प्रकाशित गीतक रचनाकार कवि स्व. काली कान्त झा बूच सन रचनाकारक कविता सबहक प्रासंगिकतापर प्रश्नचिन्ह लगाएब उचित नै। श्री भीमनाथ बाबू आ भारद्वाज जी सन पारखी लोक ऐ रचनाकें कोना विसरि गेलनि! भऽ सकैत अछि कोनो अपरिहार्य परिस्थिति भेल होनि।

ऐ लेल संपादक मंडलक पूर्वाग्रह नै मानल जा सकैत अछि, किएक तँ भीमनाथ बाबू प्रायश्चित स्वरूप अपन लिखल कविता सेहो ऐ संकलनमे नै देलनि, जखन कि ओ मैथिलीक प्रांजल कवि छथि।

कविताक श्री गणेश तंत्रनाथ जी लिखित कविता 'प्रयाणालाप' शीर्षक कवितासँ कएल गेल अछि। स्मृति रेखांकनक विषए-वस्तुमे एकातक वेदना हृदए स्पर्शी अछि। जीवन संग्रामक रणभूमिमे कवि एकसरि ठाढ़ छथि, सभ किछु अछि मुदा आत्माक सगरो स्थान रिक्त, ककरो स्मृतिक शेष-अशेष व्यथामे तीज-भिजि गेल छन्हि। श्रैंगारिक वेलाक अवसान भेलापर विरह मर्मस्पर्शी होइत अछि मुदा ई तँ जीवनक गति थिक। निष्कर्षत: ई कविता तृण-तृणकें छुबैत अछि।

सुमन जी मैथिलीक तत्सम् मिश्रित काव्यधाराक उन्नायक कवि छथि। प्रकृति पूजनक विषए-वस्तुक परिपेक्ष्यमे वसुन्धराक महिमाक गुणगान 'पूजन-उपादान' शीर्षक कवितामे कएल गेल अछि। संसारक अस्तित्व धरतीक बिनु अकल्पनीय अछि। अपन हृदेकें रवि तापसँ जाड़ि भाफ उत्पन्न कऽ मॉ धरित्री संसारकें जल बून प्रदान करैत छथि।

'परमारथकेँ कारणे साधुन बना शरीर' जकाँ पृथ्वी मात्र दोसरक लेल अपन अस्तित्वकेँ जीवन्त कएने छथि। 'भीक्षा-पात्र शीर्षक कवितामे सुमन जी नीति मूलक विचारसँ समाजकेँ डबडब करबाक प्रयास कऽ रहल छथि। व्यष्टिसँ समष्टिक निर्माण होइत अछि, व्यक्तिसँ समाजक निर्माण होइत अछि। समाजक बिना व्यक्तिक अस्तित्व क्षीण ठीक ओहिना व्यक्तिक बिनु समाजक कल्पनो टा नै कएल जा सकैत अछि। दिवस-रात्रि, नव-पुरातन, सनातन-नूतनता, सुख-दुख ई सभटा जीवन मूलक अवस्था थिक, एक बिनु दोसर अस्तित्व विहीन। हिन्दी साहित्यमे अविस्मरणीय कविता स्व. आरसी बाबूक लिखल 'जीवन का झरना' शीर्षक कवितासँ ऐ भिक्षा-पात्रक विषए-वस्तु मिलैत-जुलैत अछि, परंच विश्लेषण विलग अछि।

'जा रहल छी' कविता सुमन जीक कविताक पुष्पवाटिकामे खिलोओल एकटा महत्वपूर्ण कविता अछि। अपन प्राचीन सभ्यता ओ संस्कृतिक महत्वपूर्ण अध्यायसँ वर्त्तमान अवस्थाक तुलना नीक बुझना जाइत अछि। हमर इतिहास विलक्षण अछि। श्री कृष्ण सत्यक रक्षाक लेल पार्थक सारथी बनि गीताक उपदेश देलनि। व्यक्तित्व मान नै बचि सकैत अछि जा धरि राष्ट्रमानक भावना जन-जनमे जागृत नै हएत। वर्तमान समाजमे महाराणा प्रताप सन समर्पित व्यक्तिक अभाव अछि तँए मानसिंह सन मानव अपन कुकर्मक शंखनाद कऽ रहल अछि। बुद्धि कौशलसँ परिपूर्ण हमर भूमि बुद्धिहीन भऽ गेल। समाजमे चोरि बजार व्याप्त अछि। कवि ऐसँ हतोत्साहित नै छथि। समाजमे क्रांतिक शंखनाद कऽ अधर्मी तत्व सभकेँ चेता रहल छथि। ऐ कविताकेँ 'योग धर्मक क्रांति गीत' मानल जा सकैत अछि।

मैथिली साहित्यक काव्य रूपी नौकाक पतवारि जौँ 'यात्री'क हाथमे मानल जाए तँ कोनो अतिशयोक्ति नै हएत। कवि चूड़ामणि मधुपक पश्चात् मैथिली साहित्यमे यात्री सभसँ बेसी जनप्रिय कवि मानल जाइत छथि। एकर सभसँ महत्वपूर्ण कारण अछि हुनक 'विषए-वस्तुक चयन'। १९६८ई.मे हुनक कविता संग्रह 'पत्रहीन नग्न गाछक' लेल हुनक साहित्य अकादमी पुरस्कार देल गेल। ओना 'चित्रा हुनक सभसँ प्रसिद्ध कविता संग्रह मानल जा सकैछ जकर प्रकाशन

बहुत पहिने भेल छल। प्रस्तुत संकलनमे यात्री जीक पाँच गोट कविता देल गेल अछि। 'पिता-पुत्र संवाद' कविता पत्रहीन नग्न गाछसँ लेल गेल अछि। कविताक भूमिका गणपति आ श्री शिवक संवादक रूपेँ लेल गेल मुदा परिपेक्ष्य अति गूढ़ संगहि प्रासंगिक। शंकर गजाननसँ कुण्ठा, त्रास आ मृत्युवोधक लीलाक विषएमे पूछैत छथि तँ लम्बोदरक उत्तर छन्हि जे स्वयं ऐ परिधिसँ दूर रमणीय स्थानपर बैसल हो ओ कोना बूझि सकैत अछि? व्यथा वएह बूझत जे स्वयं व्यथित भेल हुअए वा वर्त्तमानमे अिछ। माए चुप करएबाक प्रयास करैत छथि। यात्री जी साम्यवादी विचारधाराकेँ आत्मामे समाहित कएने छथि। तँए अधमक व्यथाकेँ कतहु ने कतौ नीतिसँ जोड़ि दैत छथि। मैथिली भाषाक संग ई विडंबना रहल अछि जे शब्द विन्यास महिमा मंडित होइत अछि विषए-वस्तु दिस पाठक वा समीक्षक विशेष धियान नै दैत छथि।

यात्री जी कविता सबहक शब्द-शब्दमे संत्रास अनायास भेट जाइत अछि। 'भोरे-भोर' कवितामे प्रकृतिक मनोरम रूपक बहाने यात्रीजी शस्य-श्यामला भूमिक महिमाक गुणगान करैत छथि। 'भोरे भोर आएल छी धाङि पथारक मोती'क तात्पर्य अछि जे हमर भूमि हरियर अन्नसँ भरल अछि। माघ मास घास, पात, अन्न, साग, तरकारीसँ खेत पथार सजल रहैत अछि।

कविक दृष्टि आदित्यक रश्मिसँ तीक्ष्ण होइत अछि। एकर प्रमाण यात्री जीकेँ 'कंकाले-कंकाल' शीर्षक कवितामे भेटैत अछि।

कंकालक आरिमे कवि की कहऽ चाहैत छथि एकर विश्लेषण करब साधारण नै। विषए-वस्तुसँ यएह बुझना जाइत अछि जे समाजमे लोक अपन स्वार्थकेँ विद्ध करबाक लेल दोसरक नाश तक कऽ दैत छथि। बाल, वृद्ध, रोगी, निरोग ककरोसँ कोनो श्रद्धा वा दया नै। अपन देश कृषि प्रधान अछि तँए पावस-प्रतीक्षा सभकेँ रहैत अछि। 'साओन' शीर्षक कवितामे कवि पावस ऋृतुक आगमन मास साओनक वरखाक संग-संग सहलेस पूजा आ नागपंचमीक वर्णन करैत छथि। ई मास प्रणयक विहंगम मास सेहो मानल जाइत अछि। यात्री जी सन वैरागी सेहो ऐ मासक माधुर्यसँ नै बचि सकलाह। राधाक उतापक वहाने स्वयं नन्द किशोर बनि गेलनि। 'सरिता-सर निर्मल जल सोहा' __बरखाक पश्चात् शरदक अवाहन

कवि यात्री ''आब भेल वर्षा'' शीर्षक कविताक माध्यमसँ करैत छथि। विषए-वस्तु सामान्य मुदा विश्लेषण अंशत: नीक बुझना जाइत अछि। विचारमूलक कविताक रचनामे आरसी बाबूक एकटा अलग स्थान अछि। माटिक दीप, पूजाक फूल, सूर्यमुखी सभटा पोथीमे जीवनक गति वा नियतिक प्रासंगिकता प्रवाहमयी अछि। ऐ संकलनमे 'जीवन' कविताक बिम्ब हुनक हिन्दी साहित्यमे लिखल कविता 'जीवन का झरना' सँ मिलैत अछि। जन्म-मृत्यु जीवनक सरिताक ई किनार थिक मुदा एकर शक्ति अपराजेय मानल जा सकैछ। फूलमे कॉट, अन्नमे भुस्सी जीवन सुखक मध्य अवांछित तत्वक वोध कराबैत अछि। दूधकैँ महि कऽ घृत बनाओल जाइछ, ठीक ओहिना जीवनमे समग्र तत्वकैँ महि लेबाक चाही। ऐसँ जन्म-मृत्युक मध्य वेदनाक अनुभव नै भऽ सकत।

ओ मानव, मानव नै जकरा मातृभूमिक प्रति श्रद्धा नै हो। राष्ट्रभक्ति शीर्षक बिम्बमे मैथिली साहित्यमे बहुत गीत लिखल गेल अछि मुदा आरसी बाबू रचित 'राष्ट्रगीत'मे मातृभूमिक प्रति श्रद्धाक संग-संग वर्तमान परिस्थितिक अधम दशापर सेहो प्रहार कएल गेल अछि। जखन कंठसँ ध्वनि नै फूटि सकैत अछि तखन शंखक कोन प्रयोजन? पुरानक लेल भ्रमर अनजान बनि गेल, मनमे संताप आ वाहर गीतक गान भऽ रहल अछि ई व्याथाक उद्बोधन कऽ रहल अछि। समाजक विलगति मानसिकतासँ कवि क्षुब्ध छथि।

व्यास जीक कविता स्तरीय होइत अछि मुदा ऐ संकलनमे देल गेल कविताक 'मेहक बड़द जेकाँ'क बिम्बमे वैराग्य भावक बोध होइत अछि। वास्तमे मेहक बड़द अपन कर्मगतिसँ मानव जीवनकैँ तृष्णासँ मुक्ति दैत अछि, परंच अपन कविताक माध्यमसँ व्यासजी कर्मक परिणाम व्याथित रूपैँ प्रकट कएलनि। भऽ सकैछ जीवनक कोनो क्लेशक विवेचन कएने होथि मुदा ऐ प्रकारक कवितासँ समाजकैँ की भेटत, ई अवलोकन करबाक योग्य अछि। व्यासजीक दोसर कविता 'मृदु मयंक हंस शिशु'मे छायावादक प्रयोग नीक रूपैँ कएल गेल अछि। किसुन जीक दुनू कविता 'पत्रोतर' आ विश्लेषण मिथिला मिहिरसँ लेल गेल अछि। पत्रोत्तर कवितामे पीड़ा भरल मोनमे पत्र प्राप्तिक पश्चात पसरल उद्वीपनक विवेचन नीक लगैत अछि। रेलक काट माल डिब्बासँ लऽ कऽ अभिमन्युक

बलिदान धरिक तुलनामे छोहक अद्भुत स्पर्शण झकझोरि दैत अछि। अमर जी मैथिली साहित्यक क्रांतिवादी कवि छथि। हास्य हो वा विचारमूलक कविता, सभठाॅ हुनक क्रांतिवादी स्वरसँ कविताक विषए-वस्तु ओत प्रोत रहैत अछि। 'युद्ध-एक समाधान' शीर्षक कवितामे कवि दिनकर जीक 'शक्ति और क्षमा' कविता स्वरूप झलकैत अछि। 'अभियान' कवितामे हिमालयक गुणगानसँ लऽ कऽ योगक बलवंत स्वरूपक विश्लेषणमे कविक विशाल अध्ययनशीलताक झाॅकी देखऽमे अबैछ। राजकमल जी मैथिलीक चर्चित रचनाकार छथि। मैथिली हुअए वा हिन्दी राजकमल जी कथाकारक रूपैँ बेसी चर्चित भेल छथि। मैथिलीमे 'स्वरगंधा' कविता संग्रहक संग-संग विविध पत्र पत्रिकामे ५७ गोट कविता सेहो प्रकाशित भेल अछि। प्रयोगकेँ वादक धरातलपर प्रतिष्ठित करबाक श्रेय मैथिली साहित्यमे हुनके देल जाइत अछि। प्रस्तुत संग्रहमे हुनक चारि गोट कविता देल गेल अछि। 'अर्थतंत्रक चक्रव्यूह'मे कवि की कहए चाहैत छथि ई बूझब क्लिष्ट अछि। कोनो रचनाकारकेँ अनुत्तरित प्रश्न छोड़ि कऽ नै जएबाक चाही। ऐसँ पाठकक मध्य भ्रमक स्थिति उत्पन्न भऽ जाइत अछि। 'वासन्ती परकिया विलास' सर्वथा समीचीन कविता मानल जा सकैत अछि। समकालीन मैथिली कवितामे ऐ कविताक स्थान निश्चित रूपैँ स्वर्णिम अछि। प्रकृतिक संग-संग जीवनक दर्शन आ श्रृंगारपर आधारित कवितामे भावक उद्बोधन नीक जकाँ कएल गेल अछि। 'महावन' कविता सेहो नीक लगैत अछि। सत्य आ नैतिकताक बिम्बक मध्य हेराएल स्वपनपर आधारित कवितामे हृदेगत जुआरि प्रदर्षित कएल गेल।

'पति-पत्नी कथा' शीर्षक कविताकेँ सर्वकालीन कविताक श्रेणीमे राखब उचित नै। एकटा महान कविक साधारण रचना ऐ कविताकेँ मानल जा सकैत अछि।

सोमदेव जी मूल रूपैँ उपन्यासकार छथि मुदा एकटा कविता संग्रह 'कालध्वनि' सेहो प्रकाशित भेल अछि। प्रस्तुत संग्रहमे हुनक लिखल चारू कविता खाली आकाश, स्थायी प्रभातक उद्येश्यैँ, एकटा अदना सिपाही आ मोह शीर्षक कवितासँ प्रमाणित होइत अछि जे ओ युगान्तरकारी कवि छथि। धीरेन्द्र जी उपन्यासकार छथि मुदा किछु स्फुट कविता आ गीतक रचना सेहो कएलनि अछि। 'हैंगरमे टाॅगल कोट' हुनक स्फुट कविता अछि जकर प्रथम प्रकाशन मिथिला मिहिरमे

भेल। ऐ कवितामे चेतनाक दर्शन स्वरूप नीक मानल जा सकैछ। मुदा अन्य तीनू कविता बुल बुल गीत, लक्ष्य हम्मर दूर आ भोरक आशापर कोनो अर्थे समकालीन श्रेष्ठतम कविताक श्रेणीमे नै मानल जा सकैत अछि। बिम्बक रूपकेँ जौं सम्यक मानल जाए तैयो विवेचन सामान्य लगैत अछि।

मैथिली कवितामे नव कवितावादक प्रणेता मायानंद मिश्र जीकेँ मानल जाइत अछि। हुनक कविता संग्रह 'दिशांतर' १९६५ई.मे प्रकाशित भेल अछि। एकर अतिरिक्त विविध पत्र पत्रिकामे हुनक लिखल कविता आ गीत सेहो प्रकाशित होइत रहल अछि। प्रस्तुत संग्रहमे हुनक लिखल चारि गोट कविता देल गेल अछि। एकटा नखशिख: एकटा दृश्य, साम्राज्यवाद, मानवता आ लालटेन ई सभ लघुकविता थिक। विषए-वस्तुक संयोजन नीक मुदा विवेचन अस्पष्ट अछि। बिरड़ो छोट मुदा प्रासंगिक कविता लागल।

जीवकांत जीक कविता संसार बड़ विस्तृत अछि मुदा सभटा अतुकांत। हिनका आशुकवि नै मानल जा सकैछ। ओना तँ ऐ संकलनमे हिनक चारि गोट कविता देल गेल अछि मुदा मात्र 'पापक भोग' कविताकेँ प्रासंगिक आ समकालीन मैथिली कविताक श्रेणीमे मानल जा सकैछ। ई कविता हुनक कविता संग्रह 'नाचू हे पृथ्वी'सँ लेल गेल अछि। 'आकाश पपियाह नै अछि' सँ शून्यवादमे आत्मीयताक दर्शन होइत अछि।

चिन्तनशील कविताक रचनामे कीर्ति नारायण मिश्र जीक नाओं सादर लेल जा सकैछ। 'सीमान्त' कविता संग्रहक द्वारा कीर्ति जी प्रयोगवादकेँ राजकमल जीक पश्चात नव रूप देलनि।

ऐ संकलनमे प्रकाशित हिनक चारू कविताक विषए-वस्तु नीक, विवेचन उपयुक्त आ भाषा सरल अछि। हिनक जन्म शोकहारा बरौनीमे भेलनि। वर्तमान बिहारमे औधोगिकीकरणक सभसँ बेसी प्रभाव ऐठाम भेल। अपन प्राचीन रूपक गामक स्थितिक तुलना वर्तमान विकासशील गामसँ करैत 'कतेक वर्षक बाद' कविताक रचना कएलनि। हंसराज जीक चारि गोट कविता ऐ संकलनमे देल गेल अछि। पहिल कविता 'गंध' हुनक कालजयी कविता थिक, प्रवेशिका स्तरक पूर्व

पाठ्यक्रममे ई सेहो छल। प्रस्तावनामे ऐ कविताकेँ श्रमशील लोकक चामक गंधकेँ ममतासँ जोड़ल गेल मुदा ई प्रश्न उठैत अछि जे श्रमशील लोकक मध्य 'गंध' कतऽ सँ आएत ओ तँ कर्मसँ वातावरण आ समाजमे सुगंध पसारैत छथि। जौं चर्म उद्योगक श्रमजीवीकेँ चामक गंध लागल तँ ओइ चामकेँ मूर्त्त रूप नै देल जा सकैछ, जौं कृषककेँ घामक गंध लागल तँ वसुन्धराक कोखि शस्य श्यामला नै भऽ सकत। 'कलंक लिप्सा' कविता सुमधुर आ प्रवाहमयी लागल। चानकेँ साक्षी मानि कऽ लिखल गेल कविता नारीक मान आ पुरूषक स्वाभिमानक विवेचन तथ्यपरक बुझना गेल। 'नारी' शीर्षक कवितामे नारी जीवनक व्यथाक मार्मिक चित्रण असहज अछि। साधन विहीन नारीक जीवन चूल्हिक संग प्रारंभ आ इति भऽ जाइत अछि। 'हम तँ' नोरेसँ चिक्कस सनैत छी'मे दीनहीन नारीक मनोदशा विवेचन हृदेकेँ झकझोरि दैत अछि। कुलानंद मिश्र जीक कविता 'स्पष्टीकरण'मे अपन मनोदशाकेँ कवि नुका लेलनि। 'जड़कालाक साँझ' कवितामे बिम्बक मूल्यन आ निष्कर्ष प्रासंगिक अछि। मिला-जुला कऽ हुनक तीनू कविताकेँ नीक मानल जा सकैत अछि।

प्रवासी जीकेँ मैथिली साहित्यक निराला मानल जाए तँ कोनो अतिशयोक्ति नै। 'सम्हरि कऽ चलिहेँ' शीर्षक कवितामे जीवनक गतिकेँ नव आयामसँ कवि निर्देशित कऽ रहल छथि। परिवर्तन, वसन्त, अनभुआर तीनू कविता लघुकविताक रूपमे लिखल गेल अछि, परंच बिम्बक परिधिक रूप व्यापक अछि। गंगेश गुंजन, विनोद जी, मंत्रेश्वर झा आ नचिकेता जीक कविता सभमे दृष्टकोणक व्यापक उद्बोधन स्वत: भऽ जाइछ तँए ऐ कवि सबहक कवितापर प्रश्नचिन्ह ठाढ़ करब प्रासंगिक नै।

सुकान्त सोम जीक तीनू कविता स्वत: स्फूर्त नै मानल जा सकैत अछि, कतौ-कतौ लागल जे गद्य रूपमे लिख कऽ पद्यक रूपेँ परिवर्तित कएल गेल।

निष्कर्षत: 'समकालीन मैथिली कविता' नीक कविताक संकलन थिक मुदा समए कालक जै परिधिक निर्धारण कएल गेल अछि ओइमे किछु चर्चित कविता सबहक तिरस्कार कएल गेल। परिस्थिति की छल? ई तँ नै कहल जा सकैत

अछि मुदा मैथिली कविता समूहक संग पूर्ण न्याय नै कएल गेल जकरा कोनो अर्थे उचित नै मानल जाएत।

३.चित्राक सनेस

मिथिलाक भूमि पुरातन कालहिंसँ आर्यावर्तक संस्कृतिक आकर्षण केन्द्र रहल अछि। सभ दर्शनक संग-संग साहित्य सरिताक वैभव-विकासमे मिथिलाक योगदान अविस्मरणीय। ऐ भूमिक जनभाषामे ज्योतिरीश्वरसँ लऽ कऽ अद्यतन काल धरि साहित्यकारक भरमारि लागल अछि। ओइ साहित्यकारक ढेरीमे एकटा एहेन साहित्यकार भेल छथि, जनिक नाम सुनिते हमरा सबहक वास्तविक रूप उपटि कऽ आिव जाइत अछि। ओ छथि- बैधनाथ मिश्र। तरौनी गामक लाल बैधनाथ मिश्र मैथिली साहित्यमे 'यात्री' नामसँ प्रसिद्ध भेलाह। बौद्ध दर्शनसँ प्रभावित रहवाक कारण हिन्दीमे 'नागार्जुन' नामसँ रचना करैत छलाह। प्रांरभिक रचना संस्कृतमे कएलनि मुदा चौगमा गाम वासी आ मैथिलीक चर्चित महाकाव्य अम्बचरितक सृजनहार पं. सीता राम झाक प्रेरणासँ मैथिलीमे सेहो लिखए लगलाह। मैथिली साहित्यक हुनक प्रमुख कृति -पारो- मानल जाइत अछि, परंच एक छोट मुदा प्रासंगिक कविता संग्रह 'चित्रा' हुनका कविक रूपेँ हमरा सबहक भाषाक ध्रुवतारा बना देलक।

चित्राक रचना कोनो योजना बना कऽ नै कएलन्हि। सन् १९३१सँ लए कऽ सन् १९४९ई. धरिक लिखल किछु कविताक संकलन ऐ पोथीमे कएल गेल अछि। एक दिस मातृभूमि प्रेम तँ दोसर दिस मैथिलीक दशापर क्षोभ। जीवनक समग्र मूल्यक तात्विक विवेचन। अनियोजित रचना सबहक संकलन बड़ कष्टदायी होइत अछि मुदा ऐमे भाव प्रवाहक अभाव नै बुझना जाइत अछि। मॉ मिथिले शीर्षक कवितामे अपन ठाम, अपन गाम, अपन बुद्धि आ अपन दर्शनक सरल रूपमे प्रदर्शन कएल गेल। गौतम यज्ञवल्यकसँ लऽ कऽ रमेश्वर महाराजक महिमाक गुनगान। ऐ गुनगानक मूल अछि- अपन संस्कृतिक विश्लेषण। भारती आ मंडन मिश्रक लेल कीर दंपतिक उदवोधनमे अपन पहिचान झलकैत अछि। उदयनाचार्य जग्रन्नाथपुरीमे सनातनक पुनरूद्वारक प्रमाणित भेलाह, ई मिथिलाक

विजय थिक। विद्यापतिक कविता हमर धरोहरि अछि। अयाची मिश्रक सादा जीवन सेहंतित अछि, तँ शंकरक वालोहं जगदानंद.... बाल साहित्यक आ बाल कौशलक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।

एक दिस 'माॅ मिथिले' कवितामे अपन माटिपर स्वाभिमानक दर्शन तँ दोसर दिस 'अंतिम प्रणाम' कवितामे अपन जन्म-आ कर्मपर क्षोभ। अर्न्तद्वन्द्वक एहेना दशा वा वेदना कविमे किएक उत्पन्न भेल? ऐ कविताक माध्यमसँ कवि जागरण करबाक लेल पलाएन करए चाहैत छथि। अपन संस्कारमे निहित विषमतासँ अकच्छ कवि झाँपल व्यथाकेँ नि:शब्द उघारए चाहैत छथि। जेना अवोध अपन माएसँ घरसँ भागि जएवाक धमकी उपरे मोने दैत अछि, ओहिना कविक वेदनामे हृदेगत पलाएन नै अछि। 'कविक स्वप्न' कवितामे कवि समाजक विगलित अर्थहीन व्यक्तिगणक कचोटक मार्मिक चित्रण कएलन्हि अछि मिथिलाक भूमिमे सम्यक अर्थनीतिक अभाव अछि तँए समाजक परिदृश्यमे भारी अन्तर देखए मे अबैछ। ऐ भूमिपर एकसँ बढ़ि कऽ एक महामानव भेलाह, परंच साधन आ शिक्षाक अभावमे कतेक प्रतिभा मोनइसँ बाहर नै निकलि पबैत अछि- 'तानसेन कतेक रविवर्मा कते

घास छीलथि वाग्मतीक कछेड़मे

कालिदास कतेक विद्यापति कते

छथि हेड़ाएल महिम वारक हेड़मे'

जौं पेट-पांजड़ि अन्न जलक त्रासमे आकुल हो तँ शिक्षाक कल्पना निर्मूल प्रमाणित भऽ जाएत, परंच स्वपनोमे आशक दर्शन। कविकेँ समाजमे नव जोश उत्पन्न करबाक प्रेरणा भेटल तँए प्रवासकेँ छोड़ि अपन मिथिला धुरि अएवाक निश्चय कएलन्हि। ऐ कविताक रचना काशीमे कएलनि मुदा मोन तरौनीमे घुरिया रहल छल। निश्चय जन्मभूमिक दशापर वेदनासँ कविक मोन तपि रहल होइतनि।

'बूढ़ वर' कविताक दर्शन कएलापर हास्यपर व्यथाक विजय दर्शित होइत अछि। शीर्षकसँ स्पस्ट होइत अछि जे विवाहमे कनिया-वरक वएसमे अन्तर अवश्य हएत। कविताक मूलमे जएवाक बाद तँ स्पष्ट भऽ गेल जे वरकेँ वरांठ वा खोरनांठ किछु कहल जाए अनसोहांत नै लागत। जीवनक अंतिम अवस्थाक वर काँच-कुमारिक वरण कहलन्हि। विवाहिता नि:संतान रहि गेली। माएक विरोध नि:सफल भऽ गेल। स्त्रीगणक व्यथाकेँ के बूझत? वाप कैंचाक लोभमे बेटीकेँ बेचि लेलन्हि। मिथिलामे ऐ प्रकारक पाप होइत रहल अछि। समाजक तथाकथित आगाँक पाँतिमे बैसल जातिक दीन आ कर्तव्यहीन जनमे ई व्यवस्था पलेगक रूप धारण कएने छल। अंतमे वेटी धरती माएसँ फटवाक लेल आग्रह करैत छथि।

'विलाप' कविताक विषएमे लिखब कठिन अछि जे एकरा बाल-वियाहक कुकृत्य वा विधवाक विलापमे सँ की मानल जाए? बाल कालक वियाह संस्कारमे आनंदक कोन रूप होइत अछि? दुरागमनमे कनिया सिखेलासँ कनैत छथि मुदा नोरक अभिप्राय नै बूझैत छथि। जखन नोरक अर्थ बुझवाक वएस भऽ गेलनि तँ वज्रपात? वैद्यव्य जीवनक मार्मिक छंद......।

श्रृंगारसँ पहिने नीति आ वैराग्य, ऐ जीवनक उदेश्यपर विचार करबाक आवश्यकता अछि। वैद्यव्य जीवन पतिक स्मृतिक संग जीबए चाहैत छथि। विहुंसलि नायिका मुदा समाजक कुदृष्टिक डर। ऐ कवितामे सेहो उच्च जातिक व्यवस्थापर कटाक्ष कएल गेल। विधवा वियाह मिथिला समाजक सवर्ण वर्गमे पूर्णत: वंचित छल, एखनो आंगुरेपर गनल-गुथल होइत अछि। जै वर्गक लोक शांतिसँ दु:खो नै सहए दैवए चाहैत छथि, ओइमे जन्मपर कोना गर्व करू? कविकेँ कतिपय व्यथा छन्हि ऐ व्यवस्थासँ, खिन्न छथि उच्च जातिक अलच्द सदृश सोचसँ। पुरूषसूक्तमे कर्मक आधारपर जकरा चण्डाल आ छुद्र सन संज्ञा देल गेल, हुनक सोच एखन पारदर्शी अछि। ओइ वर्गक कांताकेँ ई अधिकार छन्हि जे कुकर्मी स्वामीसँ कखनो जान छोड़ा कऽ आन मनुक्खक वरण कऽ सकैत छथि मुदा आगाँक पाँतिमे बैसल प्रवुद्ध वर्गक विधवा अवला बनि उज्जर साड़ीमे दुवकलि छथि मुदा तैयो वागमती कातक बगुला हुनक चरित्र हनन

करबाक लेल सदिखन उद्धत छथि। ऐ दशाकेँ देख कोनो कविक ई उक्ति प्रासंगिक अछि-

आगि भेल शीतल, पानि अदहन भऽ उधिएलै

काँट बनल कोमल आ फूले गड़ि-गड़ि गेलै

ककरासँ करतै तकरार हम जिनगी

धिक-धिक जुआनी धिक्कार हमर जिनगी।

कौशिकीक धार कवितामे कोशी माएक पसारल विनाश लीलासँ भेटल परिणामक पीड़ा मड़ोरि दैत अछि। मुदा ई थिक मिथिलाक शोक। 'प्रेयसी' कविता श्रृंगारसँ भरल अछि। प्रेमी द्वारा प्रेमिकाक प्रति समर्पित संवाेधन नीक लागल। ऐ सिनेहमे प्रेमी प्रेमिकाकेँ अपन शक्ति मानैत छथि। सिनेहक मूल रूपक वर्णन, कतौ रूपक चर्च नै। प्रेमी अपन प्रेमीकाकेँ तपवति छथि मुदा ओ अपन निर्णएसँ नै विलग भेली। ऐ समर्पणसँ प्रेमी सिनेहक जुआरि पानि फुटि गेल-

अपन इच्छापर तोहर आशाक कैलियहु होम

तोँ बनलि रहलि सदए सखि मोम

'फेकनी' कविताक नायिका फेकनी कंजूस महिला छथि। कैंचा बचा-बचा कऽ अपन संततिक लेल राखब छन्हि हुनक इच्छा। दूध बेचि कऽ टका जमा करैत छथि, ओहो दूधमे पानि मिला कऽ तँए पानि जकाँ दिवस वितैत छन्हि। कोनो धर्म-कर्म नै, कवि ऐसँ छुब्ध छथि। ऐ प्रकारक घटना हमरा सबहक गाम-घर होइत अछि। पेट काटि कऽ जकरा लेल संयोजन करैत छथि, ओ ओइ धनकेँ की करताह? सहज अछि-

पूत कपूत तँ किएक धन जोहब

पूत सपूत तँ किए धन जोहब।

'लखिमा' कविता मिथिला नरेश राजा शिव सिंहक अर्द्धांगिनी लखिमा रानीक प्रति समर्पित अछि। महाकवि विद्यापतिक श्रृंगार रसक सिद्धिमे लखिमा जीक व्यक्तित्व आ सुन्दरताक पैघ भूमिका छल। ओना विद्यापतिक चरित्रपर संदेह करब कविक ना दृष्टिकोण नै अछि मुदा हुनक श्रृंगारक नायिका लखिमा रानी छलीह। महाकविक रचनासँ स्पष्ट होइत अछि जे लखिमाक सौन्दर्य ततेक विलक्षण छल जे हुनक रचनाकेँ अमरत्व प्रदान कऽ देलक। विद्यापतिक नयनमे लखिमा अवश्य छलीह, परंच ओ कर्तव्यवंधसँ बान्हल छलाह। हुनक मनमे विरति छलन्हि।

'उड़ान' शीर्षक कविता कल्पनापर आधारित अछि। सहज अछि जे कल्पनाशील व्यक्तिकेँ कर्मसँ बेसी ऐपर विश्वास होइत छैक। वास्तविक जीवनमे कर्मक जतेक महत्व हो मुदा कल्पनाक उड़ान विलगित मानवकेँ आनंदक शिखरपर पहुँचा दैत अछि। कल्पना कहियो धोखा नै दैत अछि, ऐमे ककरोसँ आश नै होइत अछि। स्वप्नक भारकेँ केओ नै डिगा सकैत छैक।

'गामक चट्ठी' कविता प्रवासमे रहनिहार एकटा गरीवक नाओं लिखल हुनक कनिया व्यथाक किछु पाँती थिक।

गाममे अपन नेनाक संग रहैत दीनक दाराकेँ की-की सहए पड़ैत अछि, एकर मार्मिक वर्णन कएल गेल अछि। जौं हाथमे किछु कैंचा नै हुअए तैयो गाम अएवाक निवेदन व्यथित कनियाँक हृदेगत कचोट बुझना गेल। चारू कातसँ समस्यासँ घेरल नारी अपन पतिसँ खाली हाथ गाम धुरि अएवाक लेल कहैत छथि। जीवन डोरिकेँ पकड़ि कऽ राखब कठिन भऽ गेलनि। सम्यक अर्थनीतिक उद्घोषण यात्री जीक ऐ कवितामे देखएमे आएल। अपन सनेशकेँ कखनो उधारि, कखनो झाँपि यात्री जी असमान समाजक अस्तित्वकेँ ललकारि रहल छथि। दीनक नेना पितृक दर्शनक लेल आकुल छथि, ओ तँ नेना छथि मुदा माए किए बजाबए चाहैत छथि अपन स्वामीकेँ। कविक ऐ भावकेँ स्पष्ट करब आजुक लोकसँ संभव नै बुझना जाइत अछि।

ठीठर मामा कविता गाममे सभ दिन रहएबला ठीठर पाठकक पटना प्रवासक स्थितिपर लिखल गेल अछि। भगजोगिनीक दर्शन करएबला लोककेँ हजार वोल्टक इजोतमे उजगुजाहटक अनुभव होइत अइ। ऐ कविताक प्रसंग साधारण अछि आ भाषामे प्रवाहक अभाव बुझना गेल।

'परमिटक साड़ी' चारि अना वेहरी दऽ कऽ तीन टकामे परमिटसँ कनिया काकीक लेल आनल साड़ीपर आधारित अछि। गाम-घरमे बेहरी दऽ कऽ समान खरीदवाक परम्परा प्राचीन अछि। ऐ कथाकेँ यात्री जी कोन उद्धेश्यसँ लिखलन्हि नै स्पष्ट भेल। देश कालक दशापर सामान्य प्रस्तुति। कृतिका नक्षत्रमे, हिमगिरिक उत्संगमे, भए गेल प्रभात आ ताड़क गाछ शीर्षक कविता सभ प्रकृति वर्णनक छोट छाया प्रस्तुति करैत अछि। ई चारूटा कवितामे कविक उदेश्य हुनक शब्दसँ नै प्रकट भऽ सकल। छंद समायोजन नीक लागल मुदा दोसर, कविता सभसँ तारतम्य नै बुझना जाइत अछि। 'द्वन्द्व' कविताक शब्द-शब्दमे परिताप दर्शित भेल। किंकर्तव्य विमूढ़ छथि कवि, गाममे रहथि की प्रवासमे? गाममे विपन्नता मुदा सिनेहक आवरण अछि। मोरंग वा आन ठामक प्रवासमे कैंचा-कौड़ी तँ अछि मुदा परिवार समाजक सिनेह नै। पावनि तिहारक जे आनंद गाममे भेटैत अछि, ओ शहरमे संभव नै। एक ठाँ गामक जीवनसँ कविक मोन गुजगुजा गेलनि। गामक छोट लोक (साधन विहिन) पलाएन कऽ रहल अछि, तँए सामाजिक व्यवस्थामे अन्तर अिव गेल। यात्री जीक अर्न्तमन समाजक बदलैत स्वरूपसँ संतुष्ट अछि, किएक तँ हुनक साम्यवादमे समाजवादक ज्योति प्रखर भेल अछि।

'ॠतु संधि' शीर्षक प्रकृति वर्णनसँ जोड़ल अछि मुदा ऐमे अर्थनीतिक मर्म झाँपल अछि। ग्रीष्मक तात्पर्य दीन मुदा उद्वेलित दीन, वर्षाक अर्थ नव जीवनक विश्वास। दीनमे साधनक अभाव परंच हुनक श्रद्धा उद्वेलित अछि। ऐ कवितामे महाकवि पंतक छाया वादक झलकि देखएमे अबैत अछि।

जौं यात्री जीक पद्य सागरक सुवासित सरिता चित्राकेँ मानल जाए तँ ऐमे सभसँ पैघ योगदान 'वंदना' कविताक देल जाएत। 'वंदना' कविताक शीर्षक मात्र माध्यम थिक हुनक जन जनक व्यथाकेँ नग्न करबाक लेल। मिथिलाक समग्र

जीवन दर्शनकेँ ऐ कविताामे कवि मंचस्थ कऽ देलनि। नेपथ्यमे किछु नै रहि गेल। अनुलोम-विलोम, आशक्त-घृणा सभटा उपटि कऽ बाहर कऽ देलनि। मिथिला वर्णनपर बहुत रास कविताक रचना भेल अछि। परंच बेसी किछु विशेष वर्गकेँ महिमामंडित कएलक। उपेक्षितकेँ सम्मान देबाक हिनक शैली आबैबला वास्तविक मैथिल संस्कृतिक रक्षकक लेल कोसक पाथर प्रमाणित हएत। मिथिलाक माटि-पानिमे रहनिहार, संस्कृतिकेँ आत्पसात केनिहार सभटा मैथिल छथि। मैथिलीमे एतेक सम्यक सोच रखएबला कतेक लोक छथि? मैथिली भाषीक चर्च होइते मैथिल ब्रह्मण आ मैथिल कर्ण कायस्थक नाओँ उमरि जाइत अछि मुदा अन्य वर्ग की मैथिल नै? जौं दोसर भाषाक लोक उपर्युक्त दुनू जातिक लेल ऐ भाषाक वाचकक प्रयोग करैत छथि, तँ दुनू किएक नै विरोध करैत छथि? ओना ऐ वर्गक किछु लोक विस्तृत सोचक छथि मुदा ओ सेहो ऐ प्रश्नपर चुप भऽ जाइत छथिन्ह? यात्री जीक आत्मा निश्चित रूपसँ ऐ कविता रचना करए काल काँपि गेल हेतनि। ऐ सनेशकेँ जौं सभ गोटे आत्मसात कऽ ली तँ मैथिलीक परिदृश्य अवश्य बदलि जाएत। आर्य, द्रविड़, आंग्ल, इस्लाम आ पारसी सभ परिवारक सभटा भाषामे मात्र मैथिलीपर जातिवादी स्वरूपक कलंक लागल अछि।

'चित्रा' संग्रहक विशेष पक्ष अछि- एकर सम्पूर्णता। आंचलिक रचनाकेँ मैथिली साहित्यमे प्राथमिकता देल गेल अछि। ऐ भ्रमकेँ यात्री जी 'गाँधी' शीर्षक कविता लिख कऽ तोड़ि देलनि। गाँधी मात्र एक व्यक्तिक नाओ नै 'भारतीय दर्शन' थिक। ऐ दर्शनमे कोनो विभेद नै, सबहक लेल स्थान ऐ दर्शनक मूल संस्कार थिक। विडंम्बना अछि जे समाजमे दिव्य ज्योति जगबैबलाक अंत निर्मम होइत छन्हि। इसा-मसीह आ सुकराते जकाँ गाँधी मर्म स्पर्शी रूपैँ विलोकित भेलाह। राजा भर्तृहरिक 'वैराग्य शतक' जकाँ यात्री जीक रचनामे क्षोभक अवलोकन कएल जा सकैत अछि। 'आसिन मासक राति इजोरिया कहैमे तँ ज्योतिक प्रतीक थिक मुदा बुढ़वा पीपरक ठुट्ठपर बैसल नील कंठक त्राससँ भरल जीवनमे ऐ ज्योतिक कोन अर्थ? फागुनक इजोरिया टहाटही हो वा युग धर्म सभ ठाम विगलित असार जीवन रसकेँ छंदसँ यात्री जी पसारि देलनि। जेठक दुपहरियामे कालक प्रहारकेँ देखएबाक सार्थक प्रयास कएल गेल।

देश दशाष्टक भ्रष्टाचारपर लिखल यात्री जीक अश्रुकण थिक। यात्री जीक यौवन परतंत्र भारतमे बीतल मुदा स्वतंत्रताक दू बरख वाद ऐ कविताक रचना कएलन्हि। जे आश अप्पन लोकसँ कहल गेल ओइ आशक पूर्णतामे संदेह देखएबाक यात्री जी प्रयास कएलनि।

परम सत्यकेँ चित्राक सतोगुण कहल जा सकैत अछि। स्वामी विवेकानंदक शून्यवादी सोच सदृश यात्री जी जहानक अस्तित्वपर प्रश्न चिन्ह लगएवाक प्रयास कएलनि। प्रारंभमे वैराग्यक अनुभूति मुदा शनै: शनै विश्वासक सोतीमे डुबकी लगावए लगलनि। यएह थिक गृहस्थ धर्म। मनुष्य विपत्तिमे संसारकेँ मायागृह बूझैत अछि, परंच मोहक तांडवसँ केओ नै बचि सकैछ। अंतमे विश्वासक संग ऐ कविताक दुरागमन कएल गेल।

अंतिम पद्य एकटा पाछाँक पछातिमे विचरण करएवाली नारीक कर्मगाथा थिक- 'गोट-विछनी'। नारी पुनरूत्थानपर भाषण खूव देल जाइत अछि मुदा अज्ञ, दीन, साधन विहीन, शोषित आ समाजक धारसँ बाढ़िक खाधि जकाँ कटलि नारीक व्यथा लग केओ नै जा सकल।

'चित्रा' कविता संग्रह चित्रा नक्षत्रक तीत पानि जकाँ चिन्तन करबाक योग्य अछि। रचनाकारक जीवन चरित्र जौं सम्यक हो तँ रचनाक विषए-वस्तु समाजक लेल दर्शन भऽ जाइत अछि। समग्र जीवन संघर्षक पांजड़िमे वितएवाक कारण यात्री जी कर्म आ धर्मक हृदेमे घुसि गेल छथि। चित्रासँ स्पष्ट दर्शन भेल जे यात्री जी मानव धर्मी छथि। छनहिमे कचोट आ क्षणहिमे क्रान्तिक जुआरि, आवेग आ अतृप्तिक छोभ रहितहुँ विहानक विश्वास तृण-तृणकेँ सिहरा दैत अछि। ऐ रचनाकेँ जौं आत्मसात कऽ लेल जाए तँ वैदेहीक मिथिलामे पुर्नस्तित्व सुधारससँ ओत प्रोत भऽ सकैत अछि।

शेष- अशेष............

पोथीक नाओं- चित्रा

रचनाकार- श्री यात्री

प्रकाशक- अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद प्रयाग

रचना वर्ष- १९४९

४.भफाइत चाहक जिनगी

समीक्षा

संपूर्ण मैथिली भाषामे नाटक विधाक प्रारंभ पंडित जीवन झा कृत नाटक 'सुन्दर संयोग'सँ सन् १९०४ई मे भेल। ऐसँ पूर्व मैथिलीमे उमापति, रामदास नन्दीपति आदि सेहो नाटकक रचना कएलन्हि मुदा ओ सभ पूर्ण मैथिलीमे नै लिखल गेल।

सुन्दर संयोग'सँ लऽ कऽ श्री नचिकेता रचित 'नो एन्ट्री मा प्रविश', श्रीमती विभारानी कृत 'भार रौ आ बलचंदा' आओर श्री जगदीश प्रसाद मंडल कृत 'मिथिलाक बेटी' धरि मैथिली साहित्यमे विविध विधाक नाटकक रास संग्रह उपलब्ध अछि। ओइ समग्र नाटकक मध्य किछु नाटक बड़ लोकप्रिय भेल अछि ओइमे- श्री ईशनाथ झा रचित 'चीनीक लड्डू' पंडित गोविन्द झा लिखित 'बसात' श्री मणिपद्म रचित झुमकी श्री ललन ठाकुर लिखित 'लौंगिया मिरचाई' प्रो. राधा कृष्ण चौधरी लिखित 'राज्याभिषेक' श्री सुरेन्द्र प्र. सिन्हा रचित 'वीरचक्र' श्री महेन्द्र मलंगिया रचित 'एक कमल नोरमे' श्री विन्देश्वरी मंडल रचित 'क्षमादान' श्री उत्तम लाल मंडल रचित 'इजोत' आ श्री गौरीकान्त चौधरी 'कांत' (मुखिया जी) रचित 'वरदान'क संग-संग मैथिलीक मूर्द्धन्य साहित्यकार पंडित सुधांशु शेखर चौधरी रचित 'भफाइत चाहक जिनगी' प्रमुख अछि।

स्व सुधांशु जी मूलत: मैथिली साहित्यक उपन्यासकारक रूपमे प्रसिद्ध छथि। अर्थनीतिकेँ आधार बना कऽ लिखबाक शैलीक कारण मैथिलीमे हिनक एकटा अलग स्थान अछि, एकटा कलाकार जौं अपन कलाक प्रदर्शन नाट्य रूपमे करए तँ कोनो अजगुत नै। हिन्दीमे हिनक लिखल नाटक सभ लोकप्रिय भेल, तँए अपन मातृभाषामे सेहो नाटक लिखए लगलाह।

भफाइत चाहक जिनगी'मे समाजक सामान्य बिम्बकेँ विलक्षण रूपसँ विम्बित कऽ हास्य आ मर्मक सम्यक् तारतम्य स्थापित कएलन्हि। चाहक जिनगी कतेक क्षणक होइत अछि, भाफ उपटलासँ एकर अस्तित्व लुप्त भऽ जाइछ मुदा जौं भनसियामे आत्म विश्वास हो तँ ओइ अस्तित्वविहीन चाहमे नीर-क्षीर मिश्रित कऽ ओकर फेरसँ सुस्वादु बनाओल जा सकैत अछि। नाटकक नायक महेशक जिनगी भफाइत चाहक जिनगी जकाँ अछि। एकटा सुशिक्षित व्यक्ति कर्मक प्रतिस्पर्धाक गतिमे सफल नै भेलापर समाजक अधलाह मानल गेल कर्मकेँ अपन जीवनक डोरि बना कऽ ततेक आत्मबलसँ जीवैत अछि जे दीर्घसूत्री दृष्टिकोणक

लोक सेहो एकरा लग नतमस्तक भऽ गेल।
नाटकक कथा चेतना समिति पटनाक कार्यक्रमक मध्य धुरैत अछि। महेश चाहक स्थायी विक्रेता छथि मुदा अधिक विक्रीक आशक संग मिथिला-मैथिलीसँ सिनेहक दुआरे त्रिदिवसीय कार्यक्रममे अपन दोकान लगौलनि। हुनक दोकानक पांजड़िमे गेना जीक पानक दोकान, मात्र मैथिलीक पावनि धरिक लेल। सम्पूर्ण नाटक ऐ दू दोकानक दृश्यमे बिम्बित अिछ। चेतना समितिक कार्यक्रमक प्रदर्शन मात्र नेपथ्यसँ कएल गेल।
महेश-गेनाक शीत वसंतक वसातक संयोग जकाँ वार्तालापक क्रममे कार्यक्रमक कार्यकर्त्ता गोपालक प्रवेश। हिनक उद्येश्य चाह पीबाक संग कार्यक्रममे चाह पहुँचएवाक सेहो अछि। पान मंचपर अवश्य चाही, किएक तँ ई मैथिल संस्कृतिक प्रतीक अछि। गोपालक संग दिगम्वरक गप्प-सप्पमे अनसोहॉत कटाक्ष शैलीक विवेचन नीक बुझना जाइत अछि। अध्ययन सम्पन्न कऽ लेलाक पश्चात् दिगम्बर बाबूकेँ नौकरी नै भेटलन्हि। पटनामे दस दुआरि बनि पेट पोसि रहल छथि परंच महेशक चाह बेचवासँ ओ संतुष्ट नै, हुनका गामक महेश चाहक दोकान खोलि गामक नाक कटा रहल अछि। वाह-रे मैथिल! भीख मांगि कऽ खाएब नीक, ठकि कऽ जीएव नीक मुदा छोट कर्म नै करब। महेश तँ चाह बेचि कऽ अपन परिवारक प्रतिपाल करैत छथि, दू गोट बारह बरखक नेनाकेँ रोजगार देने छथि मुदा दिगम्वर बाबूकेँ अपन यायावरी जीवन नीक लगैत छन्हि। मुँहगर जे स्वयं अकर्मण्य हो ओ गोंग कर्मक पुरूषकेँ दूसए तँ की कहल जाए? महेश चुप्प नै रहलाह, अपन कर्मक गतिक आड़िमे दिगमबरकेँ सत्यसँ परिचए करा देलनि। ओना ई दोसर गप्प जे महेशो अपन पितासँ असत्य बजने छथि। हुनक पिताकेँ ई वूझल छन्हि जे महेश पटनामे नौकरी करैत अछि।
महेश मिथ्या बजलनि मात्र अपन पिताक मानसिक संतुष्टिक लेल, किएक तँ पुरना सोचक लोक अपन ठोप-चाननेटा पर विश्वास करैत छथि, वरू भुक्खे मरि जाएब मुदा विजातीय ओछ कर्म नै करब।
नाटकक दोसर प्रमुख पात्र छथि उमानाथ आ चन्द्रमा, एकटा अकाश आ दोसर धरित्री। उमानाथ अभियंता छथि, नाओं टा लेल मैथिल, कार्यक्रम देखबाक लेल नै अएलनि, मात्र अपन ‘सगी सभसँ भैंट करबाक दुआरे चेतना समितिक दर्शक दीर्घामे अशोकर्य लऽ कऽ पैसलनि। अपन कनियाँ चन्द्रमा टा सँ

मैथिलीमे गप्प करैत छथि। की मजाल केओ दोसर हुनका संग मैथिलीमे गप्प करबाक दु:साहस करए, ओकरा अपन सामर्थ्य देखा देताह। दुनू परानी चाह पीवाक क्रममे महेशक दोकानपर अबैत छथि, चाह बनल नै की उमानाथ जीकेँ कोनो संगीपर नजरि पड़ि गेलनि। कनियाकेँ महेशक दोकानपर छोड़ि ठामे पड़ा गेलाह। यथाक्रममे मंचसँ महेश जीकेँ कविता पाठ करबाक आग्रह आएल। चन्द्रमा जीकेँ बिनु दामे दोकानक ओरवाही दऽ ओ मंचस्थ भऽ गेलाह। चन्द्रमा अजगुतमे पड़ि गेलीह, चाहक विक्रेता आ कवि? कालक लीला विचित्र लगलनि। दोकानपर गाहकि सभ आबए लागल, चन्द्रमा भावावेशमे पड़ि चाह बनावए लगलीह। गंगानाथ आ दयानंद सन गाहकिकेँ चाह विक्रेता कवि पचि नै रहल छल। समितिक मंच हुनका लोकनिक मतेँ गनहा गेल। हरिकान्त बाबूकेँ आधुनिक रूपक कार्यक्रम नीक नै लागि रहल छन्हि, तेँ शिवानंदकेँ पुरातन संस्कृतिसँ कोनो मोह वा छोह नै। ऐ मध्य उमानाथ बाबू चन्द्रमाकेँ तकैत दोकानपर अएलाह। अपन कनियाकेँ चाह बनवैत देखिते माहुर भऽ गेलथि। छोड़बाक जिद्द कएलनि मुदा मैथिल नारी अपन उतरदायित्वसँ कोना भटकि सकैत अछि? एक खीरा तीन फॉक! बिगड़ि कऽ फेर पड़ा गेलाह। मोने-मोन महेशपर अगिनवान बरिसबैत छलथि। चन्द्रमा सेहो संकटक अवाहानमे सशंकित मुदा की करतीह? एक दिस भाव आ दोसर दिस कर्त्तव्य वोध, "आँखिक तीरक बिख पानि नोर बनि झहड़ल हृदए झमान भेल।"

कथाक अंतिम वनिता सरिताक कंठ चाहक लेल सुखए लागल तँए अपन नोकर आ छोट नेनाक संग महेशक दोकानपर अबैत छथि। कविकाठी महेश कविता पाठ कऽ फेर अपन जीवनकेँ गुनि रहल छथि। सरिताकेँ देखिते स्वयंमे नुकएवाक असहज प्रयास करए लगलनि। वएह सरिता जे कहियो महेशक सह पाठिनी छलीह, आब एकटा आइ.ए.एस. अधिकारीक अर्द्धांगिनी छथि। सरिता महेशसँ साक्षात्कार करबाक प्रयास कऽ रहलीहें। महेश अपन भूतकालकेँ झाँपए चाहैत छथि मुदा सरिता घोघट कालक वऽर जकाँ ओकरा उधारि रहल छलीह। हुनक उद्येश्य सिनेहिल अछि तँए महेश टूटि गेलाह। सरिता अश्रुधारसँ सिचिंत, जकर नोट्स पढ़ि अध्ययन पथपर बढ़ैत रहलीह ओ एहेन दशामे पहुँच गेल। चन्द्रमा सरिताक मोहमे विचरण करए लगलीह। ऐ मर्मस्पर्शी क्षणक अंत भेल नै की उमानाथ आबि महेशक गट्टा पकड़ि वास्तविक जीवनकेँ दर्शन कराबए

लगलाह। चन्द्रमा ऐ क्षण महेशक संग दऽ रहल छलीह।

मैथिली साहित्यक लेल सभसँ विलग नूतन विषए-वस्तुक मार्मिक विश्लेषणमे शेखर जीक अतुल्य प्रतिभाक झलक अनमोल अछि। पूर्ण रूपसँ एकरा नाटक नै कहल जा सकैछ, किएक तँ दीर्ध एकांकीक रूपमे लिखल गेल अछि। कथाक चित्रण मात्र दू दोकानक परिधिमे भेल अछि तँए दृश्य समायोजनमे कोनो प्रकारक विध्नक स्थिति नै, सरिपहुँ एकरा शेखर जी नाटकक रूपमे प्रदर्शित कएलनि। महेश सन चरित्र हमरा सबहक समाजमे छथि मुदा कर्त्तव्यबोधक एहेन पुरूष जौं मिथिलामे सभ ठाम होथि तँ हम सभ साधन विहिन रहितहुँ सम्यक जीवनक रचना कऽ सकैत छी। चन्द्रमा सन दीर्घसोची नारीक विवरणमे वास्तविकतासँ बेसी कल्पनाक आभास होइत अछि। नाटकक आत्मकथ्यमे शेखर जीक आत्मविश्वाससँ बेसी अहंकारक दर्शन भेल। 'नाटकक क्षेत्रमे हमर किछु मोजर अछि' सन उक्तिक संग बटुक भाय आ गजेन्द्र ना. चौधरीक प्रति कृतज्ञता ज्ञापनमे महिमा मंडनक भान शेशर जीक संस्कारपर बुझना जाइछ। केओ ककरो प्रेरणासँ रचनाकार नै भऽ सकैत अछि, ई तँ नैसर्गिक प्रतिभाक परिणाम थिक। मुदा ऐसँ 'भफाइत चाहक जिनगी'क मर्यादाकेँ क्षीण नै बुझना जा सकैत अछि। मात्र छोट-छोट ३९ पृष्ठक नाटक (ओहुमे सँ आठ पृष्ठ विषए-वस्तुसँ बाहरक) मैथिली साहित्यक लेल मरूभूमिमे नीरक सदृश बनल दृष्टिकोणकेँ परिलक्षित करैत अछि। ऐ प्रकारक बिम्बक सृजन शेखर जी सन मांजल रचनाकारेसँ संभव भऽ सकैछ। निष्कर्षत: मिथिलाक संस्कृतिक मध्य कर्म प्रधान युगक आचमनिसँ नाटक ओत-प्रोत अछि। मात्र साहित्यक नै, मंचनक लेल पूर्णत: उपयुक्त लागल।

नाटक- भफाइत चाहक जिनगी
रचनाकार- पं. सुधांशु शेखर चौधरी
प्रथम संस्करण- नवम्वर १९७५
शिवकुमार झा टिल्लू

५.मौलाइल गाछक फूल

(समीक्षा)

कोनो भाषा साहित्यक विकासमे उपन्यासक एकटा अलग महत्व होइत अछि। औपन्यासिक कृतिकेँ जौं साहित्यक चक्षु द्वय कहल जाए तँ कोनो अतिशयोक्ति नै होएत। मैथिली साहित्यमे उपन्यास सभक भंडार बड़ विस्तृत अछि। ऐ प्रांजल साहित्यिक कृतिमे किछु कोसक पाथर सन रचना भेल जे आर्यावर्त्तक भाषाक गुच्छमे मैथिलीक स्थानकेँ सुवासित कऽ रहल अछि। सर्वकालीन मैथिली साहित्यक इतिहासमे सम्मिलित ओ सभ उपन्यास अछि- पंडित जन सीदन कृत शशिकला, प्रो. हरिमोहन झा रचित कन्यादान ओ द्विरागमन, योगानन्द झा रचित भलमानुष, श्री यात्री कृत पारो, डॉ. मणिपद्म कृति नैका वनिजारा, श्री सोमदेव कृत चानोदाइ, श्री सुधांशु शेखर चौधरी कृत दरिद्र छिम्मड़ि, श्रीमती लीलीरे कृत पटाक्षेप, श्री रमानंद रेणु कृत दूध-फूल, डॉ. शेफालिका वर्मा कृत नागफांस, श्री साकेतानंद कृत सर्वस्वांत, श्री ललित कृत पृथ्वीपुत्र, श्रीमती गौरी मिश्र कृत चिनगी, श्री केदारनाथ चौधरी कृत माहूर आ श्री गजेन्द्र ठाकुर कृत सहस्त्रवाढ़नि।

निश्चित रूपें ऐ सभ उपन्याससँ मैथिली साहित्यकेँ नव दशा ओ दिशा भेटल, परंच एकर अतिरिक्त सेहो किछु कृति अछि जकर चर्च करब बिना मैथिली उपन्यास विधाकेँ अपूर्ण मानल जाएत। ओइ कृतिमे सँ एक अछि श्री जगदीश प्रसाद मण्डल द्वारा लिखित उपन्यास- 'मौलाइल गाछक फूल'

शीर्षकसँ बुझना गेल जे प्रकृति वर्णनपर आधारित उपन्यास अछि मुदा अध्ययनक पश्चात् समाजक मौलाइल स्वरूपक वर्णन आ पुनरूत्थानक सकारात्मक स्वरूपक आधारपर ऐ उपन्यासक रचना भेल अछि। जौं मालीमे चेतना ओ अनुशीलन हो तँ मौलाइल गाछमे सेहो पुष्प खिलाओल जा सकैत

अछि, ठीक ओहिना समाजमे एकरूपता, सामंजस्य ओ अनुग्रह हो तँ विगलित मिथिलाक स्वरूपमे हरियरी आबि सकैत अछि।

मैथिल समाजक पहिल लोकसँ लऽ कऽ अंतिम लोकक व्यथा वा सुखद अनुभूतिकेँ रेखांकित कऽ रहल अछि- ''मौलाइल गाछक फूल'' ऐ उपन्यासकेँ सम्पूर्ण उपन्यास ऐ दुआरे मानल जा सकैत अछि जे ऐमे समाजक नकारात्मक स्वरूपपर सकारात्मक सिद्धान्तक विजय देखाओल गेल अछि।

सत्यक विजय तँ वेस ठाॅ होइत अछि मुदा ऐमे असत्यक हृदए परिवर्त्तनक भऽ कऽ सत्यक जन्म होइत अछि। समाजक सभसँ अंतिम व्यक्तिक दशा ओकरे शब्दमे लिखल गेल, भाषा सम्पादन आ परिमार्जनक आड़िमे कोनो परिवर्तन नै। सम्पूर्ण जीवन दर्शनमे नायकत्व, किओ खलनायक नै। वास्तविक रूपे की एना संभव अछि? अवश्य भऽ सकैछ, जौं हम सभ स्वयंमे सम्यक सोच आ दृष्टिकोणकेँ स्थापित करी।

कथाक विषए-वस्तु कोनो एकटा कथापर केन्द्रित नै भऽ कऽ बहुत रास उपकथाकेँ सहेजि कऽ बनाओल गेल अछि। कथाक प्रारंभ अकालक परिणामसँ होइत अछि। गरीव मजूर अनुपक पुत्र बौएलाल भुक्खक कारण मृत्युक अवाहन कऽ रहल अछि। माए रधिया अपन लोटा बेचि कऽ ओकर तृप्ति लेल चिक्कस कीनि कऽ अनैत अछि। तीनटा रोटी बनल मुदा बौएलालक भाग्यमे मात्र एकटा रोटी आ दू लोटा पानि। श्रमजीवीक मार्मिक दशापर लिखल पहिल भागमे संवभत: रधिया अर्न्तमनसँ अनूपसँ कहैत छथि-

की बुझवें ककरा कहै छै गरीवी,

सपनहुँमे सुख नै जतऽ श्रमजीवी,

सूर्यास्तक पश्चात दू क्षणक लेल कुहेस अबैत अछि, फेर उषाक दर्शन अवश्यंभावी, यएह तँ प्रकृतिक लीला अछि। नथुआ अनूपक अन्हार कूपमे इजोतक सूक्ष्म बाती लऽ कऽ अबैत अछि। रमाकान्त बाबू पोखरि खुनौता तँए

मजूरक आवश्यकता अिछ। अनूपकेँ सपरिवार काज भेट गेलनि। मेट मूसनाक वरदहस्त जे छल। मालिकक मुंशीकेँ मेट कहल जाइत अछि। मूल रूपसँ दलालक प्रवृतिबला मूसन अनुपक लेल प्राणदायक अछि। किएक तँ दुनू परानीक संग-संग बारह बर्खक बौएलालकेँ सेहो काज दऽ देलक। बौएलाल सेहो पूर्ण तन्मय भऽ कऽ कएलक, तकर परिणाम भेल जे रमाकान्त बाबू आन जोनसँ बेसी मजदूरी बौएलालकेँ देलनि। कर्मक गति विचित्र होइत अछि। उपन्यासकार बाल श्रमिककेँ महिमा मंडित कऽ रहल छथि। हमरा सबहक संविधानमे १४ वर्खसँ कम उमेरक व्यक्तिकेँ 'बाल' कहल जाइत अछि- मजदूरी प्रतिवंधित। मुदा ओ भुक्खे मरि जाए एकर कोनो परिवाहि नै। टेलिभीजनमे नाच पाँच बर्खक बच्चा कऽ सकैत छथि, एकरा प्रतिभाक प्रदर्शन मानल जाइत अछि मुदा १२ वर्खक बौएलाल मात्र मौलाइल गाछक मजदूर थिक, वास्तविक जीवनमे पकड़ल जाएत तँ दीन हीन पिताकेँ जेहल भेटल। 'समरथकेँ नै दोष गोसाईं। रमाकान्त बाबूक प्रतापसँ अपन कर्मक प्रकृतिसँ अनूपक गरीवी समाप्त भऽ गेल। बौएलाल काजक संग-संग शिक्षा सेहो ग्रहण करए लागल। बौएलालक जीवनमे विहान जे आएल ओ उपन्यासक अंत धरि जगमगाइते रहल। अंतमे रमाकान्त बाबूक जेठ बालक डॉ. महेन्द्रक सहकर्मी भऽ गेला बौएलाल। बौएलालसँ डॉ. बौएलाल- सभटा कर्मक प्रभाव। हिन्दी साहित्यक एकटा कविक उक्ति पूर्णत: सत्य प्रतीत होइत अछि-

प्राणों की वर्तिका बनाकर,

ओढ़ तिमिर की काली चादर

जलने वाला दीपक ही तो जग का तिमिर मिटा पाता है रोने वाला ही गाता है।

कथाक दोसर मोड़पर शशिशेखरक जीवन विहानसँ तिमिरमे प्रवेश करैत अछि। कृषि वैज्ञानिक बनावाक बाटेपर सभटा समाप्त भऽ गेल। माता-पिताक बिमारीमे सभटा चौपट्ट भऽ गेलनि। अधखरू शिक्षा बड़ कष्टदायी होइत अछि। आत्मगलानिक शिकार शशिशेखरक भाग्य सेहो फूजल। एकटा विधवा अपन जमीनसँ विद्यालय खोलवाक योजना बनायलि। गामक संभ्रान्तसँ लऽ कऽ गरीब गुरबाक समर्थन। शशिशेखर शिक्षक भऽ गेलाह।

उपन्यासक तेसर खण्डमे सुगियाक शारीरिक व्यथाक आरंम्भक संग-संग पति सोनेलालक समर्थन हृदेकैँ झकझोरि दैत अछि। येन-केन प्रकारेण सोनेलाल सुगियाक इलाज करा कऽ गाम घुरलाह। सुगिया स्वस्थ भेली, चिकित्साक प्रभावसँ मुदा कबुलाक प्रभाव मानि सोनेलाल कीर्त्तनक संग-संग भंडारक आयोजन कएलनि। हमरा सबहक समाजमे अंध विश्वासक चमौकनि अपन जालसँ सोचकैँ घेर नेने अछि। कीर्त्तनक दू दल आगाँक जातिक रमापतिक दल आ वेस पछाथिक संग-संग किछु सवर्ण साधुक मिश्रित दल- गंगादासक दल। उधेश्य एक मुदा दृष्टिकोण अलग-अलग। रमापतिक दल गरीब सोनेलालसँ दक्षिणा लेलनि, दयाक कोनो संभावना नै। गंगादासक दल दक्षिणा तँ लेलनि मुदा मात्र सिद्धान्तक रूपमे। वास्तवमे लऽ कऽ घुरा देलनि। आत्म सम्मानक भावक संग-संग गंगादासमे दया-भाव सेहो अछि। आब स्वत: बूझल जा सकैत अछि जे सवर्ण ककरा कही?

चारिम खण्डक प्रारंभ रमाकान्त बाबू क अपन पत्नी श्यामा आ नोकर जुगेसरक संग मद्रास प्रवाससँ होइत अछि। कतऽ गाम आ कतऽ मद्रासक जिनगी। एक दिस जगमगाइत रोशनी, साफ सड़क आ गगनचुम्बी महल तँ दोसर दिस दू कुहेसक वाट। मुदा वास्तविकता किछु आओर छल। पुतोहू-पुत्र डॉ मुदा भविष्यमे किछु नै भेटबाक संभावना देख रमाकान्तक हिया सुखा रहल छलनि। बेटा-पुतोहूसँ तँ खूब सम्मान आ सत्कार भेटलनि मुदा पाँचटा पोता-पोतीमे सँ केओ चिन्हवो नै कएलनि। जे जीवितमे नै जनैत अछि ओकरासँ जीवनक अंतिम अवस्थामे की आश करी? पलायनवादक पराकाष्ठा धरि लऽ जाएब उपन्यासकारक सोचसँ निश्चित रूपे अजगुत लगैत अछि। मिथिलाक भविष्य कतऽ धरि जाएत जगदीश बाबूक संजय सन दृष्टि आश्चर्यजनक मुदा प्रासंगिक अछि। छोटकी पुतोहू सुजाताक जीवनक गाथा सुनि रमाकान्त बाबू पसिझ गेलाह। एकटा धोविनक तनयासँ छोटका बेटाक विवाह भेल दूटा संतान सेहो भऽ गेल मुदा रमाकान्त बाबू अपन पुतोहूक इतिहास नै जनैत छलाह। साम्यवादी सोचक उन्नायक रमाकान्त बाबूसँ एना संभव तँ मानल जा सकैत अछि मुदा ओ अपन बेटाक विवाहमे शामिल किएक नै भेलाह। पलायनक एहन फल मैथिलक समृद्ध वर्गकैँ कोना भेट सकैत अछि? गाममे दू सए बीघा जमीनक मालिक

रमाकान्त बाबूक दुनू लाल किएक नै गामेमे अस्पताल खोललनि। जखन मद्रासक संभ्रान्त मिथिलामे नै अबैत छथि तँ हम सभ किए पलायन करैत छी? विपन्नक पलायन तँ बूझएमे अबैत अछि परंच सम्पन्नक पलायन.....?

ऐ उपन्यासक सभसँ पैघ विशेषता जे उपन्यासकार कोनो प्रकारक प्रश्नकेँ छोड़ि रचनाक इतिश्री नै कएलनि। प्रश्नक संग-संग विश्लेषण आ समाधान पोथीमे अनायास भेट जाएत। कथाक अंतमे पलायनवादक इतिश्री कहल गेल। डॉ. महेन्द्र आ डॉ. सुजाता गामक गरीव गुरबाक इलाजक लेल तत्पर भेलीह। कोनो व्यक्तिकेँ असाध्य रोग यथा कैंसर, एड्स नै। ऐसँ प्रमाणित होइत अछि जे गाममे रहनिहारक जीवन संतुलित अछि। वीमार छथि तकर कारण पोषण संतुलित नै। श्रमजीवी आ श्रमपोषीक मध्यक खाधिक कारण ई दशा अछि। रमाकान्त बाबू ऐ दशासँ तीजि-भीजि गेलाह। क्षणहिमे अपन सभटा जमीन जाल गरीवक मध्य वॉटि देलनि। गरीबो आत्म सम्मानी आ वफादार। खेतसँ उपजल अन्न, तीमन तरकारी प्रथमत: रमाकान्त बाबूकेँ दैत छथि। सम्यक समाजक रचना, केओ सवर्ण नै केओ क्षुद्र नै। सबल मिथिला, संवल मैथिलाक कल्याणकारी सोच मनोरम अछि।

हीरानन्द सन सम्यक सोचबला सवर्ण जौं समाजमे आगाँ बढ़ति तँ मिथिलाक रूप रेखा बदलि जाएत। हीरानंदक जातिक उल्लेख तँ नै कएल गेल अछि मुदा लिखबाक कलासँ स्पष्ट होइत अछि ओ निश्चित रूपेँ आगाँक जातिक छथि। अनुपक घरमे भोजन ग्रहन काल सबरी-रामक सिनेहक स्पष्ट दर्शन। जीवन दर्शनपर आधारित ऐ उपन्यासमे कतौ जातिक उल्लेख नै मुदा लक्षणसँ स्पष्टीकरण होइत अछि। सुबुधिक विवेकशीलतामे रचनाकारक दृष्टिकोण पारदर्शी लागल। बुझना जाइत अछि जे जगदीश बाबू सुबुधक रूपेँ उपन्यासमे पैसल छथि। उपन्यासमे एकठॉ वर्ग संधर्षक स्थिति देखऽ मे आएल मुदा एकटा अवला अपन चरित्रक रक्षाक लेल पियक्करपर प्रहार कएलनि। ई सभ वास्तविकता अछि एकरा अनसोहॉत नै मानल जा सकैत अछि।

विषए-वस्तुक मध्य झॉपल दशापर वेवाक प्रस्तुति। ओना तँ सभटा रचनाकार अपनाकेँ साम्यवादी आ समाजवादी मानैत छथि। मुदा रचनाक संग-संग

सबहक जीवनक दर्शन कएलापर स्थिति विपरीत भऽ सकैत छथि। मैथिली साहित्यक सम्यक चरित्र, सम्यक दृष्टि आ सम्यक जीवन शैलीमे जीबऽ बला किछुए मात्र साहित्यकारक समूहमे जगदीश बाबूकेँ सेहो राखल जा सकैत अछि। अपन व्यक्तित्वसँ जीवनक नूतन आयामकेँ समाजमे ज्योतिक रूपमे पसारब मात्र रचनामे नै, व्यक्तिगत जीवनोमे अवश्ये हएत। भऽ सकैत अछि वर्तमान पिरही ऐ ग्रन्थक तादात्मयकेँ पूर्णत: स्वीकार नै करए, परंच हमरा बुझने ई सम्पूर्ण पाठकक उपन्यास थिक। ऐमे ककरोसँ कोनो पूर्वाग्रह नै। सम्भ्रान्त समाजकेँ विगलित आ ओछ समाजसँ जोड़ि सम्यक समाजक निर्माण करबाक उद्येश्यमे "सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग भवेत्'क दृष्टि परिलक्षित होइत अछि। कतौ-कतौ शब्द आ वाक्य सामंजस्यमे किछु त्रुटि सेहो देखऽ मे आएल मुदा भाव पवित्र, उद्येश्य पवित्र तँए एकरा नजरअंदाज करब प्रासंगिक लागल। निश्चित रूपँ सर्वश्रेष्ठ मैथिली उपन्यासक सूचीमे ऐ उपन्यासक नाओं देल सकैत अछि।

पोथीक नाम- मौलाइल गाछक फूल

विधा- उपन्यास

रचनाकार- जगदीश प्रसाद मण्डल

प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन राजेन्द्र नगर दिल्ली

मूल्य- २५० टाका मात्र

प्रकाशन वर्ष- सन् २००९

पोथी पाप्तिक स्थान- पल्लवी डिस्ट्रीब्यूटर्स, वार्ड न.६, निर्मली, सुपौल, मोवाइल न. ९५७२४५०४०५

६. **अर्चिस समीक्षा-**

वर्तमान मैथिलीक कविताकेँ तरूण कवि आ कवयित्रीक पदार्पणसँ नव गति भेटि रहल अछि। ऐ नवतुरिया मुदा विषए-वस्तुक दृष्टिकोणसँ सजल रचना सबहक रचनाकारक वर्गमे एकटा प्रवासी मैथिलीक कवयित्री छथि- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी।

''अर्चिस'' ज्योति जीक प्रथम संकलित कविता संग्रह थिक। ऐ पोथीमे ३७ गोट कविता संग्रहित अछि। ज्योति जी कतेक दिनसँ रचना करैत छथि, ई तँ नै बुझल अछि मुदा विदेहक पदार्पणक किछुए अंकसँ हिनक रचना प्रकाशित हुअए लगल।

अर्चिसक अर्थ तत्सममे अग्नि आ तद्भवमे आग, अनल आदि मानल जाइत अछि मुदा मैथिलीमे आगि, अंगोर आ लुत्ती सेहो कहल जा सकैछ। ऐ पोथीक शीर्षक मात्र कवयित्रीक भावनापर आधारित अछि, कविताक भावसँ ऐ शीर्षकक कोनो संबंध नै। पहिल कविता ''हाइकू'' प्रकृति वर्णन, श्रृंगार, विचार मूल आ विरहक मिश्रित चित्रांकन करैछ। हाइकू पहिने मैथिलीमे क्षणिका नाओंसँ लिखल जाइत छल मुदा ज्योति जी एकर वास्तविक रूपक चित्रण कएलनि अछि। सम्पूर्ण कवितामे अर्न्तद्वन्द्व आ प्रसन्नताक भीड़क मध्य व्यथा-टीशक अंतरंग हृदेक प्रवाहमयी प्रस्तुति..... मनोरम लागल।

एकटा हेराएल सखीमे कवयित्री कविताक नायिकाकेँ अपन सखी मानि ओकरा सिनेहीसँ भेटल पीड़ाक उद्बोधन कऽ रहल छथि। नारी मोनमे अश्रुउच्छवासक संग-संग समर्पण सेहो रहैत अछि। ओना तँ आर्य ग्रन्थमे ''त्रिया चरित्र: पुरूषस्य भाग्यम् देवो न जानाति कुतो मनुष्य:'' लिखल गेल अछि मुदा एकरा हम उचित नै मानैत छी। आर्यावर्तक नारीक मोन विह्वलआ भावुक होइत अछि तँए भावनात्मक छलक शिकार शीघ्र भऽ जएवाक संभावना देखल जा सकैछ। पुरूष प्रधान समाजमे दोस नारीपर देल जाइत अछि मुदा पुरूषक चरित्रहीनताक नाओं की देल जाए? जीवन भरि एक पुरूषक प्रति समर्पणकेँ केन्द्र बिन्दु बना कऽ कवयित्री दुखित छथि अपन सखीक निश्छल समर्पणसँ। ई कविता सदेह ३ मे

कल्पना शरणक रचनाक रूपमे प्रकाशित भेल अछि। नै जानि बेर-बेरि नाओं बदलि कऽ लिखबाक परम्परा कहिया धरि चलत। छद्म नाओक निर्णक एकवेरिमे कऽ लेबाक चाही, नै तँ रचनाकारक विलगित मानसिकताक बोध होइत अछि।

वर्तमान महिला वर्गमे नौकरी करबाक इच्छा शक्ति प्रवल भऽ रहल अछि। स्वभाविके अछि जीवनक दोसर पहिया तँ नारी छथि। सृजन आ सृष्टिक रूपमे पहिल पहिया सेहो कहि सकैत छी। परंच युवा महिला वर्गक प्रवृति चंचल होइत अछि। ऐ अल्हड़पनमे अपन कर्मगतिकेँ सेहो चंचल बनएवाक प्रयास कऽ रहल छथि कवयित्री अपन कविता ''एकरा नौकरी चाही''मे। कार्यालयक सभटा काज हिनके मोनक होएवाक चाही। काज कम मुदा कैंचा बेसी चाहैत छथि। बॉसकेँ आन्हर आ वहिर होएवाक कामनामे हास्यक दर्शन होइत अछि। भऽ सकैत अछि हिनक एहेन दृष्टिकोण मात्र कवितेटा मे हुअए।

''पनिभरनी'' कविता पढ़ि हमर मॉथ सुन्न भऽ गेल, अकचका गेलहुँ। जै नारीक बाल काल जमशेदपुरमे बीतल हुअए, आब लंदनमे रहैत छथि हुनकासँ एहेन शब्दक आश कोना कएल जा सकैत अछि? गामोमे आब घैल आ इनारक रूप मृतपाय भऽ गेल अिछ। एकटा गरीव अवला पनिभरनीक प्रति आसक्तिसँ कविता ओत प्रोत अछि। विषए-वस्तु आ दृष्टिकोण समंजन खूब नीक लागल। अपन जातिक प्रति सिनेहक मर्मस्पर्शी चित्रण भऽ सकैत अिछ जे ऐ प्रकारक व्यस्थाक वर्णन अपन परिवारक बूढ़-पुरानसँ ज्योति जी सुनने हेती।

दीपमे ज्योति पसरवाक शक्ति होइत अछि मुदा तरमे तँ अन्हार रहैछ। स्वाभाविक अछि जे जहानमे आनंद देवामे सक्षम होइछ ओकर अपन जीवन व्यथित भऽ जाइत अछि। ऐ प्रकारक दर्शन भेल ''शीतल बसात'' कवितामे। वृक्ष दोसरकेँ शीतलता दैत अछि परंच ओकर पात भूखण्डपर खसिते अस्तित्व विहीन भऽ जाइत अछि। पतझड़िक बाद वसन्त, फेर पतझड़ संगहि रौद क्षणहिमे छॉह ई तँ प्रकृतिक लीला अछि। मिथिलाक भूखण्डमे आमक गाछी बूढ़ पुरानक संग-संग बाल बोधक लेल गरमीक पिकनिक केन्द्र होइत अछि। भोज कोनो छप्पन प्रकारक भोज्य पदार्थक नै, टिकुला आ झक्काक भोज। गरमी छुट्टीमे गामक प्रवासक ज्योति जीक अनुभव नीक बुझना जाइत अछि।

''एकटा भीजल बगरा'' कविता पढ़ि हिन्दी साहित्यक महान लेखिका महादेवी वर्मा जीक लिखल ''गिल्लू'' कथा मोन पड़ि गेल। ओइ कथामे वर्माजी एकटा लुक्खीक पीड़ाक वर्णन करैत ओकरा आत्मसात कऽ लैत छथि, तहिना ज्योति जी एकटा चिड़ैक प्रति सिनेहक जे भाव देखा रहल छथि ओ ''सर्वे भवन्तु सुखित:'' सिद्धान्तक द्योतक बुझना गेल। ''हम एकटा मध्य वर्गक बालक'' बाल साहित्यपर आधारित कविता अछि। बाल मनोविज्ञानक संग एकरा बाल गृहविज्ञान सेहो मानल जा सकैत अछि मुदा ऐ कवितामे प्रवाहक अभाव देखए मे आएल। शब्दकेँ तुकांत वनएवाक क्रममे मूल भावक प्रति अनाकर्षक देखए मे आबि रहल अछि। ''टाइम मशीन'' कवितामे आर्य भूमिक दृष्टिकोण आ पाश्चात्य देशक व्यवस्थासँ तुलना नीक लागल। विलासिताक प्रति हमरा सबहक समर्पण परतंत्रताक रूपमे परिणति भेल आ हम सभ सगरो क्षेत्रमे पंगु भऽ गेलहुँ। मिठगर रौद, पहिल फुहार आ वरसातक दृश्य कवितामे प्रकृति वर्णन सामान्य रूपसँ कएल गेल अछि। ऐ प्रकारक कवितासँ हमर साहित्य ओत-प्रोत अछि। ऐ प्रसंगमे किछु नव नै देखए मे आएल। जीवन सोपानमे जीवनक क्रमिक गतिक छंदसँ भरल प्रस्तुति सेहंतित अछि। ''प्रतीक्षासँ परिणाम धरि'' जीवन-दर्शनपर आधारित ज्योति जीक सोहनगरक कविता अछि। हमरा बुझने ई कविता ऐ पोथीक सभसँ विलक्षण अध्याय थिक। श्रीमद्भगवतगीता आ शेष महाभारतक आधारपर कृष्ण चरितक वर्णनसँ कवयित्रीकेँ सिद्धहस्त मानल जा सकैछ। द्वापरसँ कलिमे प्रवेश निश्चित रूपेँ कवयित्रीक विस्तृत अध्ययन आ अनुशीलनक छाया देखा रहल अछि।

''इन्टर नेट स्वयंवर'' वियाहक नव रूपक चित्रण कऽ रहल अछि। वैदिक कालमे आठ प्रकारक पाणिग्रहण व्यवस्था छल। वर्तमान समैमे इंटरनेट चैटिंगसँ वियाह करबाक प्रणालीमे ठक व्यवस्था अछि तँए कवयित्री जकरा बिनु देखने प्रेम करबाक नाटक कएलनि ओ पुरूष नै स्त्री अछि। क्षितिजक साक्षात दर्शनमे प्रवाहक पयोधि गतिशील अछि मुदा रचनामे तारतम्यक अभाव देख रहल छी। हिम आवरित आ मेघाच्छादित सन शब्द तँ नियोजित अछि मुदा जखन हमरा सबहक भाषामे शब्द विन्यासक अभाव नै तखन एहेन तद्भवक चयन करब नीक

नै लागि रहल अछि। जौं ऐ कवितामे देसिल वयनाक मूल शब्दक प्रयोग करितथि तँ कविताक रूप बेसी नीक भऽ जएवाक भऽ संभावना छल।

महावतक हाथी, विद्या धन, वर्फ ओढ़ने वातावरण आ गामक सूर्यास्त कविता तँ नीक अछि मुदा एकर बिम्ब कोनो नव नै सभटा वएह पुरना कविक रचना सबहक रूप देखए मे आएल मुदा दृष्टिकोण हिनक अपन अछि, ककरो रचनाक नकल नै कएने छथि। विशाल समुद्रमे जलोधिक छोट मुदा प्रासंगिक प्रस्तुति नीक लागल। आधुनिक जीवन दर्शन कविताक बिम्ब तँ नीक लागल मुदा विवेचन पक्ष दुर्वल भुझना गेल। मनुष्य आ ओकर भावनामे जीवनक वर्तमान रूपक अन्वेषण उद्धेश्यपूर्ण अछि। हम्मर गाम कवितामे गामक जिनगीक जीत दर्शनीय अछि। विकासमे मूल प्रकृतिक रूपकेँ वैज्ञानिक दृष्टिसँ परिवर्तनक प्रयाससँ निकलैत परिणामक वर्णन कएल गेल अछि। बालश्रम वर्तमान समाजमे कृष्टक रूप लऽ लेने अछि। साधनक अभावमे हम सभ नेनाक शैशव कालकेँ विसरि अवोधपर मानसिक आ शारीरिक अत्याचार करैत छी। मिथिलामे बाढ़िक परिणाम आ प्रलयक रूप मेघक उत्पात आ वरखा तूँ कहिया जेवैं कवितामे देख रहल छी। ''ईशक अराधना'' शीर्षक कवितामे कर्म शक्तिक अवाहन कएल गेल अछि। ऐ कविताक बिम्ब नीक, प्रवाह कलकल आ भाषा सरल अछि। ऐ प्रकारक शब्द विन्यासक मैथिलीमे आवश्यकता अछि। ''खरहाक भोज'' शीर्षक कवितामे आन जीवसँ मनुष्यक तुलना नीक लागल। वौद्धिक रूपसँ विकसित मानवकेँ कर्म आ धैर्यपर विश्वास रखवाक चाही, आन जीवक जीवन-उद्धेश्य भोजन मात्र होइत अछि। कल्पना तखने साकार भऽ सकैत अछि जखन शिक्षाक विकास हएत, ऐ प्रकार दृष्टिकोण कल्पना लोककेँ समृद्धि दऽ सकैत अछि। कोशीक प्रकोप कविताक बिम्ब वर्तमान कालक एकटा पैघ समस्याकेँ उद्धृत कऽ रहल अछि। ''असल राज आ पतझड़क आगमन'' कविताक विषए-वस्तु सामान्य मुदा नीक लागल। वृद्धक अभिलाषामे प्राकृतिक संतुलनकेँ धियानमे राखि नव पिरहीक लेल सृजनशीलताक क्रममे वृक्षारोपनपर वल देल गेल अछि।

''टेम्स धारमे नौका विहार'' कवयित्रीक वास्तविक जीवन रेखाक बिन्दु लंदनसँ अपन ठामक तुलनापर आधारित अछि। टेम्सक धारमे नौका विहार करऽ वालीकेँ

अपन चनहा कोना मोन पड़ि गेलनि, निश्चय आन ठामक नीक व्यवस्था देख हमरा सभकैँ अपन पिछड़ल दशापर मर्म होइत अछि। कतौ-कतौ किछु दुर्वल बिन्दु रहलाक वादो ऐ संग्रहकैँ खूब नीक मानल जा सकैत अछि। कवयित्री कखनो द्वापर युगमे चलि जाइत छथि तँ कखनो चैटिंग वियाहक अनुसंधानक आधुनिक युगमे। समग्र कविता संग्रहमे किछु स्थानकैँ छोड़ि विषए-वस्तु चयन नीक लागल। वर्तमान युगक नवतुरिया पिरहीसँ एतेक आश नै छल। निश्चय ज्योति जी धन्यवादक पात्र छथि।

शेष...अशेष

पोथीक नाम- अर्चिस

रचयिता- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी

दाम- १५० टका

प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन

प्रकाशन वर्ष- २००९

७.समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा

श्रीमती विभा रानी मैथिली साहित्यक चर्चित लेखिका छथि। श्रुति प्रकाशनसँ प्रकाशित हुनक नाटक द्वय भाग रौ आ बलचन्दा पढ़लहुँ। भाग रौ बड़ नीक लागल, परंच बलचन्दा पढ़िते हृदेमे नव वेदना पसरि गेल आ समीक्षा लिखबाक दु:साहस कऽ देलहुँ।

वास्तवमे वलचन्दा नाट्क नै, छोट पोथीमे मात्र २० पृष्ठक एकांकी थिक। सभसँ पैघ गप्प जे विभा जी वर्तमान सामाजिक जीवनक सभसँ पैघ समस्याकेँ अपन लेखनीक विषए बनौलन्हि। कन्या भ्रुण हत्या बर्तमान समाजमे विकट रूप लऽ रहल अछि। प्राय: नाटकमे पुरूष प्रधान पात्रकेँ नायक कहल जाइत अछि परंच अइठाम रोहितक भूमिका खलनायकक अछि। विजातीय समाजक एक शिक्षितसँ क्षणक आवेगमे प्रेम कएलनि। विवाह सेहो भऽ गेल। मुदा ओइ स्त्रीकेँ की भेटल? अभियन्ताक शिक्षा ग्रहण कएलाक पश्चात् गृहिणी बनि कऽ रहि गेली। पुरूष प्रधान समाज तैयो पाछाँ नै छोड़लक। प्रथम संतान बालक होएवाक चाही। आश्चर्यक गप्प ई जे ऐ प्रकारक आदेश सासु द्वारा देल गेल। एक नारी द्वारा दोसर नारीसँ आबएबला नारीक नाश करबाक कुटिल आज्ञा ऐ एकांकीक मूल विषए-वस्तु अछि। खलनायक चुप्प छथि, किएक तँ ओ मातृभक्त। तखन दोसर माएकेँ संतति हंता किए बनाबए चाहैत छथि। जीवन भरि संग देबाक शपथकेँ की भेल? जखन निर्वाह करबाक सामर्थ्य नै छल तँ आन जातिक कन्याकेँ संगिनी किए बनौलन्हि। रोहितक प्रेम-सिनेह नै वरन् वासना मात्र छल।

स्त्रीकेँ भोग्या बना कऽ राखब ओइ परिवारक मूल संकल्प। ओइ लोकनिकेँ सोचवाक चाही जे आब ओ दिन बीति गेल, नारी लक्ष्मी तँ चंडी सेहो छथि। रोहितक स्त्री गर्भपातक प्रवल विरोध कएलनि। प्रतिज्ञा कए लेली जे अबैबला तनयाक पतिपाल स्वयं करब।

ऐ एकांकीक भाषा सरल आ सुन्दर अछि। विषए-वस्तुक सम्पादन सुन्दर आ आकर्षक। मैथिल संस्कृतिक व्यापक प्रदर्शन। जय-जय भैरविसँ प्रारंभ आ समदाओनसँ इति श्री। नारी व्यथाक मर्मस्पर्शी चित्रणक संग जाति व्यवस्थापर मैथिली साहित्यक लेल ई नाट्क नै एकटा आन्दोलन कहल जा सकैत अछि। संस्कृतिक रक्षाक लेल आ सामाजिक संतुलन हेतु साहित्यिक आन्दोलन विभा जीकेँ नमन........ धन्यवाद।

पोथिक नाम- भाग रौ आ बलचन्दा

लेखिका- विभा रानी

दाम- १००रू.

प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन, दिल्ली पोथी प्राप्तिक स्थान: Pallavi Distributors मोवाइल- ९५७२४५०४०५Ward no- ६, Nirmali (Supaul)

८.समीक्षा- मैथिली चित्रकथा

आठ वर्ख पहिने 'मैथिली' भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे शामिल कएल गेल। कतिपय हर्षित भेलहुँ जे हमरो भाखाकेँ वैधानिक अस्तित्व देल गेल। मोने-मोन ओइ सभ गोटेक प्रति कृतज्ञता आ मंगल कामना करैत छलहुँ जनिक प्रयाससँ ई काज भेल। मुदा! एकटा कचोट अर्न्तमनकेँ हिलकोरि रहल छल जे आगाँ की हएत? अपन भाखाक भविष्य नीक नै देख रहल छलहुँ।

ऐ व्यथाक सभसँ पैघ कारण छल हमरा सबहक भाषा साहित्यकमे कोनो क्रांतिक आश नै नजरि आबि रहल छल। वर्तमान पीढ़ी मातृभाषासँ दूर भऽ रहल छलाह। अगिला पीढ़ीक गप्प की कहू? कतेक नेनाकेँ ओलती, चिनुआर, थान, छान-पग्घाक अर्थ बूझल अछि? जौं कोनो अभिभावकसँ पूछैत छी जे नेनासँ अपन वयनामे गप्प किए नै करैत छी तँ जवाब भेटैत अछि जे स्कूल जाएत तँ हिन्दी आ अंग्रेजी नै बूझत तँए अखनेसँ सिखा रहल छी। नेनोमे चेतना नै किएक तँ बाल-साहित्य मैथिलीमे लिखले नै गेल। जौं किछु अछि तँ ओकर अर्थ कतेक नेना बूझैत छथि। महान लेखक वा कविक श्रेष्ठ भाषामे लिखल रचना हम नै बूझैत छी तँ हमर धीया-पूता कोना बूझतथि? ऐ मध्य मैथिलीमे विदेह-सदेहक पदार्पण भेल। नव रूप, नवल सोच आ सकारात्मक दृष्टिकोणक संग। मौलिक बिन्दुपर रचना होअए लागल। उपेक्षितकेँ नव आश भेटल। साहित्य आन्दोलनक एकटा परिणामक चर्च हम पाठकसँ कऽ रहल छी- मैथिली चित्रकथा- श्रुति प्रकाशन दिल्ली द्वारा विदेहक सौजन्यसँ ई पोथी सन् २००८मे बहराएल। ऐ पोथीक लेखिका छथि श्रीमती प्रीति ठाकुर। हिनक ई दोसर रचना थिक। विषए पूर्णत: नव, बाल साहित्यक चित्रकथा। हम ऐसँ पूर्व ऐ विषएक पोथी मैथिलीमे नै देखने छलहुँ। एकरा रचना नै कहल जा सकैछ, किएक तँ ऐमे कोनो साहित्यक सृजन नै, लोक कथा आ जन-श्रुति जे मिथिलामे पहिनेसँ सुनल जा रहल छल ओकरा चित्रक संग चर्च कएल गेल अछि। ऐ प्रकारक जन श्रुति गाम-गाममे

बूढ़-पुरानक मुँहसँ बाजल जाइत छल मुदा आब विलीन भऽ रहल अछि। ओइ विलुप्त विषएपर चित्रकथा लिख प्रीति जी बड़ड नीक काज कएलनि। ऐ पोथीमे जे विशेष आ नव सकारात्मक पक्ष देखलहुँ ओ अछि- विषएक आ कथाक चयन। सम्पूर्ण मिथिला ऐमे समाएल छथि। सभ जाति समाजक लोक-कथाक चित्रण कएल गेल अछि। मोती दाइ कथामे रजक जातिक निष्ठाक चित्रण तँ राजा सलहेसमे दूधवंशीक भावनाक व्याख्या। मिथिला दरवारक वोधि-कायस्थक गंगा लाभ मनोरम लागल। बहुरा गोधिन आ नटुआ दलाल बेगूसरायक लोक कथा थिक। पहिने लोकक मानसिकता छल जे बेगूसरायक लोक मैथिली भाषी नै छथि। हमरो मर्म होइत छल किएक तँ हमर मातृक बेगूसरैए जिलामे अछि। ऐ कथाकेँ पढ़ि तिरहुतिया आ दछिनाहाक भेद हियासँ मेटा गेल।

हमरा सबहक समाजक एकटा उपेक्षित जाति छथि- मुसहर। मुसहरोमे दूटा आदर्श पुरूष भेल छलाह दीना आ भद्री। ओइ दीना भद्रीक कथा बड़ड नीक लागल। पहिने बूझैत छलहुँ जे तपस्वी वनवाक लेल वौद्धिकता आ भौतिकता पैघ मापदंड थिक मुदा आब ई भ्रम दूर भऽ गेल। ऐ प्रकारे बहुत रास कथाक चित्रण कएल गेल अछि।

एकबेर आदरणीय जगदीश प्रसाद मंडल आ बेचन ठाकुर जीक रचना पढ़ि हम लिखने छलहुँ जे **'विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन' मैथिलीपर लागल जातिवादी कलंककेँ धो देलक।** जौं ई गप्प सत्य अछि तँ ओइमे ऐ पोथीक भूमिकाकेँ नै नजरि अंदाज कऽ सकैत छी। वर्तमान पीढ़ीक लेल प्रेरणादायी आ अगिला पीढ़ीकेँ मैथिलीक प्रति सिनेह जगावए लेल ई पोथी प्रासंगिक अछि। भाषा संपादन नीक लागल। चित्रक स्तर बड़ सुन्नर आ व्यापक अछि। श्रुति प्रकाशन सेहो धन्यवादक पात्र छथि। नीक कागतक प्रयोग कएलन्हि आ चित्रक रंग संयोजन सेहो सेहंतित लागल।

अंतमे हम प्रीति जीकेँ धन्यवाद दैत छिअनि जे हमरा सबहक बीच एकटा झॉंपल विषएपर लेखनीक प्रयोग कएलनि। आगाँ सेहो हम आशा करैत धन्यवाद ज्ञापन करैत छी।

पोथिक नाम- मैथिली चित्रकथा

प्रकाशन वर्ष- २००९

लेखिका- प्रीति ठाकुर

प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन, राजेन्द्र नगर- दिल्ली।

दाम- १००टाका मात्र

पोथी प्राप्ति स्थान- पल्लवी डिस्ट्रीब्यूटर्स वार्ड न. ६ निर्मली, सुपौल, मोवाइल न. ०९५७२४५०४०५

९.किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)

साहित्य समाजक दर्पण होइत अछि आ साहित्यकार ओइ दर्पणक शिल्पी। शिल्प जतेक विलक्षण हएत छाया ततेक साफ। कोनो साहित्यक अध्ययनसँ रचनाकारक मनोवृत्ति स्पष्ट होइत अछि। मैथिली साहित्यक संग ई विडंवना रहल जे ऐमे बाल साहित्य, अर्थनीति आ आत्मकथाक विरल लेखन भेल। मात्र किछु साहित्यकार ऐ विधामे अपन लेखनीक प्रयोग कएलनि। ओइ विरल साहित्यकारक गुच्छमे एकटा नाम अछि- डॉ. शेफालिका वर्मा।

शेफालिका जीक रचना सभमे पारदर्शिता रहल ओ जे हृदेसँ सोचैत छथि ओकरा अपन कृति उतारि दैत छथि। हुनक रचनामे अन्र्तमनक ध्वनि स्पष्ट सुनल जा सकैत अछि। कतौ अन्र्तद्वन्द्व नै, कतौ पूर्वाग्रह नै। हुनक किछु कृति- विप्रलब्धा, अर्थयुग स्मृति रेखा, यायावरी आ भावांजलि पढ़लाक वाद हुनक जीवनक वास्तविक रूपक दर्शन कएल जा सकैत अछि। अपन रचना सभकेँ एकसूत्रमे सहेजि कऽ अपन आत्मकथा लिखलन्हि ''किस्त-किस्त जीवन'' अप्रत्याशित मुदा, प्रासंगिक नाम। जीवनक कतेक रूप होइत अछि, बाल, वयस्क, प्रौढ़.... सुख-दुख, काम निष्काम यएह थिक ऐ रचनाक सार। अपन करूणामयी जीवनक बून-बूनकेँ ऑंजुरमे एकत्रित कऽ आत्मकथा लिखलन्हि।

आमुखसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओ नित डायरी लिखैत छथि तँए अपन किस्त-किस्तक अनुभवकेँ वटोरि लेलनि। बाल-कालक गणित विषएक समस्या हो वा संगीत शिक्षक पंडित वाजपेयी जीक व्यवहारक मूक विश्लेषण सभ बिन्दुपर पोथिक फुजल पन्ना जकाँ स्पष्ट प्रस्तुति। युवती वएसमे प्रवेश करैत काल कोनो अनचिनहार युवकक नजरि देख कऽ अपन ब्रह्मास्त्रक (थूक फेकवाक) प्रयोग करैत छलीह। ओना ऐ अस्त्रक शिकार विवाहसँ पूर्व ललन बाबू सेहो भेल छलाह, जिनका संग ओ दाम्पत्य सूत्रमे बान्हल गेलीह। नव प्रकारक रक्षा सूत्रक विषए मे पढ़ि अकचका गेलहुँ, नीक नै लागल मुदा, ऐसँ रचनाक प्रासंगिकतापर प्रश्नचिन्ह नै लगाओल जा सकैत अछि।

प्रवेशिका उत्तीर्ण कएलाक पश्चात शेफालिका जी पढ़ए नै चाहैत छलीह। ललन बाबूक विशेष प्रेरणासँ जहिना- तहिना स्नातक धरि शिक्षा ग्रहण कएलनि। तत्पश्चात् घर-गृहस्थी आ साहित्य साधनामे लीन भऽ गेली। साहित्यमे विशेष योगदानक लेल दरभंगामे डॉ. दिनराजी शाण्डिल्य द्वारा ''विद्या वारिधी'' सम्मानसँ सम्मानित कएल गेली। ऐ सम्मानकेँ पावि भाव-विभोर भऽ मिथिला मिहिरकेँ अपन मनोदशा पठौलन्हि। मिथिला मिहिर द्वारा हुनक हस्त-लिपिकेँ यथावत् प्रकाशित कए देल गेल। मिथिला मिहिरक ''होली विशेषांक''मे हिनक रचनाक रचनाकारक नाम देल गेल ''दिन राजी डॉ शेफालिका वर्मा।'' ऐ मजाकसँ शेफालिका जी कॉंपि गेली आ १८ वर्खक मौनव्रतकेँ तोड़ि पुन: शिक्षा ग्रहण करबाक लेल आतुर भऽ गेली। परिणाम सोझाँ अछि- एम.ए., पी.एच.डी प्राध्यापक डॉ. शेफालिका वर्मा। अपन सम्पूर्ण जीवनमे प्रेमकेँ जीवाक आधार मानि जीवि रहल छथि- रजनी जी। आरसी बाबूक शेफालिका- कोना रजनीसँ शेफाली बनि गेली ऐ रचनामे झॉंपल अछि। प्रेमक सभ रूपकेँ अर्न्तमनसँ स्वीकार करब हिनक जीवन दर्शन अछि। राजनीतिसँ दूर रहलीह, जखन की किछु प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ हिनका लग नतमस्तक रहैत छलाह। डार्विनवार ''उपार्जित लक्षणक वंशावलि''क आधारपर एना संभव भेल। पिता स्व. मल्लिक साहित्कार आ सरल व्यक्तित्व छलाह। हिनक पति ललन बाबू साहित्यकार तँ नै छलाह परंच शेफालिका जीक साहित्यक सभसँ पैघ पाठक। अपन पति द्वारा निरंतर पग-पगपर संग देबाक कारण हिनका जीवनसँ कोनो शिकाइत नै अछि। ''जीवनक डोरि फूजि उड़ल व्योममे कातर प्राण मुदा जीवै छी।''

आब प्रश्न उठैत अछि जे हुनक आत्मकथासँ समाजकेँ की भेटत वा की भेटल? कोनो व्यक्ति ओ महान हो वा नै हो ओकर जीवनसँ शिक्षा लेल जा सकैत अछि। शेफालिका जी तँ मर्मज्ञ छथि जीवनक मर्मज्ञ, साहित्यक मर्मज्ञ आ सिनेहक मर्मज्ञ। पुरूष प्रधान समाजमे नारीक एहेन दृढ़ता देख वर्तमान कालक बालाकेँ अवश्य नव दिशा भेटत।

हुनक जीवन दर्शनकेँ कण-कणमे समा लेलहुँ, भाषा मनोरम आ प्रवाहमयी अछि।

एतेक अविराम कृति रहलाक पश्चात् ऐमे किछु त्रुटिक दर्शन सेहो भेल। शेफालिका जी अपन जीवनक कचोटकेँ नुका लेली। ओ फूजल मानसिक प्रवृतिक महिला छथि, चरित्र उत्तम मुदा, पारदर्शी। सहज अछि जे ऐसँ हुनका किछु सामाजिक उपहासक अनुभव अवश्य भेल हेतनि। साहित्यकारक रूपमे उपेक्षाक शिकार अवश्य भेल हेती तकर मौन व्याख्या तँ कएल जा सकैत छल मुदा, नै कएल गेल। भऽ सकैत अछि ओ मैथिल समाजक मध्य कोनो अनुत्तरित प्रश्न नै उठबए चाहैत छथि। सम्पूर्ण सार अछि जे रचना सारगर्भित ओ सोहनगर लागल। शेष.....अशेष.......।

पोथीक नाम- किस्त-किस्त जीवन

रचनाकार- डॉ. शेफालिका वर्मा

प्रकाशक- शेखर प्रकाशन, इन्द्रपुरी पटना-१४

मूल्य- ३००टाका मात्र

प्रकाशन वर्ष- २००८

कुल पृष्ठ- ३२०

शमीक्षक- शिव कुमार झा ‘‘टिल्लू’’

जमशेदपुर

१०.समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)

इसा संवत् सन २००८सँ लऽ कऽ वर्तमान कालकेँ अद्यतन मैथिली साहित्यिक आन्दोलनक क्रांति-काल कहल जा सकैत अछि। ऐ अवधिमे रंग-विरंगक साहित्य सरितासँ सजल पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन प्रारंभ भेल अछि। जइमे प्रमुख अछि- विदेह ई पत्रिका, विदेह-सदेह, मिथिला दर्शन (पुनर्प्रकाशन), पुर्वोत्तर मैथिल, झारखंडक सनेस, नवारम्भ, मिथिला सृजन आदि-आदि। ऐ पत्र-पत्रिकाक प्रयाससँ नव-नव साहित्यकारक प्रवेश मैथिली साहित्यमे भेल। जइमे सँ किछु साहित्यकार तँ अपन रचनासँ मिथिलाक मानस पटलपर एहेन स्थान बना लेलनि जइसँ हुनका जौं काल पुरूष माने मेन ऑफ टाइम कहल जाए तँ कोनो अतिशयोक्ति नै हएत। ऐ रचनाकारक भीड़मे एकटा साम्यवादी आ बहिर्मुखी प्रतिभासँ सम्पन्न रचनाकार छथि- **श्री जगदीश प्रसाद मण्डल।** हिनक व्यक्तिगत जीवन कोनो रूपक हो मुदा साहित्यिक सृजनशीलतासँ हिनका बहिर्मुखी व्यक्तित्वक व्यक्ति कहल जा सकैत अछि।

हिनक पहिल रचना 'विसाँढ़' आ 'भैंटक लावा' घर-बाहरमे आ दोसर रचना 'चुनवाली' मिथिला दर्शनमे प्रकाशित होइते मैथिली पत्रिकाक संपादक मण्डलक संग-संग प्रबुद्ध पाठकक मध्य हड़होरि मचि गेल। 'पहिने आउ आ पहिने पाउ'क आधारपर विदेहक संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुर हिनक रचना सभकेँ अपन पत्रिकामे छपाबए लेल हथिया लेलन्हि। ऐ प्रकारक शब्दक प्रयोग करबाक हमर तात्पर्य अछि जे जगदीश जी कोनो नव रचनाकार नै छथि, तिरसठि बर्खक माजल साहित्यकार छथि मुदा हिनक रचनाक प्रदर्शन नै भेल छल। समग्र रचनासंसार हिनक पुत्र **उमेश मण्डल** जीक कम्प्यूटरमे ओझराएल छल किएक तँ छपयवाक लेल कैंचा कतएसँ अएत?

आदरणीय संपादक गजेन्द्र ठाकुरक विशेष अनुग्रह आ श्रुति प्रकाशनक अधिष्ठाता श्री नागेन्द्र कुमार झा आ श्रीमती नीतू कुमारी जीक कृपासँ हिनक एकसँ बढ़ि कऽ एक रचना हथिया नक्षत्रक गनगुआरि जकाँ पाठकक आगाँ आबि

रहल अछि। ऐ पुष्पांजलि महक एकटा फूल लऽ हम पाठकक सोझा राखि रहल छी- 'मिथिलाक बेटी।' मिथिलाक बेटी एकटा नाटकक नाम अछि। शीर्षकसँ स्पष्ट होइत अछि जे हमरा सभक समाजक वनिताक आस्तित्व आ अस्मितासँ ऐ रचनाक संबंध अछि। मुदा....... पोथीक गर्भावलोकनक वाद हमर मोनसँ ई भ्रम भागि गेल। ऐमे समाजक विषमताक स्पष्ट दर्शनक अनुभूति भेल। जगदीश जी साम्यवादी विचार धाराक सम्पोषक छथि, तँए समाजमे पसरल व्याधिपर श्रमक विजय, श्रमजीवीक विजय, दृष्टिकोणक विजय, इमानक विजय, सम्यक भौतिकताक विजय, वौद्धिक आ चेतनाक विजय देखयवाक प्रयास कएलनि।

पाँच अंकक ऐ नाट्कमे नौ गोट पुरूष पात्र आ पाँचटा नारी पात्र छथि। रचनाक केन्द्र बिन्दु छथि पैंतालीस वर्खक विकट पुरूष पात्र- बाबू कर्मनाथ- एकटा प्रशासनिक अधिकारी। विकट ऐ दुआरे किएक तँ भ्रष्ट समाजक मध्य कर्तव्यपरायण इमानदार व्यक्ति आ बाबू ऐ दुआरे किएक तँ अधिकारी छथि। स्नातक उर्त्तीर्ण कएलाक बाद हिनक पिता सोमनाथ हिनक विवाह एकटा भौतिकवादी परिवारमे पक्का कए लेलनि। द्रव्य, धन धान्य आ बीस विघा जमीनक जुआरिमे। मुदा ओ कर्मनाथ जीक मौन समर्थनक आशमे बैसल छलाह। ऐ मध्य जेठ मासक गरमीमे एकटा कायाहीन आ निर्धन व्यक्ति हिनक दलानपर अएलनि। व्यथित आ थाकल अपन कन्याक हेतु वर तकवाक क्रममे सोमनाथक दलानपर अचेत भऽ गेलाह। सोमनाथसँ हुनक व्यथा देखल गेल। ओइ गरीबक कन्यासँ वियाह करबाक लेल आतुर भऽ गेलाह। कालान्तरमे ई वियाह सम्पन्न तँ भऽ गेल मुदा, परिवारमे सामंजस्य नै रहि सकल। पिता सोमनाथ आ दू भाँइ क्रमशः नूनू आ लालबाबू हिनक निर्णएसँ दुखी भऽ गेलनि, किएक तँ कुवेरक भंडारक आशपर कर्मनाथ जी नोन छीटि देलनि। प्रतिभाशाली छात्र कर्मनाथ प्रशासनिक अधिकारी बनि गेलाह परंच हिनक इमान भौतिकतापर भारी पड़ि गेल जइसँ नव-नव समस्या उत्पन्न भऽ गेल। पत्नी चमेली, पुत्र फुलेसर आ पुत्री द्वय चम्पा आ जूही- ई अछि हिनक परिवार। भावक नै सर आ विश्वासक शतदलक संग जीवन क्रम चलैत रहल। पिता सोमनाथ अदूर्दर्शी व्यक्ति छलाह, जइसँ अन्य दुनू पुत्र अवण्ड भऽ गेलनि। कर्महीन नूनू आ लालबाबू जथा बेचि-बेचि कए कर्मनाथक बरावरि करबाक प्रयास कऽ रहल छलथि। पितासँ महिमा मंडित होएवाक कारणें दुनूक

जीवन नारकीय भऽ गेल। परिवारक दशा ओ दिशाकेँ देख कऽ कर्मनाथक माए आशाक आश टूटि रहल छल। कर्मनाथ जीक पितृ परिवारमे मात्र हिनक माएक व्यक्तित्व सोझराएल छल। किएक नै रहत, सभ माएक इच्छा होइत अछि हुनक पुत्रक नाओंसँ समाज गौरवान्वित होअए।

जगदीश जी ऐ नाट्य कथाक नायकक स्पष्ट उद्घोषण नै कएलनि मुदा, हमर मतसँ ऐ नाटकक नायक छथि विकास, एकटा सेवा निवृत्त शिक्षक। आदर्श आ सहज विचार धाराक व्यक्ति श्री विकास अपन समाजक चितंक छथि। मिथिलाक गाम एखनो विकासक धारामे पाछाँ पड़ल अछि। शिक्षाक अभाव, सामाजिक समरसताक अभाव आ साधनक अभावक कारण विकास सन प्रबुद्ध व्यक्तिक ग्राम्य समाजमे आवश्यकता अछि। गामक प्राय: नव आ अधवयस पीढ़ी हुनक छात्र रहलनि अत: हुनक सलाहकेँ मानैत छथि। श्रीचन किसान हाटपर प्रचार करबाक लेल आएल शंकर बीज कंपनीक प्रलोभनमे आबि टमाटरक विदेशी बीआ खरीद लैत छथि। टमाटर उपजाक कोन कथा जे लत्तिओ गलि गेल। श्रीचन संताप आ क्रोधक मारे आकुल छलाह। विकास जी हुनका सान्त्वना दैत कहलनि जे प्रचारक चकाचौंधमे नै अएवाक चाही अपन स्वदेशी वस्तु ओइ विदेशी समानसँ सोहनगर अछि। विकास जीक प्रयासँ कर्मनाथक पुत्री चम्पाक वियाह रामविलास मिस्त्रीक पुत्र मदनसँ तँए कएल गेल। ऐ वियाहकेँ केन्द्र बिन्दु मानि ऐ पोथीक रचना कएल गेल अछि।

आब प्रश्न उठैत अछि जे ऐ पोथीमे नव की भेटल? मिथिलाक बेटी नाट्क 'कर्म प्रधान विश्व करि राखा' सिद्धान्तक आधारपर लिखल गेल अछि। एकटा कर्मठ आ इमानदार व्यक्तिकेँ समाजमे की-की सहय पड़ैत अछि, ओइ परिपेक्ष्यक मार्मिक चित्रण कएल गेल अछि। कथाक मूलमे कर्मनाथक वियाह क्रममे आएल एकटा गरीब (चमेलीक पिता) व्यक्तिक मनोदशाक प्रस्तुति नीक अछि। ओ व्यक्ति गरीब छथि मुदा 'चार्वाक दर्शन'क पालक। 'पेटमे खढ़ नै सिंहमे तेल' जेवीमे कैंचा नै मुदा नौ हन्नाक बटुआ जइमे भोगक वस्तु छलिया सुपारी पान आ तमाकू। हमरा सबहक गाममे ऐना होइत अछि, भोजन नै मुदा, पान अवश्य। पग-पग पोखरि माछ मखान... मधुर बोल मुस्की मुख पान... नेना पढ़लक, नै

पता, कनियाकेँ पथ्य भेटल नै जनै छी, बेटीक लेल दूध अछि... नै। मुदा! पान अतिआवश्यक, हाथी मरि गेल, छान आ पग्घा लऽ कऽ बौआ रहल छी। कर्मनाथक अपन पत्नी चमेलीक संग वार्तालापमे 'खट्टर ककाक तरंग'क दर्शन होइत अछि। गाममे प्रचलित लोकोक्तिक हास्य मुदा, सत्य प्रस्तुति।

कर्मनाथ जीक पुत्रक नाम फुलेसर प्रशासनिक अधिकारी भऽ कऽ एहेन नाम.....। ऐसँ हुनक गामक प्रति सिनेहक झाँकी भेटैत अछि। गाममे एहने नाम सभ होइत अछि। अपन दुनू पुत्री आ पुत्रकेँ छायावादी रूपमे जीवनक शिक्षा दैत छथि..... कर्मनाथ। एना करब आवश्यक किए तँ ऐसँ जिज्ञासा बढ़ैत अछि। राम विलास सेवा निवृत मिस्त्री छथि। वाल्यकाल साधनक अभावमे, युवावस्था संघर्षमे विता कऽ भौतिक साधन प्राप्त कएलनि। जीवनक अंतिम पड़ावमे माधुरीसँ माने अपन पत्नीसँ अपन जीवन-यात्राक व्याख्यान करैत छथि, आश्चर्यमे पड़ि गेलहुँ। जिनका संग चालीस बर्खक यात्रा कएलनि ओ हिनक जीवन दर्शन नै जनैत छलीह। हमरा सबहक समाजमे ऐ प्रकारक घटना होइते अछि। गरीव नेनपनक बाद सोझे प्रोढ़ भऽ जाइत छथि। जे कर्मवादी छथि हुनक अंतिम अवस्था सुखमय नै तँ......। अपन कर्मक नावकेँ कलकत्तामे मजवुत कऽ सोझे गाम आबि जाइत छथि। मातृभूमिक प्रति सिनेह, गाममे गैरेज खोलवाक योजना अछि। चौघारा घर बनाएव, दलान अवश्य रहत, किएक तँ दलान समाजक मर्यादा थिक गामक जीवन शहरसँ सुखमयी अछि। ऐ पोथीमे पलायनवादक विरोध कएल गेल अछि।

कर्मनाथक चरित्र पंडित गोविन्द झा लिखित 'वसात' नाटकक नायक कृष्णकान्तसँ मिलैत अछि। राम विलास जीवन संघर्षमे विजयी भेलाह तँए पुत्रक वियाह आदर्श करताह। विकास जीक चरित्र नाटकक लेखक जगदीश बाबूसँ मिलैत अछि। साम्यवादी, ग्रामीण सभ्यताक दिग्दर्शक। ऐ पोथीमे जातिवादी व्यवस्थाक विरोध कएल गेल अछि। आन गामक स्वजातीयकेँ भोजमे निमंत्रण देवासँ अनिवार्य अछि अपन गामक सभ जातिकेँ आमंत्रित करब। किएक तँ वेर-कुवेरमे पॉजरि लागल लोक काज दैत छथि, चाहे ओ कोनो जातिक हो।

ऐ पोथीमे जीवनक सभ रूपक व्यापक दर्शन कएल गेल अछि। कुलीन व्यक्ति जनिक परिवार नीचाँ मुँहे जा रहल अछि ओइ परिवारक कन्याक वियाह उर्ध्वमुखी साधारण परिवारक पुत्र (जे आब सम्पन्न छथि) हुनकासँ भऽ सकैत अछि। ऐ पोथीमे अन्हारपर इजोतक विजय देखाओल गेल अछि। भौतिकतापर बौद्धिकता आ सम्यक जीवनक जीत ऐ पोथीक केन्द्र बिन्दुमे समेटल अछि पुत्रक वियाहमे तिलक लेवासँ बेसी अछि कुलीन कन्याक चयन। सम्पूर्ण पोथीमे देशज शब्दक प्रयोग कएल गेल अछि। पोथीक अंतिम पृष्ठपर श्री गजेन्द्र ठाकुरक कथन मैथिली साहित्यक इतिहास **(जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व आ जगदीश प्रसाद मंडलसँ)** पढ़लहुँ पहिने तँ अनसोहाँत लागल मुदा पोथीक अध्ययन कएलाक पश्चात् हमरा सहज लागल। भाषा अत्यन्त सामान्य मुदा रस, अलंकार आ छंदसँ परिपूर्ण अछि। कलात्मक शैलीमे जगदीश जी अंक-अंकमे अपन दर्शनकेँ सहेजि लेने छथि। हिनक ई रचना कोनो विशेष कथाकार वा नाटक कारसँ प्रभावित नै। हिनक रचनामे राजकमल जी, पंडित गोविन्द झा, हरिमोहन बाबू, धूमकेतु, गुलेरी जी, लक्ष्मीनारायण मिश्र, ललन ठाकुर सन रचनाकारक शैलीक मिश्रित दर्शन होइत अछि। मिथिलाक बेटी अर्थनीतिसँ प्रभावित अछि मुदा, सम्यक अर्थनीतिसँ। अर्थपर मानवताक विजय, जगदीश जीक विश्वास नीक लागल।

जेना कोनो व्यक्ति पूर्ण नै भऽ सकैत अछि तहिना कोनो रचनाक संग होइत अछि। 'मिथिलाक बेटी'पोथीमे किछु त्रुटिक दर्शन सेहो भेल। प्रथमत: ऐ पोथीक शीर्षक अप्रासंगिक लागल। बेटी तँ ऐ दर्शनक माध्यम मात्र अछि, स्त्रोत नै। ऐमे मानवीयताक जीत देखाओल गेल अछि बेटीक जीवन तँ घटना मात्र थिक।

ऐ नाटकक भाषा सरल मुदा, शनै: शनै: गमनीय अछि तँए मंचन करबाक योग्य नै मुदा एकर कलात्मक मंचन कएल जा कएल जा सकैत अछि।

निष्कर्षत: **जगदीश प्रसाद मण्डलजी** हमरा सबहक बीच एकटा नव जीवनक आयाम लऽ कए आएल छथि। बहुरंगी जीवनक आयाम आ सकारात्मक सोचक आयाम। मानवीय मूल्य एखनो धरि जीवित अछि। ऐ तरहक घटना कठिन अछि मुदा असंभव नै। विश्वास आ कर्मक संग जीवन जीवाक प्रयत्न करबाक चाही।

ऐ पोथीक शब्द-शब्दमे झंकार अछि। भाषा प्रवाहमयी लागल। प्रकाशन दलक प्रयास नीक, शब्द संयोजन आ संपादन अति उत्तम। धन्यवाद।

पोथीक नाम- मिथिलाक बेटी

रचनाकार- जगदीश प्रसाद मण्डल

प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन राजेन्द्र नगर दिल्ली।

मूल्य- १६० टाका मात्र।

प्रकाशन वर्ष- सन् २००९

पोथी पाप्तिक स्थान- पल्लवी डिस्ट्रीब्यूटर्स, वार्ड न.६, निर्मली, सुपौल, मोवाइल

न. ९५७२४५०४०५

११.मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान

जखन-जखन मैथिली भाषा साहित्यमे नाट्य विधाक चर्च होइत अछि तँ हठात् पंडित जीवन झासँ लऽ कऽ झिझिरकोना आ तालमुट्ठी सन नाटकक नाटककार अरविन्द कुमार अक्कू जीक विवेचन स्वभाविक भऽ जाइछ। ऐ एक साए छ: बरखक नाट्य रचनमे बहुत रास नाटककार विविध शैलीक साहित्यिक नाटकक संग-संग लोकप्रियताक लेल चलन्त आ ओछ नाटक सेहो लिखलनि। किछु रचनाकार तँ नाटककारेक रूपैँ वेस चर्चित छथि संग-संग हुनका सभकेँ पुरस्कृत सेहो कएल गेल अछि। उदाहरणस्वरूप श्री महेन्द्र मलंगिया मैथिली साहित्यक प्रतिष्ठित सम्मान प्रबोध सम्मानसँ सम्मानित कएल गेल छथि। मलंगिया जी बहुत रास नाटक लिखलनि- लक्ष्मण रेखा : खण्डित, जुआएल कनकनी, एक कमल नोरमे, ओकरा ऑगनक बारहमासा, कमलाकातक राम, लक्ष्मण ओ सीता आर काठक लोक। ऐ नाटक सभमे 'एक कमल नोरमे' साहित्यक समग्र बिन्दुकेँ विम्बित करएबला नीक नाटक मानल जाइत अछि। मुदा 'काठक लोक' पढ़लासँ पाठक स्वयं निर्णय सुनाबथि जे कतए धरि एकरा 'मैथिली नाटक' मानल जाए। बिम्ब लोकगाथा आ विवेचन मैथिलीसँ बेसी हिन्दीमे। ओना सभ साहित्यिक कृतिमे आन भाषाक प्रयोग ठाम-ठाम कएल जाइत अछि मुदा मात्र पात्रक दशा आ परिस्थितिमे तारतम्य स्थापित करबाक लेल। मलंगियाजी ऐ पोथीमे हिन्दीक प्रयोग कोन रूपैँ कएने छथि ई गप्प झारखंडक अंत:स्थ कक्षाक (मैथिली भाषी जौ उपलब्ध होथि) छात्र-छात्रासँ पुछल जा सकैत अछि किएक तँ 'काठक लोक' झारखण्ड अधिविद्य परिषद्क मैथिली पाठयक्रममे सम्मिलित अछि।

मैथिलीक संग दुर्भाग्य मानल जाए वा विडम्वना किछु कथाकथित साहित्यकार आ समीक्षकक दलपुंज भाषापर अपन अधिकार चमौकनि जकाँ जमौने छथि। 'अहाँक सोहर हम गाएब आ हमर डहकन अहाँ बिदबिदाउ' ऐ परिपेक्ष्यमे किछु प्रतिभा झाँपले रहि गेल, कतौ कोनो चर्च नै।

ऐ बज्र पातक टटका शिकार छथि आधुनिक पिरहीक सनसनाइत युगान्कारी नाटककार- 'श्री आनंद कुमार झा' आनंद जीक एखन धरि पॉच गोट नाटक प्रकाशित भेल अछि 'टाकाक मोल (२०००), 'कलह (२००१), 'बदलैत समाज (२००२), धधाइत नवकी कनियाँक लहास (२००३) आ हठात् परिवर्त्तन २००५ई.मे। ऐ नाटकक संग-संग आनंदजीक अप्रकाशित नाटकक गणना दू अंक धरि पहुँचि गेल अछि।

आनंद जीक जन्म १९७७ई.मे मिथिलाक सांस्कृतिक सेहंतित भूखण्ड 'मधुबनी जिला'क मेंहथ गाममे भेल। जौं समस्तीपुर खगड़िया आ बेगूसराय जिलाक लाल रहितथि तँ उपेक्षाक दंश स्वाभाविक छल मुदा ठामक वासी उपेक्षित भेलाह कनेक संत्रास जकाँ लगैछ। गाम-गामसँ लऽ कऽ कोलकाता शहर धरि मंचित ऐ नाटकक कोनो समीक्षा नै भेल, ई सभ मात्र मैथिली भाषामे संभव छैक। जौं बिम्बक उपयोगिताकेँ केन्द्र बिन्दु मानल जाए तँ मैथिली साहित्यक प्रवीण नाटक कारक समूहमे आनंद जीक स्थान निश्चित अछि।

टाटाक मोल : आर्य भूमिक एकटा पैघ व्याधि काटर प्रथाक दु:स्थितिपर केन्द्रित ऐ नाटकमे मिथिला संस्कृतिक कोढ़िक चित्रण नीक ढंगसँ कएल गेल अछि। कन्याक पिता नाओं गरीवनाथ संग-संग दरिद्र सेहो। अपन धर्मपत्नी सुमित्राक आश पूर्ण करबाक लेल 'पुत्र कामनार्थ' पॉच गोट कन्याकेँ जन्म देलनि। पहिल बेटीक विवाहमे डॉड़ टुटि गेलनि सभटा खेत बिका गेलनि। दोसर बेटीक कन्यादानक लेल आतुर छथि मात्र बारह कट्ठा जमीन बॉचल छन्हि। बेटी प्रभा कॉलेजमे पढ़ैत छथि, विवाह अपना मोने नै करए चाहैत छथि- मात्र समाजक हेय दृष्टिसँ बचवाक लेल बेटीक विआह ऐ शुद्धमे करबाक लेल परेशान छथि। हमरा सबहक समाजक कतेक कलुष रूप अछि अप्पन टेटर नै देख कऽ लोक सभ दोसरक फुसरीपर काग-दृष्टि लगौने रहैत छथि। कुमारि बेटी छन्हि गरीब झाक घरमे आ परेशान छथि समाजक लोक। ऐ लेल नै जे मिथिलाक बेटीक उद्धार कएल जाए मात्र बारह कट्ठा जमीन लिखएबाक लोभमे। प्रभा अपन बहिनक देअर प्रभाकरसँ सिनेह करैत छथि लेकिन आंडबरधर्मी समाज ऐ सिनेहक मंजूरी नै देत तँए चुप्प।

गरीव झा दलाल काकासँ संपर्क करैत छथि। जेहन नाओ तेहने कार्य। हुनक चेला कक्कासँ बेसी पारखी। दुनूक जोड़ी शुम्भ निसुम्भ जकाँ दुष्ट आ धृष्ठतासँ भरल। हर्षदमेहताक दलाली हिनका लग ओछ पड़ि जाइत। बालकक पिता लीलाम्बर बाबू वास्तवमे लीलाधारी छथि। भातिज सभसँ कम कैंचा पुत्रक विआहमे कोना लेतथि तँए पचहत्तरि हजारसँ कम टाका नै चाही। दलाल काकाक मोहिनी मंत्रक जादूमे आबि पैंसठ हजारमे विआह करबाक निर्णय सुनौलनि। शर्त्त छन्हि जे समाजमे पचहत्तरि हजारक उद्घोष कएल जाए। दलाल काकाक कलिजुगी उगना ऐ उद्घोषणक लाभ लेबाक प्रयासमे सफल भेलनि।

दलालीक दस हजार कमीशन दुनू चेला गुरूक पेटमे। गरीब झा अपन वॉचल जमीन ५० हजारमे बेचि लेलनि। मित्र गुणानंद जीसँ दस हजार टाकाक मदति भेटलनि, शेष प्रश्न ओझराएल पंद्रह हजार आब कोना हएत? येन केन प्रकारेन वरियाती दलान लागल। फेर धमगिज्जड़ि। माथक पाग खसि पड़लनि मुदा वरियाती आपिस। अंतमे प्रभाकरक संग प्रभाक विआह होइत अछि। लीलांवर जी काटरक टाका पचास हजार कन्यागतकेँ आपिस कएलनि। मुदा नाटककार ई स्पष्ट नै कऽ सकलनि जे दलाल काका दलालीक दस हजार कन्यागतकेँ देलनि वा नै। कथानकक किछु तथ्य वास्तविकता नै भऽ कऽ कल्पना मात्र लागल। गरीब नाथक बेटी प्रभा कॉलेजमे पढ़ैत छथि आ छोट मांगल-चांगल भाए महीस चरबैत छन्हि। ओना तँ पुत्रक आकांक्षामे पाँच गोट पुत्रीक जन्म देमएबला माए-बापक अर्थव्यवस्था अव्यवस्थित हएव स्वाभाविक अछि। परंच मैथिल संस्कृतिक ग्रामीण व्यवस्थामे रहनिहार माता-पिताक जीवनमे संतानक रूपैं पुत्रसँ पुत्रीक बेसी महत्व देव कल्पना मात्र छैक, वास्तवमे तँ बेटी जन्महिसँ आनक धरोहरि मानल जाइत अछि तँए बेटा महीस चराबथि आ बेटी कॉलेजमे पढ़तीह, आश्चर्य जनक लागल।

कथानकक बीच-बीचमे अंग्रेजी शब्दक प्रयोग कऽ नाटककार आधुनिकता लेपन करबाक प्रयास कएलनि ई उचित अछि वा नै, पाठकपर छोड़ि देबाक चाही। एकटा अनसोहॉत अवश्य लागल जे मैथिलीमे 'चुकल' शब्दक प्रयोग कहिया धरि रहत। निष्कर्षत: ई नाटक मंचनक योग्य अछि।

कलह : कलह आनंदजी लिखित दोसर नाटक थिक। समाजमे जीवन्त धटना सभकेँ एक सूत्रमे जोड़ि कऽ ऐ नाटकक सृजन कएल गेल। आकाश एकटा बेरोजगार नौजवान छथि। टाकाक लोभमे पिता सुरेश्वर हिनक विआह करा दैत छथिन्ह। आकाश सुरेश्वर बाबूक पहिल पत्नीक संतान छथि तँए विमाता सुमित्राक दृष्टिमे हिनक कोनो स्थान नै। सुमित्रा तँ अपन कोखिसँ जनमल पुत्र राजीव आ ओकर कनियाँ कोमलक लेल ज्येष्ठ पुत्रक संग यातनाक सभटा बान्ह लाँधि देलनि। प्रौढ़ पिता मूक पिरस्थितिक मारल मात्र दर्शक बनि कऽ रहि गेलाह। कालक मारिसँ भटकैत-भटकैत दुनू परानीक निर्मम अंत होइत अछि। एकटा अबोध नेनाक जन्म भेल जे आकाशक अंतरंग मित्र योगेशक कोरमे कथाक अंत धरि.....।

नाटककार ऐ नाटकक रचना भऽ सकैत अछि जे कथानकमे संत्रास भरबाक संग-संग दर्शकक मध्य लोकप्रिय बनएवाक लेल केने होथि मुदा ऐ सभसँ नाटकक प्रासंगिकतापर प्रश्न चिन्ह नै लगाओल जा सकैत अछि। कतौ-कतौ बिम्ब विश्लेषण चलंत आ हिन्दी भाषाक व्यवसायिक चलचित्र जकाँ लागल मुदा मैथिलीमे नवल प्रयोगकेँ किओ झाँपि नै सकैत छथि, जतए-जतए ऐ नाटकक चित्रण होएत अवश्य छाप छोड़त।

बदलैत समाज : बदलैत समाज नाटकक आरंभ एकटा ब्लड कैंसर पीड़ित बालकक अपन पत्नीक संग वार्तालापक संग होइत अछि।

कर्जसँ मुक्तिक लेल घूरन जी अपन बीमार पुत्रक विआह करा दैत छथि। हुनका ओना बूझल नै छलनि जे पुत्र अवधेश ब्लड-कैंसरसँ पीड़ित अछि। भजेन्द्र मुखियाक पुत्र दीपक अवधेशक बाल संगी छथि। ओ पहिनेसँ जनैत छलाह जे अवधेशक मृत्युक दिवस नजदीक छन्हि। तथापि ओ खुलि कऽ नै बजलनि किएक तँ घूरन बाबू स्वयं बूढ़ लोक छथि। एकटा पिता अपन कान्हपर पुत्रक लाशक कल्पना मात्रसँ सिहरि सकैत छथि, वास्तविकता.........।।

विविध घटनाक्रममे अवधेशक मृत्युक भऽ गेलनि। समाज हुनक विधवा शोभापर चरित्रदोष सेहो लगौलक। समाज की जै अवलापर ओकर सासुक विश्वास नै हुअए ओकरापर आन के विश्वास करत। नाटकक अंतमे सबहक भ्रम टुटैत अछि जखन शोभा दीपककेँ 'भैया' कहि कऽ अश्रुलाप करैत छथि। अंतमे विधवा शोभाक एकटा सच्चरित्र युवक वीजेन्द्रसँ पुर्नविवाहक कल्पना कएल गेल। ओना तँ ऐ नाटकमे जात-पातिक कोनो चर्च नै मुदा प्रसंगसँ स्पष्ट होइत अछि जे सवर्ण परिवारक पृष्ठभूमिमे नाटक केन्द्रित अछि। नाटककारक ई कल्पना नीक लागल जे सवर्ण घरक विधवा युवतीक पुनर्विवाह भऽ सकैत अछि। नाटकक संवादमे ठाम-ठाम अलंकार आ लोकोक्तिक लेपन नीक लागल। 'सम्भावनाक आधारपर मनुष्य कल्पना करैत अछि। मुदा प्रकृतिक शास्वत नियमकेँ किओ नै बदलि सकैत अछि' ऐ संवादक माध्यमसँ अवधेश अपन मृत्युक संकेतकेँ बूझि रहल छथि। हुनक दोसर संवादमे- 'हम मृत्युसँ भयभीत नै छी। भय अछि ओइ निस्सहाय अवला नारीक असीम दु:ख, पीड़ा आ वेदनासँ। भय अछि अनजानमे हमरासँ भेल गलतीसँ।' श्रृंगारक प्रवल लालसा रहितहुँ परिस्थिति मनुक्खकेँ वैरागी बना दैछ। जनतंत्रक कुटिल व्यवस्थापर सेहो ऐ नाटकमे कटाक्ष कएल गेल। भजेन्द्रजी सन कुटिल गामक मुखिया छथि तँ विपक्ष हुनकोसँ बेसी कुटिल। तँए ने फुराइतो छन्हि हुनका 'ओ बनियाँ बुड़िवक होइत अछि जे पलड़ापर बटखड़ा रखलासँ पहिने समान चढ़ा दैत अछि।''

आनंदजीक चारिम नाटक *धधाइत नवकी कनियाँक लहास :* कोनो काटक प्रथाक नाटक नै। मात्र किछु गहनाक खातिर शिखाक आत्महत्याक प्रयास अजीव कहल जा सकैछ।

हठात् परिवर्त्तन : देशभक्ति मूलक नाटक थिक।

निष्कर्षत: ई कहल जा सकैत छथि जे आनंद जीक नाटक शैलीमे गोविन्द झाक हास्य समागम, ईशनाथ झाक अलंकार, जगदीश प्रसाद मण्डल जीक साम्यवाद, अक्कूजीक आधुनिकता, लल्लन ठाकुर जीक मंचन शैली आ शेखर जीक जनभाषा कलकल अछि।

१२. समीक्षा-मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)

स्वतंत्रतासँ पूर्व जन्म नेनिहार साहित्यकारक समूहमे एकटा नाओं अद्भुत मानल जा सकैत अछि, जनिक लेखनी सरस्वतीक वरद् पुत्र जकाँ एखनो मैथिली साहित्यकेँ अपन अर्चिससँ प्रकाशित कऽ रहल अछि। ओ छथि साहित्यक सभ विधाक पारखी रचनाकार- श्री गंगेश गुंजन। अरसैठम बरखमे अपन कोसक पाथर सदृश कृर्ति 'राधा'सँ विदेहक संग-संग मिथिला-मैथिलीक ध्वजकेँ आरोहित करबाक हिनक प्रयाससँ एकैसम शताब्दीक प्रथम दशांश गमकैत विदा लऽ रहल छथि।

समग्र साहित्यिक क्षेत्रकेँ ज्योर्तिमय बनएवाक संग-संग गुंजन जी संपादकक काज सेहो कएलनि। हिनक संपादकत्वमे नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडियाक सौजन्यसँ एकटा पोथी २००५ई.मे बहार भेल- 'मैथिली कविता संचयन'।

महाकवि विद्यापतिसँ लऽ कऽ तारानंद वियोगी धरिक सर्वकालीन कवि-कवयित्रीक रचनाकेँ ऐ पोथीमे संकलित कएल गेल अछि। भूमिकामे गुंजन जी कवीश्वर चंदा झासँ लऽ कऽ संजय कुंदन धरिक चर्च कएने छथि मुदा संजय कुंदन जीक रचना ऐ पोथीमे प्रयागराजक सरस्वती नदी जकाँ विलोकित अछि, प्रत्यक्ष दर्शनीय नै।

जहिना आदि पुरूषक मात्र चरण स्पर्श कएल जा सकैछ, मॉथपर पाग नै देल जा सकैत अछि, ठीक ओहिना महाकवि विद्यापतिक रचनापर कोनो प्रकारक प्रश्न चिन्ह ठाढ़ करब उचित नै।

हुनक फुलवारीमे सभटा फूल सुन्नर आ सुगंधित अछि। कोनो रचना एक-दोसरसँ कमजोर नै। गुंजन जी जै रचना पुष्प सभकेँ चुनलनि ओ बड़ नीक लागल। एक दिस प्रथम रचनामे भावक संगम तँ दोसर 'वसंत चुमाओन'मे प्रकृति वर्णनक बिम्बक मध्य राजधर्म आ देवक तुलना अनमोल लागल। 'रूपक वर्णन'मे श्रैंगारिक धवल चित्रण कएल गेल अछि। अभिसारमे विरह समागमक झलकि मनोहारी तँ शांति पदमे विचार मूलक स्पष्ट परिदृश्य वातावरणकेँ भक्तिमयी बना दैत अछि।

महाकविक पश्चात् गोविन्ददासक स्थान जेना मैथिली साहित्यमे विलक्षण अछि, ओहिना ऐ पोथीमे हुनक छ: गोट कविताक चयन संपादक जीक प्रतिभाक संग-संग चयनक अद्वैत दृष्टिकेँ पारदर्शी बना देलक। मनबोधक एकमात्र कविता

'शिशु' मैथिली साहित्यमे बाल साहित्यक न्यूनताकेँ किछु दूर तक भरवाक प्रयास कऽ रहल अछि।
कवीश्वर चंदा झाक तीनपद भक्तिसँ संबंधित मानल जा सकैत अछि। आशु कवित्वमे चंदा झाक स्थान मैथिली साहित्यमे सूर-तुलसी जकाँ प्रांजल, तँए तीनू पद गेय। शिव राग आ महेशवाणीमे भक्तिक आवाहन कएल गेल। 'राधा विरह' भक्तिक आड़िमे वेदनाक भाव सरितासँ नयनकेँ सरावोरि करबाक लेल पर्याप्त बुझना जाइत अछि।

कविवर सीताराम झाक पद्य सभमे झंकार अनायास भेट जाइत अछि। कवि चूड़ामणि काशीकांत मिश्र 'मधुप'केँ जौं मैथिली साहित्यक आदि लोकगीतकार कहल जाए तँ कोनो अतिशयोक्ति नै। विद्यापति जीक पश्चात् पद्य विधामे मधुप जी सभसँ जनप्रिय कवि मानल जाइत छथि। हुनक 'पतित पीक' आ 'छुतहर' कविताक संकलन ऐ पोथीमे कएल गेल अछि। दुनू पद्यमे बिम्बक चयन आ विश्लेषण सरल मुदा अर्थपूर्ण लागल। कांचीनाथ झा 'किरण' जीक 'मिथिलाक वसंत' अपन माटि-पानिक तात्विक विवेचन करैत अिछ। साहित्य सरोज बाबू भुवनेश्वर सिंह भुवन, सरस कवि ईशनाथ झा, सुमन जी सबहक कविता सभक चयनमे संपादक जीक दीर्घ इच्छा शक्तिक संग-संग अध्ययनशीलताक दृष्टिकोण नीक मानल जा सकैछ।

यात्री जी सर्वकालीन मैथिली कविमे अपन अलग स्थान रखैत छथि। हुनक लिखल पद्य सभ चित्रामे हुअए वा पत्रहीन नग्न गाछमे- सभटा एकपर एक अछि। संभवत: हुनक श्रेष्ठ छ: गोट कविताक चयनमे गुंजन जी किंकर्तव्यविमूढ़ भऽ गेल हेताह। मुदा जे पद्य सभ चुनल गेल सभ प्रासंगिक लागल। कनेक कमी यएह जे 'मैथिले' शीर्षक कविताक मात्र छ: पाँति देल गेल जखन की अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद् प्रयाससँ वहराएल 'चित्रा' पोथीक आधारपर 'मिथिले' शीर्षक कविता वियालिस पाँतिक अछि। हमरा मतेँ कोनो रचनाकारक अपूर्ण रचना संकलित करब उचित नै।

आरसी बाबूक दुनू कविताक चयन शांतिभावसँ कएल गेल। आरसी बाबू स्वयं अपन रचना 'शेफालिका'केँ अपन सर्वश्रेष्ठ कविता मानैत छलाह। तँए ऐ कविताकेँ संकलित करबाक लेल गुंजन जी धन्यवादक पात्र छथि।
साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित 'समकालीन मैथिली कविता'मे संपादक द्वय डॉ.

ब्रज किशोर वर्मा मणिपद्मकेँ बिसरि गेल छलाह मुदा ऐ पोथीमे हुनका 'मृग मयूर आ कोकिल मन हे' रूपमे स्मरण कएल गेल अछि। वास्तवमे मणिपद्म जी आधुनिक मैथिल साहित्यक पद्मनाभ छथि। गोविन्द झा, रामकृष्ण झा किसुन आ अमर जीक पद्यक चयन ऐ पोथीकेँ नूतनता प्रदान कएलक। राजकमल चौधरी मूलत: कथाकार छथि। पद्यविधामे सेहो हिनक रचना नीक होइत अछि, तँए सर्वकालीन कविगणमे हिनक स्थानपर कोनो संदेह नै। संगहि एकटा गप्प खटकि गेल जे राजकमल जीक आठ गोट कविताकेँ ऐ पोथीमे समाबिष्ट एकल गेल आ समकालीन कवि गोपाल जी झा गोपेशक कतौ चर्च नै। राजकमल जीक कविताक गणना कम कऽ गोपेश जीकेँ ऐ पोथीमे जौं स्थान देल गेल रहितए तँ आर विलक्षण भऽ सकैत छल। मायाबाबू, सोमदेव, धीरेन्द्र हंसराज, रामदेव झा, गुंजन जी, धूमकेतु, कीर्ति नारायण मिश्र, जीवकान्त, रेणु जी, प्रवासी जी, मंत्रेश्वर झा, कुलानंद जी, विनोद जी, उपेन्द्र दोषी, रामलोचन ठाकुर, भीमनाथ झा, नचिकेता, महाप्रकाश, ललितेश मित्र, विभूति आनंद, केदार कानन, ज्योत्सना चंद्रम, देवशंकर नवीन, सुस्मिता पाठक जीक प्रतिभापर कनेको संदेह नै।

रामानुग्रह झा, सुकान्त सोम, पूर्णेन्दु चौधरी, महेन्द्र, रमेश, अग्निपुष्प, हरेकृष्ण झा आ नारायण जी सन रचनाकारक रचना जखन ऐमे देल गेल तँ तंत्रनाथ झा, उपेन्द्र ठाकुर मोहन, उपेन्द्र नाथ झा व्यास, राधवाचार्य, अणुजी, रमाकरजी, श्रीमतिश्यामा देवी, इन्द्रकान्त झा, हासमीजी, डॉ. शेफालिका वर्मा, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, सियाराम झा 'सरस', इलारानी सिंह, डॉ. लाभ, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, नवल जी सन रचनाकारकेँ गुंजन जी कोना विसरि गेलनि। भऽ सकैत अछि जे हुनक तर्क हुअए जे स्थापित रचनाकारक संग-संग किछु विस्मृत आ नवतुरिया रचनाकारकेँ सेहो स्थान देल जाए।

जौं एहेन गप्प तैयो स्तरीय संपादन नै मानल जा सकैत अछि। विस्मृत आ नवतुरियो रचनाकार वर्गक किछु रचनाकार ऐ पोथीमे छूटल छथि जनिक रचना ऐमे संकलित किछु रचनासँ बेसी महत्व रखैत अछि। श्री चन्द्रभानु सिंह जीक कविताक किछु पाँति एकर प्रमाण स्वरूप देखल जा सकैत अछि-

तोरे स्वरक टघार सहारे रटय पपिहरा पी-पी
ककरा ने ई छैक सेहन्ता तोहर बाजव टी-पी
बेसुराह मनुखक समाजसँ तोहर फराके टोल छौ

की कहियौ गे करिकी तोहर बाजव बड़ अनमोल छौ।

(कोइली शीर्षक कवितासँ)

ऐ कविताक उत्तर देनिहार कवि प्रो. नरेश कुमार विकल जीक रचना सेहो ऐ पोथीमे नै देल गेल अछि-

युग-गुग सँ चलि आवि रहल छौ
वाजव मिसरीक घोल सन
हमरा आब लगैए कोइली
बाजव तोहर ओल सन.....।

ई कविता 'कोइली' शीर्षक नाओसँ विकल जीक कविता संग्रह 'अरिपन'मे सन १९९५ई.मे प्रकाशित भेल अछि। विलट पासवान विहंगम, रमाकांत राय 'रमा' कवि चंद्रेश जियाउर रहमान जाफरी सन आधुनिक कविक रचना ऐ पोथीमे समाविष्ट कएल नै गेल।

आशु गीतमे काली कान्त झा 'बूच'क रचनाकेँ समीक्षक वा संपादक विसरि सकैत छथि मुदा जे पाठक पढ़लनि ओ कहियो नै विसरताह। हुनक जागरण गान, माला, एक्केगीत, तोहर ठोर, उदासी, परिचए पात सन सभ विधासँ युक्त कविता मिथिला मिहिरमे प्रकाशित भेल छल।

भूमिकामे गुंजन जी स्पष्ट कएने छथि जे ऐमे संकलित ५१ गोट कविक संग-संग आर कवि छथि। हुनक रचना नै देबाक पक्षमे पोथीक सीमित आकार आ कविपय रचनाकारक सहयोगक प्रति उदासीनताक तर्क देल गेल अछि। हमरा मतेँ ऐ तर्कमे वास्तविकताक कमी बुझना गेल। पहिने मिथिला-मैथिलीक साहित्यकारक रचनाक प्रकाशन स्त्रोत मात्र किछु पत्र पत्रिका छल। गुंजन जीक रचना सभ सेहो निश्चित ऐमे छपैत छलनि, तखन असहयोगक गप्प कतऽ सँ आएल? विकल जी, बूच जी, शेफालिका जी, हासमी जी, चन्द्रभानु सिंह, चन्द्रेश सन कवि सत्तरिसँ अस्सी दशकमे मिथिला मिहिरक बहुत रास अंकमे कविक रूपेँ उपस्थित छलाह। हमर कहब ई नै जे रमेश जी आ नारायण जी सन रचनाकारक रचना ऐ पोथीमे किएक देल गेल?

कहवाक तात्पर्य जे जनिक कविता बेसी देल गेल अछि हुनक कविताक गणना किछु कम कऽ छूटल कविकेँ सम्मलित कएल जा सकैत छल। महाकवि विद्यापति, गोविन्द दास, यात्री, राजकमल, कीर्ति नारायण मिश्र कोनो परिचएक

मोहताज नै छथि हुनक कविता जौं एक-एक टा कम्मे रहितए तँ कोनो हुनका लोकनिक प्रतिष्ठा कम नै भऽ जेतनि छल? मुदा कोनो विषए-वस्तुक मात्र नकारात्मक स्वर नै देखबाक चाही। मैथिली साहित्यमे सर्वकालीन कविता सभक संकलन अत्यल्प अिछ, तँए गुंजन जीक प्रयास सराहनीय लागल। पूर्णता कतौ नै भऽ सकैत अछि। प्राचीन कविक रचना सभक चयनमे कोनो पूर्वाग्रह वा पक्षपात नै देखएमे आएल। मात्र आधुनिक कालक किछु रचनाकारक महत्वपूर्ण रचना ऐ पोथीमे नै देल गेल। गुंजन जी धन्यवादक पात्र छथि जे असगरे अंशत: कुशल संपादन कएलनि। ऐ तरहक अर्न्तद्वन्द्वसँ बचवाक लेल कोनो पोथीक संपादन एक व्यक्तिसँ नै करबा कऽ तीन-चारि व्यक्तिक संपादक मंडल द्वारा करएवाक चाही। जौं ऐ तरहक प्रयास कएल जाए तँ त्रुटिक संभावना क्षीण भऽ सकैत अछि। अंतमे स्वर्गीय रचनाकार सभकेँ पुष्पांजलि जीवित रचनाकार सभकेँ नमन संग-संग नेशनल वुक ट्रस्ट आ गंगेश गुंजन जीककेँ साधुवाद।

पोथीक नाओं- मैथिली कविता संचयन
संपादक- गंगेश गुंजन
प्रकाशक- नेशनल वुक ट्रस्ट इंडिया
प्रकाशन वर्ष- २००५
मूल्य- एक साए टका मात्र

१३.समीक्षा- तरेगन

वर्त्तमान युगक मानव-जीवन ''अर्थनीति''क उक्खड़िमे तेना कऽ कुटा रहल अछि जे गाँधी आ लेलिनक सिद्धान्त मटियामेट भऽ गेल। नीति आ धर्मक गप्प केनिहार लोक अतिवादी आ कर्महीन मानल जाइत छथि। ऐ भागमभाग भरल जीवनमे ''साहित्य'' सन शब्द हास्यास्पद जकाँ बुझा रहल। स्वाभाविके छैक, बिनु दाम सभ सुन्न! ऐ परिस्थितिमे साहित्यिक अवधारणा सेहो बदलि रहल अछि। आब महाकाव्य पढ़निहार लोक बड़ अल्प छथि किएक तँ सबहक जीवनमे समयाभाव छैक। हमहूँ ऐ गप्पकेँ मध्यकालिक रातिमे लिख रहल छी, किएक तँ दिनमे लिखब तँ खाएब की?

ऐ सभ कारणसँ लघुकथा आ लघुकविताक अनिवार्यता प्रतीत भऽ रहल। साहित्य समागममे लघुकथाक स्थान बड़ महत्वपूर्ण मानल जाइछ। मैथिलीमे एखन धरि परंपरा जकाँ रहल जे छोट कथा चाहे ओ बिम्बित हुअए वा नै ''लघुकथा'' थिक। किछु साहित्यकार मात्र ऐ दिशामे संकलन कऽ सकलाह। जइमे मनमोहन झा अग्रगन्य छथि। तारानंद वियोगी जीक लघुकथा संग्रह ''शिलालेख'' आ अमरनाथ रचित ''क्षणिका'' उत्तम श्रेणीक मैथिली लघुकथा संग्रह अछि। मुदा जौं साहित्यक सकल अवधारणा वा विधाक बिम्बित छायाक चर्च कएल जाए तँ **श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखित लघुकथा संग्रह ''तरेगन''** मैथिली साहित्यक प्रथम सम्पूर्ण लघुकथा मानल जाएत। ऐ पोथीमे एक साए दस लघुकथा देल अछि।

छोट-छोट ताराकेँ मैथिलीमे ''तरेगन'' कहल जाइत अछि। रातिमे चित भऽ कऽ वसुन्धरापर लेटि स्वतंत्र गगनकेँ दिव्यदर्शन कएलापर तरेगनक समूह सबहक मध्य स्थापित संबंधकेँ देखल जा सकैत छैक। लगैत अछि जे एक तरेगन दोसर तारासँ सटल छैक मुदा विज्ञानक अनुसंधानसँ ई स्पष्ट भऽ सकल जे अकाशक तरेगनक समूहक बीचक दूरी पृथ्वी आ आकाशक बीचक दूरीसँ बेसी छै। ओहिना ऐ कथा संग्रहमे लिखित सभटा कथा एक दोसरसँ सटल रहितहुँ एक-दोसरसँ बहुत दूर अछि। न्याय, कर्म, मीमांसा नीति आ बाल मनोविज्ञान सन बिम्बकेँ अनचोकेमे जगदीशजी एक संग बान्हि देलनि। मैथिलीमे नैतिक शिक्षाक अभावकेँ तरेगन बहुत हद धरि पूर्ण करबाक प्रयास कएलक।

मूल रूपसँ ई संग्रह नेना सबहक लेल लिखल गेल अछि मुदा बयसो जौं ऐ सिद्धान्तक अनुपालन करथि तँ समाजक विगलित मनोवृत्तिक रूपमे परिवर्त्तन अवश्यांभावित अछि। कोनो पोथीक समीक्षात्मक विवरणमे सम्पूर्ण रचनाक चित्रण करब अनिवार्य नै मुदा रचनाक समाजमे प्रभावक दर्शन कराएब वांछित होइत छैक।

सम्पूर्ण पोथीक अवलोकन कएलापर एकरा मात्र नेना-भुटकाक कथा संग्रह नै मानल जा सकैछ। पहिल कथा -उत्थान पतन-मे नीति शिक्षा नेना भुटकाक संग-संग गृहस्थ धर्मी लोकक लेल प्रेरणादायी लागल। संयम जीवन जीबाक कलासँ धर्म, अर्थ, काम आ मोक्षक अवलंबन सहज होइत अछि। -प्रतिभा- लघुकथामे डॉ. राममनोहर लोहियाक माध्यमसँ जगदीश जी ज्ञान आ समैक मध्य तारतम्य स्थापित करबाक प्रयास कएलनि। ऐ कथाकेँ मौलिक रचना (Creative writing) नै मानल जा सकैत अछि, किएत तँ कोनो महापुरूषक जीवन शैलीक चर्च कोनो पोथी पढ़ि कऽ कएल गेल अछि। मुदा नीक लागल जे जगदीश बाबू साम्यवादी प्रवृत्तिक मनुक्ख छथि आ लोहिया समाजवादी छलाह। ओना तँ समाजवादेसँ साम्यवादी धाराक परिकल्पना कएल जा सकैछ, परंच सैद्धान्तिक रूपसँ भारत वर्षमे दुहू राजनैतिक धारामे विलग नीति अछि। अपन अध्ययनशीलतासँ सम्पूर्ण मानव जातिकेँ एकसूत्रमे बँधवाक जगदीश जी प्रयास कऽ रहल छथि। मर्म कथाक बिम्ब पढ़लासँ स्वामी विवेकानंदक सरल राजयोगक सिद्धान्तक दर्शन होइत अछि। हेलैक कलासँ सांसारिक जीवन जीवाक तुलना, वैभवक कुप्रावक छोट मुदा विशेषार्थ प्रस्तुति नीति अनुपालनमे सफल प्रयास कहल जाए। अज्ञ नीक नै तँ खराब सेहो नै, सर्वज्ञ किओ नै भऽ सकैत अछि बहुज्ञ समाजक पथ प्रदर्शक परंच अल्पज्ञ जकरा देसिल वयनामे ''अधखड़ुआ'' कहल जाइत अछि ओ समाजक विकासमे वाधक होइत छथि।

अंग्रेजी साहित्यक प्रखर हास्य रचनाकार सर एलेक्जेंडर पोप सेहो कहने छथि- little knowledge is a dangerous thing. अर्थात अर्द्धज्ञान बड़ खतरनाक वस्तु होइत छैक। -पहिने तप तखन ढलिहेँ- शीर्षक लघुकथामे कुम्हारक आचार्य रूपक आ माटिकेँ शिष्य मानि नैतिक विश्लेषण नीक लागल। नीति-धर्म आ शैक्षणिक दर्शनसँ भरल दोहासँ ऐ कथाक तुलना अपेक्षित भऽ सकैछ-

गुरूवार कुम्हार शिश कुम्ह है, गढ़ि-गढ़ि काढ़े खोट
अंतर हाथ सहार दे, बाहर मारे चोट।

ऐ प्रसंगमे ज्ञानपीठ पुरस्कारसँ पुरस्कृत हिन्दी साहित्यक प्रांजल कवि श्री नरेश मेहताक कविता -मृत्तिका-क चर्च करब अनुकूल लागल। नरेश जीक रचनाक अनुसार माटि कहैत छथि- हम तँ मात्र माटि छी, जखन अहाँ अपन चरणसँ पददलित करैत छी आ हऽरक फाढ़सँ चीड़ दैत छी तखन हमरामे मातृत्वक वोध होइत अछि आ मातृत्वक प्रेरणा आ संसर्गसँ शस्य श्यामला धन धान्य अन्न हरियरीक रूपेँ संसारकेँ जीवन प्रदान करैत अछि।' कर्मपथपर क्रियाशील मनुक्खक लेल कालक आ प्रहरक कोनो बान्ह नै होइत छैक। -जखने जागी तखने परात- शीर्षक लघुकथामे डॉ. क्रोनिनक जीवन दर्शनक माध्यमसँ रचनाकार नेना-भुटकामे काकचेष्टा आ श्वान निद्राक झॉपल दर्शन करएवाक लेल आतुर छथि। जे व्यक्ति सत्य कर्मी होइत छथि ओ सदिखन सत्यकेँ जितएबाक लेल प्रयास करैत छथि। महाभारतक कथाक गर्भसँ एहेन कालजयी बिम्बकेँ निकालि कऽ -उग्रधारा- कथाक रूप देबाक कलासँ जगदीश जीकेँ हंस मानल जा सकैत अछि। जेना हंस नीर दुग्ध मिश्रणमे सँ क्षीरकेँ सोंटि लैत अछि आ नीर पात्रेमे रहि जाइछ ठीक ओहिना महा भारतक सम्पूर्ण कथा बिम्बकेँ नीर, अमिय आ मधु मानल नै जा सकैत अछि। अर्जुनकेँ विजयी बनएवाक लेल श्रीकृष्ण अपन पांजरपर हनुमानक अगम देह भारकेँ रोकि ''भारत''केँ विजयी बनौलनि। ई कथा छात्रक संग-संग शिक्षकक लेल अनुकरणीय अछि। व्यवहारिक, समर्पण, देवता, पाप आ पुण्य शीर्षक कथामे उदयनाचार्यक न्याय कुसुमांजलिक क्षणिक स्पर्शक अनुभव बुझना गेल।

अढ़ाइ आखरक शब्द प्रेमक रूप वास्तविक जीवनमे अर्थनीतिक आहिमे अप्रासंगिक भऽ गेल हुअए मुदा रचनामे एखन धरि जीवित अछि। हिन्दी साहित्यमे प्रेमचन्द्र रचित कथा ईदगाह, नागार्जुन रचित कविता गुलाबी चूड़ियाँ आ माखनलाल चतुर्वेदी रचित कविता प्रेमकेँ पढ़ि कऽ तिरपित होइत तँ छलहुँ परंच हरिवंश राय बच्चन जीक 'आ रहि रवि की सवारी' अंतिम पद्य मोन पड़िते क्षणहिंमे अकुला जाइत छलहुँ जे हिन्दी विजयी भऽ रहल छथि सूर्यक समान मुदा मैथिली उषाकालक चन्द्रमा सन झॅपा रहलीह। जगदीश जीक 'प्रेम' पढ़ि गुमानक अनुभव भऽ रहल अछि जे हमरा सभक भाषामे ऐ बिम्बपर जे कथा लिखल गेल

अछि ओ कतऽ कतऽ आन भाषामे भेटत, हेरबाक चाही? ओना ई कथा मौलिक रचना नै भऽ कऽ अंग्रजीक प्रख्यात लेखक ओ.हेनरीक एकटा कथापर आधारित अछि। श्रमक सम्मान तखन भऽ सकैत अछि जखन श्रमजीवी सम्मानित कएल जाइथ। वंश, तियाग, सद्विचार, साहस, वरदास्त, भूल, धैर्य, मनुष्यक मूल्य, मेहनतक दरद सन भाववाचक संज्ञाक दर्शन मात्र दार्शनिके कऽ सकैत छथि मुदा ऐ पोथीमे पाठक सेहो देख सकैत छथि।

एकाग्रता छात्र जीवनक धरोहरि होइत अछि। भाषण तँ सभ केओ दऽ सकैत छथि मुदा पाँच पाँति लिखबाक कला कतेक लोकमे छन्हि। हमरा विश्वास अछि जे 'एकाग्रचित' बिम्बकेँ रचनाकार पढ़थु मतिभ्रम दूर भऽ जेतनि। अनुभव, सौन्दर्य, धर्म आत्मबल सन मौन विषएकेँ कथाक रूपमे बिम्वित करब असंभव तँ नै मुदा आश्चर्यजनक। समाजमे क्रांतिक दीप प्रज्वलित करबाक लेल नेना-भुटकामे क्रांतिदीप जराएब आवश्यक अछि। ऐ लेल समाजक कुप्रथाक गर्भावलोकन करएवाक प्रयास प्रासंगिक मुदा कतेक रचनाकार मैथिली साहित्यमे ई काज कएलनि। विधवा विवाह, देश सेवाक ब्रत, नारीक सम्मान, सादा जीवन, पत्नीक अधिकार, जाति नै पानि शीर्षक कथा सभकेँ बाल मनोविज्ञानक मौलिक कथा मानल जाए।

निष्कर्षत: जीवनकेँ जीवन्त बनएवाक लेल जतेक प्रकारक तारत्म्य होएबाक चाही जगदीश जी ओइ सभ बिम्बकेँ बिम्वित कएलनि। ऐ पोथीमे दर्शनक सभ विधाक सरल भाषामे चित्रण केलनि। खटकल तँ मात्र एक अर्थमे जे बाल मनोविज्ञानक विकास करबाक लेल जे सरस विश्लेषण होएवाक चाही ओ ऐ पोथीमे नै देल गेल। गरीबक दीनतामे हास्यक समागम सेहो होइत अछि। बाल साहित्यमे दर्शनक विश्लेषणमे कतौ-कतौ रीति आ प्रीतिकेँ हास्य रससँ बोरबाक चाही। पंडित हरिमोहन झा तँ लघुकथा नै लिखलनि मुदा हुनक जे गद्य साहित्य उपलब्ध अछि ओइ सभमे दर्शनक बिम्बपर हास्य आ श्रृंगारक माखन चढ़ल भेटैत अछि जगदीश जीक रचना तँ अनुशासित होइत छन्हि मुदा 'तरेगन'मे बाल मनोविज्ञानक सरल प्रस्तुति करितहुँ कनेक चूकि गेल छथि। एक अर्थमे ई पोथी मैथिली साहित्यक लेल पथ प्रदर्शक पोथी अछि, तँए जगदीश बाबू प्रशंसाक पात्र छथि। सम्पूर्ण पोथीक अर्न्तदर्शनक लेल योग्य आचार्यक जिनकामे अनुशासनक संग-संग संतुलित अनुशीलन हुअए अनिवार्यता प्रतीत होइत अछि। निष्कर्ष रूपेँ

मैथिली भाषा-साहित्यमे 'तरेगन'कें बेछप्प नैतिक शिक्षाप्रद रचना मानल जाए। बालकथाक वास्तविक रूप अछि जे रचनाकारकें प्रश्नसँ बेसी समाधानपर धियान देबाक चाही। ऐ पोथीमे सभसँ नीक लागल जे रचनाकार प्रश्न ठाढ़े नै कएलनि।

पोथीक नाओं- तरेगन
विधा- बाल प्रेरक कथा संग्रह
रचनाकार- जगदीश प्रसाद मण्डल
प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन, दिल्ली
पोथी प्रप्ति स्थान- पल्लवी डिस्ट्रीब्यूटर्स, निर्मली (सुपौल)
प्रकाशन वर्ष- २०१०
दाम- १००टाका मात्र

१४. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

किछु अर्थमे सन् २००८-२००९कँ मैथिली साहित्यक विकासक लेल क्रांतिकाल मानल जा सकैत अछि। सन् २००८ई.मे मैथिली साहित्यमे एक गोट बाल साहित्यक रचना मैथिलीक प्रवीण समीक्षक श्री तारानंद वियोगी जी कएलनि पोथीक नाओं- ई भेटल तँ की भेटल। साहित्य अकादमी द्वारा नव सृजित बाल साहित्य पुरस्कारसँ ऐ पोथीकँ पुरस्कृत कएल गेल अछि। जौं किछु बर्ख पूर्वमे साहित्य अकादमी ऐ पुरस्कारकँ स्थापित करितए तँ भऽ सकैत छल जे मैथिलीक स्थान रिक्त रहिताए किएक तँ कोनो-कोनो वर्षमे मैथिली साहित्यमे बाल साहित्यक रचना भेले नै छल। सन २००९ई.मे मैथिलीमे कोनो महिला रचनाकार द्वारा पहिल नाटक लिखल गेल। रचनाकार छथि मैथिलीक प्रसिद्ध साहित्यकार श्रीमती विभा रानी आ नाटकक नाओं- भाग रौ आ बलचन्दा। हर्खक गप्प जे ऐ नाटकमे बाल आ नारी मनोविज्ञानकँ बिम्वित कएल गेल अछि। ओना तँ श्रीमती इलारानी सिंह सेहो नाटक लिखने छथि मुदा ओ सृजनात्मक नै भऽ कऽ अनुदित अछि। तँए श्रीमती विभारानीकँ मैथिली साहित्यक पहिल महिला नाटककार मानल जा सकैत अछि। ओना श्रीमती उषा किरण खान लिखित -भुसकौल वाला- पहिने छपल। क्रांतिक दीप कोनो योजना बना कऽ नै जाराओल सकैत अछि। एकर प्रत्यक्ष प्रमाण मैथिलीमे पहिल चित्रकथा- गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा प्रस्तुत करैत अछि। ऐ चित्रकथाक सृजन श्रीमती प्रीति ठाकुर कएलनि। प्रीति जीक नाओं ऐ चित्रकथाक लेखनसँ पूर्व कोनो साहित्य वा चित्रांकनमे झाँपल जकाँ छल। पहिलुक रचना आ ओहो मैथिली साहित्यक लेल आदि विषए मूलक। भारतीय संविधानक आठम अनुसूचीमे रहितहुँ हम सभ कतौ-कतौ गुम्म छलहुँ। प्रवर भाषा समूहक भाषा मैथिलीमे किछु रचनाक वर्ग अछूत छल। आश्चर्य लागल संगे विस्मित भेलहुँ जे हमरा समाजक एकटा महिला ऐ नवल विषएपर कोना केन्द्रित भऽ गेली?

ऐ चित्रकथामे सम्पूर्ण मिथिलाक संस्कृतिकँ बिम्वित करैत जनश्रुति आ ऐतिहासिक कथाक १६गोट खंडपर चित्रकथा प्रस्तुत कएल गेल। पहिल नौ गोट कथा गोनू झाक करनीपर लिखल गेल अछि। गोनू झा कोनो अनचिनहार नाओ नै। मुगल दरवारमे जे स्थान वीरबलकँ भेटल अछि मिथिलाक बाक्-पटुमे ओ स्थान गोनू झाकँ देल गेल। गोनू विदूषक छलाह मुदा ककरो महिमामंडित मात्र

करए बला विदूषक नै। अपन बुद्धि आ चातुर्यसँ ककरो विस्मित करबाक कारणेँ हिनक कोनो जोड़ नै। दुर्भाग्य जे गोनू मैथिल छलाह जौं अंग्रेज वा कोनो आन पाश्चात्य देशक रहितथि तँ वीरबलसँ हिनक तुलना नै भऽ कऽ वीरबलक तुलना हिनकासँ कएल जाइत। हिनक ई दुर्भाग्य हमरा सबहक लेल सौभाग्य भेल जे ऐ मिथिलाक भूमिपर महाकवि विद्यापति, गोनू आ राजा सलहेस सन महामानवसँ हमरा सभकेँ आन लोक जनैत अछि।

ऐ पोथीमे संकलित पहिल चित्रकथा गोनूझा आ माॅ दुर्गाजीसँ गोनू झाक बौद्धिक साक्षात्कारक चर्च कएल गेल अिछ। ऐ कथाकेँ तँ ऐतिहासिक मान्यता नै देल जा सकैत अछि किएक तँ इतिहास आ विज्ञानमे भगवान मात्र प्रकृतिस्थ होइत छथि, कोनो वैधानिक नै। मुदा जौं भावक शतदलक संग देखल जाए तँ नेना-भुटका लेल ई प्रश्नसँ भरल कथा जिज्ञासा अवश्य उत्पन्न कराएत जइसँ अंततः मैथिली साहित्य आ भाखाक लेल लाभ स्वाभाविक मानल जा सकैछ। चित्रक स्तर तँ नीक, रंग-नीक प्रदर्शन नीक मुदा सिंहक चित्र विलाड़ि जकाँ लागल। कोनो राजदरबार हुअए वा कोनो पितृ आ देव कर्मक स्थल, ब्राह्मणक संग-संग ठाकुर अर्थात हजामक भूमिका आन लोकसँ बेसी मानल जाइत अिछ। "गोनू झा आ स्वर्गकथा"मे एकटा ठाकुर गोनूकेँ पछाड़ए चाहैत छथि मुदा स्वयं चित्त। छोट चित्रकथामे नीक चुटुक्का जकाँ प्रस्तुति।

गोनू झासँ संबंधित आन सात गोट कथा सेहो चोहटगर देल गेल अछि। जनश्रुतिक आधारपर लिखल गेल कथा सभ मात्र बालमनोविज्ञानक सेहंतित छायाचित्र प्रस्तुत करैत अछि किएक तँ लिखलो मात्र नेना भुटकाक लेल गेल अिछ।

रेशमा चूहड़मल कथा ऐतिहासिक कथा थिक। भऽ सकैत अछि आर्यावर्त्तक इतिहासकार एकरा मान्यता नै देथु मुदा मिथिलाक गाम-गाममे चर्चित अछि।

दूधवंशी जातिसँ यदुवंशक तादात्म्य होइत छैक मुदा ऐ साहित्यक चूहड़मल दुग्धवंशी दुसाध छथि आ नायिका रेशमा भूमिहार ब्राह्मण। नीक लागल जे मोकामाघाटक कथाक सृजन करबामे पूर्णियाक वणिता आ मधुबनीक पुत्रवधूकेँ कोनो संकोच नै भेलनि। सिनेहकेँ समाजक जातीय व्यवस्थामे पददलित करबाक दृष्टिकोणकेँ ऐ चित्रकथामे तोड़ल गेल अिछ।

नैका बनिजारा कथापर डॉ. मणिपद्म जीक लेखनी मैथिलीमे सन १९७३ई.मे फुजि गेल अछि तँए ऐ कथासँ लोकजन सभ निश्चित परिचित छथि। प्रवेशिका स्तरपर मणिपद्म जीक ई कथा मैथिलीमे देल गेल छल। ऐ पोथीमे सरल भाषा आ बालोनुरागी चित्रांकन नीक लगैत अछि। भगता जोगिन पँजियारक चित्रांकन सेहो नीक रूपेँ बिम्वित कएल गेल अछि। प्राचीन जनश्रुतिक लुप्त कथा महुआ घटवारिन आ छेछन महाराज पढ़ि आ एकर चित्रांकन देख नवका पिरहीक नेना भुटका सभ निश्चित रूपसँ मिथिलाक संस्कृतिक कोखिमे प्रवेश करबाक प्रयास करतथि।

राजा सलहेस सन चराचर चर्चित विषए-वस्तुक छायांकन आ कालिदासकेँ मिथिलाक संस्कारसँ संबंधक प्रदर्शन मनोवांक्षित लागल।

निष्कर्षत: प्रीति जीक नव प्रयास नवल सोच आ बहुआयामी विषए-वस्तुक प्रस्तुति सराहनीय अछि। मैथिली साहित्यमे नव प्रकारक रचना थिक गोनू आ आन चित्रकथा तँए सम्यक समीक्षा करब हम उचित बुझैत छी।

श्रुति प्रकाशनक समग्र दल धन्यवादक पात्र छथि जे मैथिलीमे जौं पहिल चित्रकथाक नाओ- गोनू आ आन मैथिली चित्रकथा अछि तँ प्रकाशक श्रुति प्रकाशन।

१५. हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनीत उत्पल)- समीक्षा

एकैसम शताब्दीक दशांशक परिसमाप्तिक अवलोकन कएलापर परिणाम भेटल जे ऐ अवधिमे किछु एहेन तरूण रचनाकारक पदार्पण मैथिली साहित्यमे भेल जनिक रचना सभसँ हमर साहित्य पुलकित भऽ रहल अछि। श्री गजेन्द्र ठाकुर ऐ अत्याधुनिक पिरहीक लेल पथ प्रदर्शक छथि, जनिक कुशल नेतृत्वमे श्री विनीत उत्पल, श्री उमेश मण्डल, श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी, श्रीमती प्रीति झा ठाकुर सन रचनाकारक मंडली मैथिलीकेँ नवल ज्योति प्रदान कऽ रहल।

सन २००९ई.मे विनीत उत्पल जीक पहिल कविता संग्रह ''हम पुछैत छी'' श्रुति प्रकाशनक सौजन्यसँ प्रकाशित भेल। विनीत जीक जन्म मधेपुरा जिलाक आनंदपुरा गाममे भेल। प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा मुंगेर आ स्नातक भागलपुरमे। व्यावसायिक पाठ्यक्रम नई लिल्लीसँ प्राप्त कऽ सम्प्रति राष्ट्रीय सहारा नोएडामे वरिष्ठ उपसंपादक छथि। मैथिली-मिथिलाक सांस्कृतिक गति विधि आ अभिव्यक्तिक समायोजनक आधारपर दरभंगा आ सहरसाकेँ मुख्य केन्द्र भूमि मानल जाइत अछि। दरभंगा जिलासँ विभक्त भेलापर उपेक्षाक जे दंश समस्तीपुर जिला वासीकेँ भेटलनि, वएह दंश मधेपुराक लोक सेहो अनुभव कऽ रहल छथि। कविक जन्म मधेपुरामे आ प्रारंभिक शिक्षा अंग प्रदेशमे, परंच कविता सभ खाँटी मैथिलीमे, अजगुत तँ अवश्य लागल मुदा विनीत जीक मातृभाषानुरागसँ तीत-भीज गेलहुँ।

ऐ कविता संग्रहक भूमिका सिद्धहस्त साहित्यकार श्री गंगेश गुंजनजी ''कविक आत्मोक्ति : कविताक अएना'' शीर्षक दऽ लिखने छथि। गुंजन जीक व्यक्तित्व आ कृतित्व मैथिली साहित्यक लेल कालजयी मुदा कविक आत्मोक्तिक विवेचनमे श्री गुंजनक लेखनी कनेक कंजूस बनि कऽ रहि गेल। हमरा मतेँ कोनो नवतुरिया रचनाकारकेँ हृदेसँ प्रोत्साहित करबाक चाही। ओहूमे जै भाषामे पाठकक संख्या लगातार घटि रहल हुअए।

पचास कविताक संग्रहमे पहिल कविता ''ककर गलती'' विधवाक अवस्थापर व्यथित कविक लेखनी मैथिली वर्गक कथाकथित आगाँक जातिक मध्य प्रश्न ठाढ़ करैत अछि। ठोप, चानन आ पाग मैथिलक सवर्ण समाजमे पुरूष कतेको बेर धारण कऽ सकैत छथि मुदा स्त्री तँ अवला....। विवाहक क्षणहिंमे जौं पतिक

मृत्यु भऽ जाए तँ जीवन भरि सतीत्वक दंश झेलए पड़तनि। लार्ड विलियम बेंटिक केर सुधारवादी आन्दोलनमे बंगालक ब्राह्मण सुधरि गेलाह मुदा मैथिल ब्राह्मण अपन सनातन संस्कृतिक रक्षक छथि, अवलाकेँ सबला बनेबामे धर्म नष्ट भऽ जेतनि। नाओं गौरी दाइ मुदा समाजक लेल डाकिनी भऽ गेली-

की करती गौरी दाइ
किओ हुनका देवी कहतन्हि
तँ डाइन जोगिन कहवासँ
लोक वेद पाछुओ नै रहतन्हि।

कहबाक लेल तँ हमरा सबहक संस्कृतिमे शक्तिक उपासना प्रासंगिक अछि मुदा हम सभ अपने घरक शक्तिकेँ अपमानित आ मर्दित कऽ रहल छी। ''मनुक्खो नै भेल'' शीर्षक कवितामे भौतिकता आ बौद्धिकताक आड़िमे जीवन अवस्थाक अव्यवस्थित रूपक प्रदर्शन नीक लागल-

राति मे घर मे नहि रहैत छी
जखन कि चिड़ै चुनमुनी सेहो
साँझ पड़ैत घर घुरैत अछि

''की फर्क पड़ैत अछि'' शीर्षक कविता बौद्ध संस्कृतिक केन्द्र वैशालीसँ तथागतक संदर्भमे लिखल गेल। बिम्ब तँ नीक मुदा विश्लेषण स्पष्ट नै भऽ सकल। सभ पाठक तँ इतिहास विद् आ दार्शनिक नै छथि तँए कविताकेँ उपयुक्त आ पूर्ण नै मानल जा सकैछ। विनीत जीकेँ कनेक फरिछा कऽ लिखबाक चाही छल। पहिने समाज दाणवीर कर्णकेँ सुतपुत्र मानैत छल जखन महाबली भऽ गेलाह तँ सूर्यपुत्र मानल गेलाह। वास्तविकता जे हुअए मुदा अंग प्रदेशकेँ कर्णक कर्मभूमि मानल जाइत अछि। कविक प्रारंभिक शिक्षा मुंगेरमे भेलनि तँ अपन कर्मभूमिक वर्तमान अवस्थासँ मर्माहित छथि-

दल मलित होइत अछि
अंग प्रदेशक आत्मा
आ बजबैत अछि
तारणहार केँ... ।

अपन संस्कृतिक रक्षाक तादात्म्यमे हम सभ अनसोहांत काज सेहो करैत छी। धार्मिक आडंम्बरक एकटा प्रमाण अछि- मधुश्रावणी। कहबाक लेल तँ ऐ पर्वकेँ

मिथिलाक संस्कार पर्व मानल जाइत अछि मुदा वास्तवमे मैथिल ब्राह्मण आ मैथिल कर्ण कायस्थक मध्य मधुश्रावणी पर्व मनाओल जाइत अछि। ''परीक्षा'' शीर्षक कविताक माध्यमसँ कवि ऐ पावनिमे पतिब्रताक प्रमाणपत्र- टेमी प्रथापर प्रहार केलनि। पुरूष भेलाक पश्चात् सेहो कवि परीक्षासँ डेराइत छथि तखन नारीकेँ अहिल्या जकाँ बेर-बेर परीक्षा किए लेल जाइत अछि।

''गाम डूबि गेल'' शीर्षक कविता बाढ़िक विनाश लीलाक औसत प्रदर्शन मात्र मानल जा सकैछ।

संग्रहक सभसँ कलात्मक आ प्रासंगिक कविता- हम पुछैत छीकेँ मानल जाए। वास्तविक सेहो जे जै कविताक शीर्षककेँ कविता संग्रहक शीर्षक दऽ देल गेल ओइ कवितामे कविक आंतरिक जुआरि अवश्य हेतनि। ऐ कविताक माध्यमसँ कवि समाजक समीक्षाक लेल उद्यत छथि। समाजक सभटा व्याधिपर कविक लेखनी स्वच्छन्द भऽ विचरण केलक।

सरिपहुँ विनीत जी पत्रकार छथि देशकालक दशाक विवेचन नित्य करैत छथि तखन रचना झाँपल कोना रहत। ''मनुख आ माल'' एवं ''समाजक ई रूप'' वर्तमान मनुक्खक ओझराएल मानसिकताकेँ देखबैत अछि। अर्थनीति विलोकित भऽ गेल, भौतिकता समाजकेँ बॉटि रहल अछि, अधिक प्राप्तिक आशमे कुकर्म बढ़ि रहल अछि। एवं प्रकारे ऐ दुनू कविताक दृष्टिकोण नीक लागल। ''मरलाक बाद'' शीर्षक कवितामे दर्शनशास्त्रक अनुभूति होइत अछि। पुष्कर कवितामे भारतीय इतिहास आ अपन संस्कृतिक शीतल वातसँ गौरवान्वित भेलहुँ।

ऐ कविता संग्रहक सबल पक्ष अछि बिम्बक चयन आ विश्लेषण। भाषा सेहो सरल आ मैथिलीक खॉटी शब्दसँ ओत प्रोत अछि। मुदा दुर्बल पक्ष भेटल प्रवाहक कमीक रूपमे। कविता आशु कविता हुअए वा अतुकांत- छंदक लेपन आवश्यक होइत छैक। ऐ कविता संग्रहमे छंदक समायोजन समुचित रूपेँ नै कएल गेल कोनो-कोनो कविता तँ गद्य जकाँ बुझना गेल। कविकेँ आगाँ ऐ बिन्दुपर धियान राखए पड़तनि। निष्कर्षत: तरूण कविक प्रांजल मुदा प्रवीण प्रस्तुति, विनीत जीकेँ कोटि-कोटि साधुवाद.....।

पोथीक नाओं- हम पुछैत छी
प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन

मूल्य- १६० टाका मात्र
वर्ष- २००९

१६.समीक्षा-अरिपन (कविता संकलन)

मैथिली भाषा साहित्यमे किछु एहेन रचनाकारक पदार्पण भेल अछि जनिक रचना सभमे बिम्बक धरातल तँ हरियरीसँ पाटल अछि मुदा हुनक नाओं मिथिलाक साहित्यिक पृष्ठभूमिसँ कात लागल रहल। एहेन रचनाकारक समूहमे सँ एकटा नाओ डॉ. नरेश कुमार 'विकल' केर सेहो लेल जा सकैछ।

विकल जीक शिक्षाक क्षेत्र मैथिली आ राष्ट्रभाषा हिन्दी, रहल मैथिलीक प्राध्यापक छथि, तँए रज-कणमे मातृभाषाक प्रति सिनेह स्वाभाविक। सन पचासमे जन्म नेनिहार विकल जी अपन गामसँ लऽ कऽ सम्पूर्ण समस्तीपुर जिलामे मिथिला मैथिलीक लेल संघर्षरत छथि। मंच उद्घोषक आ गायक रहबाक संग-संग आशु गीतकार बनि छात्र जीवनसँ लगातार लिख रहल छथि। सन् सत्तर-अस्सीक मध्य मिथिला मिहिरमे हिनक कतेक रास कविता प्रकाशित भेल अछि। हिनक लिखबाक कलाक सभसँ पैघ विशेषता रहल जे मिथिलाक माटि-पानिसँ संबंधित रचनाक संग-संग बाल साहित्यपर अपन लेखनीक खुलि कऽ प्रयोग कएलनि। ओना तँ मैथिलीक संग हिन्दीमे हिनक बहुत रास पोथीक प्रकाशन भेल अछि मुदा 'अरिपन' हिनक प्रथम चर्चित काव्य संकलन थिक जइमे १९८३ई.सँ पूर्व धरिक लिखल हिनक ४५गोट पद्य संकलित अछि।

ऐ पोथीक प्रथम पद्य 'अर्चना'मे एकटा बालकक अपन मातृक प्रति सिनेहकेँ बिम्ब बनाओल गेल अछि। 'निष्ठुर करेज तोहर हमहुँ जनै छी'मे अवोधकेँ अपन माएसँ आक्रोश अछि। बिम्बक विश्लेषण सामान्य जनभाषामे कएल गेल। 'अपन पान आ मखान' कवितामे पाश्चात्य संस्कृतिसँ अपन गामक तुलना नीक बुझना जाइत अछि। 'वसल मिथिला छै सीताक परानमे' काव्यक विनोदी प्रवृति की अपन वास्तविक अवस्थाकेँ झाँपि सकत? एक दिस ऐ कवितामे मातृभूमिकेँ सभसँ ऊँच देखएबाक प्रयास तँ दोसर दिस 'वसन्त उपहार कतऽ अछि'मे हृदेमे पछबाक तप्त वायुक समावेशमे बसन्तक प्रयोजनमे मर्मक दर्शन भेल। एक्के व्यक्तिमे क्षणहिंमे सिनेह आ क्षणहिंमे छोह? वास्तविक जीवनमे हुअए वा नै परंच कविक चंचल मनमे एना सभ भऽ सकैत अछि। 'नहलापर अछि दहला' शीर्षक कविता बाल साहित्य आ बाल मनोविज्ञानक मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करैत अछि। ऐ कविताक आखर-आखरमे झाँपल बिम्बकेँ नेना-भुटका बूझि सकैत छथि, किएक तँ भाषा अत्यन्त सरल। मुदा ऐ कवितामे आशुत्वक प्रवेशक प्रयास

आ स्वर सरगमकेँ साक्ष्य बनएबाक लेल बिम्बकेँ विस्मित कएल गेल अछि। जइसँ कविताक स्तर कमजोर भऽ गेल। संकलनमे एकटा देल गेल 'गजल' बड़ नीक लागल। गजलकेँ शीर्षकसँ नै बान्हल जा सकैत। मुदा ऐ गजलक विशेष मनोरम बिन्दु अछि जे कवि एकरा एक्के बिम्बमे बन्हबाक सफल प्रयास कएलनि।

'संग रहि कऽ ने अहाँ बजै छी किऐ
प्राण वीणाकेँ तारे तोड़ै छी किऐ?

मैथिलीमे ओइ काल धरि ऐ प्रकारक गजलक अभाव जकाँ छल। देशज भाषामे लिखल गेल गजल खूब नीक लागल।

'तोरा लेल' शीर्षक गीतकेँ बाल साहित्यपर सामान्य प्रस्तुति मानल जा सकैत अछि किएक तँ स्वर आबद्ध करबाक क्रममे कवि बिम्बसँ भटकि गेल छथि। 'भागि गेल मिथिलासँ....' शीर्षक कवितामे अपन संस्कृतिपर पाश्चात्य सभ्यताक प्रभावक वर्णन कएल गेल अछि ओ नीक मानल जा सकैछ। ' चिहुँकल मन' सपनामे विरह वेदनाकेँ दर्शाबैत अछि।

ऐ संकलनमे देल गेल कवितामे सभसँ नीक कविता 'कोइली' शीर्षक कविताकेँ मानल जा सकैछ। ओना तँ 'कोइली'क मधुर स्वर कविकेँ कटाह लगैत छन्हि मुदा वास्तवमे कोइलीक स्वर मिथिला-मैथिलीक दयनीय दशाक विवेचन मात्र थिक।

सभ दिन सुखमे संग दैत छेँ
दु:खमे खाली डोल सन
हमरा आब लगैए कोइली
बाजव तोहर ओल सन।

'बाजि उठल कंगना'मे श्रृंगारक सेज सुक्खल जकाँ बुझना गेल। 'धरतीपर उतरल चान'मे कवि चूड़ामणि मधुपक शब्दक झंकार स्पष्ट देखऽ मे आएल।

'मलार' शीर्षक गीत मूलत: लोकगीक रूपक बुझना गेल। अभिसार पथपर कुपित वालाक पीड़ा हृदेकेँ झकझोरि दैत अछि-

रूसलहुँ मलान मुँह भऽ गेलै चानकेँ
पाथरसँ फोड़ू नै फोंका मखानकेँ

कोहबरक दृश्य प्रणय लीलाक द्योतक होइत अछि मुदा ऐ संकलनमे समाहित कोवरक बिम्बपर लिखल दुनू कविता मर्मस्पर्शी अछि। ककरोसँ भेटल पीड़ामे

कवि तपल छथि वा आनक व्यथाक उद्बोधन करैत छथि, ई स्पष्ट नै भऽ सकैछ।

एवं प्रकारे विकल जी ऐ पोथीमे गीत गगनक सभ उल्का, सहस्त्रबाढ़नि आ तरेगनकँ स्पर्श करबाक प्रयास कएलनि। जीवनक विविध विधामे पद्य लिख कऽ गीतक रूप देबाक हिनक प्रयास बहुत हद धरि सफल मानल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यमे सभसँ बेसी दरिद्र विषए थिक बाल साहित्यक सृजनशीलता। ओना तँ बहुत रास कवि ऐ विषएपर कविता लिखलनि मुदा भाषा क्लिष्ट तँए बाल पद्य रहितहुँ नेना भुटकासँ दूर रहल। ऐ पोथीमे जे बाल रचना देल गेल ओ सभ सरल आ सुगम्य अछि। तँए हिनक प्रयासकँ सार्थक बुझबाक चाही। अपन संस्कृति, श्रृंगार आ किछु भक्ति पद्य सेहो नीक लागल। ओना तँ ऐ संकलनकँ विकल जी 'काव्य संकलन' घोषित कएने छथि मुदा कविता कम आ गीत बेसी तँए 'गीत संग्रह' मानव प्रासंगिक हएत। राग आ लयमे आबद्ध करबाक प्रयासमे कतौ-कतौ बिम्बक समुचित विश्लेषण नै भऽ सकल। गीतमे एना होइते अछि, ओना ई सभ गीत एक-कालक नै भऽ कऽ विविध कालमे लिखल कविक रचनाक संकलन मात्र थिक तँए एकर महत्वकँ कम नै बूझवाक चाही।

हिनक रचनाक वैशिष्ठ्यता अछि भाषा सम्पादनक आड़िमे देशज शब्दकँ अवरोहित नै कएल गेल।

अधिकांश कवितामे मातृभाषाक लहरि जगमगाइत भेटल, जेना-

पियास मिझा ने सकै छी ककरो
सुखल सोतीक धारा छी
नजरि उठा केओ देख सकय नै
सांझक एकसर तारा छी'

ऐ प्रकारक रचनासँ साहित्यक सम्यक समृद्धि हुअए वा नै मुदा भाषाक विकासमे ऐ प्रकारक पोथीक महत्व अवश्य अछि। एहेन रचनासँ पाठक आ श्रोता नव रूपमे भेटत तँए एकरा प्रासंगिक मानल जा सकैछ।

पोथीक नाओं- अरिपन
रचनाकार- डॉ. नरेश कुमार विकल

प्रकाशक- मिथिला भारती
भगवानपुर देसुआ
समस्तीपुर
प्रकाशन वर्ष- १९९४
दाम- १६ टका मात्र

१७.समीक्षा-बिन बाती दीप जरय

साहित्यक विकास तँ काव्यक विविध श्रेणीक संग-संग गद्यक कांतिसँ होइत अछि मुदा भाषाक विकास तखने संभव भऽ सकैछ जखन ओइमे रसक सेहंतित सुगंध हुअए। रसास्वादनक लेल वैरागी साहित्यकार सेहो कखनो-कखनो गीत लिखए लगैत छथि किएक तँ गीत मानवकेँ पारिवारिक जीवनमे समाहित विविध समस्यासँ क्षणिक मुक्तिक लेल तिलकोर नै तँ चटनीक काज अवश्य करैत अछि। मैथिली साहित्यमे किछु गीतकार एहेन भेल छथि जनिक लेखन कलाक समुचित विवेचन नै भऽ सकल, किएक तँ ओ सभ गीतकार संग-संग गायक वा मंच उद्घोषक सेहो रहलाह तँए समीक्षक लोकनिक दृष्टिमे हुनक प्रतिभा मात्र गबैया जकाँ रहि गेल। जखन की जे श्रोता वा पाठक हुनका सबहक गीतक आनंद उठौने छथि, वएह व्याख्या कऽ सकैत छथि जे हिनका लोकनिक गीतसँ मिथिला-मैथिलीकेँ की-की भेटल? ऐ गीत गगनक चन्द्र-तरेगनक समूहमे रवीन्द्र नाथ ठाकुर, नवलजी, सियाराम झा सरस, चन्द्रभानु सिंह, कमलाकांत, कालीकान्त झा बूच'क संग-संग डॉ. नरेश कुमार विकल जीक नाओं देल जा सकैत अछि। आन ऊपर लिखित गीतकार जकाँ विकल जीक गीतमे कतौ फूहड़ वा अभद्र भाषाक प्रयोग नै। श्रृंगार, विरह, हास्य, अर्थनीति, बाल साहित्य आ गजल सन बहुआयामी गीतक विधामे विकल जी सिद्धस्त छथि। शुद्ध देशज वा देसिल वयनामे लोकधुनकेँ स्पर्श करैत हिनक गीत संग्रह- बिन वाती दीप जरय- सन् २००१ई.मे प्रकाशन संस्थान नई दिल्लीसँ प्रकाशित भेल।

ओना तँ ऐ पोथीक आमुखमे डॉ. हरिवंश तरूण जी एकरा काव्य कृति लिखने छथि मुदा वास्तवमे ई गीत संग्रह थिक। सभ प्रकारक सुवासित गंधक संग-संग करूणा, वेदना, समाजक विषए दशाकेँ गीतक बिम्बमे सरिया कऽ विकल जी ५१गोट गीतकेँ पोथीक रूप देने छथि। प्रथमं ग्रासे मक्षिका पात्रम' सभसँ पहिलुक गीत वेदनासँ ओत-प्रोत नीक लागल। पहिल पद्य 'चुमलहुँ सभ दिनकाँट'क बिम्ब विचार मूलक अछि, छंद आरोही आ धुन लोक धुन संग-संग गेय। संग्रहक अंतिम पद्य वसंत मुदा पहिल वेदना। भऽ सकैत अछि अपन व्यथित रूपकेँ प्रथमत: ज्वलित कऽ शनै-शनै: रसक क्षीर सागरमे पाठककेँ सरोबरि करबाक हिनक योजना हुअए मुदा हमरा मतेँ ऐ गीत संग्रहक पहिल गीत

आनंदित करैबला होएवाक चाही। दोसर गीत- सूखल सिनेहक स्त्रोत' सेहो करूण रससँ भल अछि।

अन्तर्मन अतृप्त ज्वार सभ
सरित स्त्रोत केर बात कहाँ
श्याम सघन घन घुमड़ि रहल थिक,
होइछ मुदा बरसात कहाँ!

गीतकार कोन पीड़ासँ उद्वेलित मुदा गुम्म छथि? पद्यसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओ अत्यन्त भावुक छथि। कहलो गेल अछि गद्यकार अपन जीवनक रूपकेँ झाँपि सकैत छथि मुदा कवि नै। कविक कविता हुअए वा गीत प्रबुद्ध पाठक कविक मन उद्वेग आ हृदए जुआरिकेँ हुनक पद्यमे स्पष्ट ध्वनित सुनि सकैत छथि। झरकि रहल मन' आ उसठल फागमे सेहो वेदनाक ध्वनि मार्मिक अछि मुदा कलुषित नै। दोहा गीत'मे गीतकारक वेदना स्वयंसँ उपटि कऽ समाजक आ देशक कालगतिक आड़िमे परिवर्तित मानसिकताकेँ स्पष्ट करैत अछि-

उड़न खटोला खाट बनि, रहल भूमिपर सूति।
सत्ते कहय जे कालपर, चलयने ककरो जूति।

'उनटा वसात' शीर्षक पद्यमे बिम्ब विश्लेषण तँ नीक बुझना जाइछ मुदा शीर्षक कनेक अनसोहांत लागल। बसात कखनहुँ उनटा नै बहैत अछि, मनुक्खक व्यक्तिगत जीवनमे सुख: दुखक उद्भव आ इतिश्री इहलौकिक होइछ मुदा बसात तँ शास्वत छथि तँए अपन व्यैक्तिक दु:खक दोष प्रकृतिपर नै देबाक चाही मुदा कविक मन मार्मिक आ चंचल होइछ आ संग-संग विकल जी आशु कवि छथि तँए हिनक दोषारोपणक भाव क्षम्य। ऐ पद्यक पाँति-पाँतिमे स्वातीक बूनक आशमे सितुआक टकटकी तृप्तिक ज्वार बड़ नीक लागल-

पुरैनक पातपर छी ओँघराएल
ने तन सुगबुगायल ने मन उजबुजाएल।

'अगिआयल सख सेहन्ता, मोनक पीर नीर बनि आएल, नोर सनल जिनगी सबहक बिम्ब सामान्य लागल। ओना तँ गीत-गजलमे बिम्बक प्रधानता नै होइत अछि किएक तँ ध्वनि, राग आ छन्दक समंजनमे रचनाकार बान्हल रहैत छथि तँए सुधि प्रभंजित होएबाक संभावना अधिक।

ऐ संग्रहमे दूटा बसंत गीत देल गेल मुदा दुनू नीक मानल जा

सकैत अछि। पहिल बसंत गीतमे व्यथाक पराभवसँ सिनेह निकसैत अछि तँ दोसरमे सुखक दुग्धमे अमृतक बून्न स्वत: टपकि रहल। वास्तवमे पद्यक रूप ऐ प्रकारक होएबाक चाही।

ऐ संग्रहमे जे सभसँ नीक गीत देल गेल अछि ओ थिक- प्रोषित पतिका'। दू तीन बेर समस्तीपुरमे विविध काव्य संध्यामे विकलजीक मुखसँ ऐ गीतक गायन सुनने छलहुँ। सन २००१ई.मे समस्तीपुरमे साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित- काव्यसंध्या'मे ई गीत बड़ लोकप्रिय भेल छल-

पहुना कहुना कऽ चलि आउ अपन गाम।
आब ने रहि गेलै तेहन आसाम।

ऐ गीतक माध्यमसँ गीतकार पलायनवादक प्रबल विरोध करैत छथि। अप्पन घरक नोन-रोटी आन ठामक मलपूआसँ बेसी नीक किएक तँ आन लोक हमरा सबहक व्यथाकेँ नै बूझैत छथि। जै कालमे विकल जी ऐ गीतक रचना कएने छलाह ओइ काल आसाममे बिहारी लोक सभकेँ बहुत पीड़ित कएल जाइत छल। ओना तँ एखनो स्थिति वएह आब तँ महाराष्ट्रमे सहो स्थिति भयावह भऽ गेल अछि। तँए ऐ प्रसंगमे 'प्रोषित पतिका' गीतक महत्वकेँ नजरअंदाज नै कएल जा सकैत अछि।

समाजमे पसरल व्यभिचार, भ्रष्टाचारपर आशुगीतकारक लेखनी अनायास नै टपकल, सहैत-सहैत देशकालक दशापर अंतत: 'छद्मबेसी' शीर्षक कविता लिख अपन गीतकेँ नवल सोचसँ पुलकित कऽ देलनि-

असल रूप परदा केर भीतर
सभ परदा रंगीन छै
देखबामे अछि चिक्कन चुनमुन
करनी नम्वर तीन छै।

देशकालक घोघटकेँ उघारैत समाजक कलुषित रूपपर किछु पद्य जेना अपन गणतंत्र, लतरि रहल विद्रोहक लत्ती, नव प्रभात, राखूबचा हिमालय, दिल्ली कने सुनू आ न्यूनतम मजदुरी पद्यक बिम्ब आ विवेचन दुनू नीक मानल जा सकैछ। समाजक दशापर कविता लिखल जा सकैत अछि गीतक बिम्ब दुष्कर तँए ऐ सभ पद्यकेँ पूर्णत: गीत नै मानल जाए। मुदा छंदक मात्रा संतुलित तँए गेय भऽ सकैछ।

ऐ पोथीमे चारि गोट गजल सेहो देल गेल अछि। मैथिली पद्य विधामे हैकू आ गजल लेखनक अभाव जकाँ अछि। तँए ऐ सभ गजल केर महत्वकेँ नकारि नै सकैत छी-

पसारल छैक परतीमे हमर पथार सन जिनगी,
कहू हम लऽ कऽ की करवै एहन उधार सन जिनगी...

उपर्युक्त गजलक संग-संग आन दूटा गजलकेँ नीक कहल जा सकैछ। गजलक पाँति-पाँतिमे अलग-अलग बिम्ब होइत अछि तँए एकरा शीर्षकसँ आबद्ध करब असंभव आ अनुपयुक्त।

एकटा गजल मूलतः गीत मानल जा सकैत अछि किएक तँ एक्के पाँतिक बेर-बेर प्रयोग कएल गेल। एकरा गजल नै मानल जाए। विकल जी गायक सेहो छथि, एहेन चूकि कोनो भऽ गेलनि।

तन भिजा कऽ मन जराबय,
आबि गेल साओन केर दिन
विरह वेदन तान गाबय,
आबि गेल साओन केर दिन
खोलि कऽ बरसात अप्पन
वस्त्र फेंकल सूर्यपर
चानकेँ सेहो लजाबय,
आबि गेल साओन केर दिन....।।

उपर्युक गीतकेँ गजलक रूप देबाक प्रयास कएल गेल मुदा सीमाक उल्लंघन कएल गेल तँए ई गीत अछि गजल नै।

'व्यथित हृदए' पद्य, पोथीक शीर्षककेँ स्पर्श करैत अछि-

बाती नेहक जरि ने पावय,
खाहे तिल-तिल देह जरय
व्यथा वेदना उर अंतरमे,
दय उपकार करय।

ऐ प्रकारे सभटा पद्यक अपन-अपन महत्व अछि। कतौ-कतौ त्रुटि सेहो भेटल। गीतकेँ बिम्ब आ स्वरसँ आबद्ध करबाक क्रममे एहेन त्रुटि स्वाभाविक होइत अछि।

अपन तरूण जीवनकालसँ विकल जी गीत, कविताक रचना करैत छथि। धन्यवादक पात्र छथि जे एखन धरि नीतिक संग-संग श्रृंगार आ छोहसँ भीजल रचना पाठक धरि पसारैत रहलाह। पूर्ण तँ केओ नै भऽ सकैत अछि, जखन पूनमक चानमे सेहो दाग तँ त्रुटि ककरोमे भऽ सकैत अछि।

रचनाक बिम्बमे कतौ-कतौ कमी भेटल मुदा रचनाकार अपन भावकेँ मैथिलीक प्रति श्रद्धेय रखलनि तँए ऐ त्रुटिक व्यापक विवेचन करब प्रासंगिक नै। निश्चित रूपसँ ऐ पद्य संग्रहमे मिथिला मैथिली संस्कृतिक ध्वनिक संग-संग लोकधुन दष्टव्य मानल जाए।

पद्य संग्रहक शीर्षक- बिनु वाती दीप जरय'मे रीतिकालक पद्यक रूप झलकैत अछि। वास्तवमे जेना निर्वातमे ध्वनिक गमन संभव नै तहिना बिनु वातीक दीपकक कल्पनो अवांछित मुदा कविक दृष्टकोण रीतिक प्रयोगात्मक अवलम्वन तँए एना संभव भऽ सकल।

पोथीक नाओं- विनु वाती दीप जरय
रचनाकार- डॉ. नरेश कुमार विकल
प्रकाशक- प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली
मूल्य- ८०टाका मात्र
प्रकाशन वर्ष-

१८.मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान

वाल्यावस्था जीवन रूपी नाटकक प्रथमांक होइत अछि। जौं कोनो नाटकक प्रथम अंक व्यवस्थित आ सरल हुअए तँ स्वत: आकर्षणक केन्द्र बनि जाइछ। कहलो गेल अछि *"Morning shows the day"* प्रभातसँ दिवसक पूर्व आभास स्वभाविक होइत छैक। हमरा सबहक लेल सौभाग्यक कथा जे मैथिली सत्व, तम आ रजो गुणसँ ओत प्रोत सरस भाषा मानल जाइत छथि। जीवनक प्रथम पाठशालाक छात्रमे ऐ गुणक समावेश आवश्यक अछि। तँए एहेन पद्यक रचना अनिवार्य जे शैशवसँ नेनपनमे प्रवेश करएबला नेना-भुटकाकेँ मातृ सिनेहसँ तृप्ति कऽ दिए। नेना भुटकाक जीवनमे महाकाव्य, प्रवंधकाव्य वा उपन्यासक कोन प्रयोजन? ओ सभ तँ बिनु अन्तर्मस्तिष्कपर दाब देने अपन संसारकेँ जीवन्त राखए चाहैत छथि।

वर्त्तमान समैमे सभ्यता आ संस्कृतिक भूमंडलीकरणसँ आर्य परिवारक किछु भाषाक अस्तित्व संकटमे पड़ि गेल अछि। संभवत: ऐ प्रभावसँ सभसँ बेसी मैथिली प्रभावित छथि। हमरा सबहक समाजक रूप ततेक इन्द्रजासँ आबद्ध भऽ गेल अछि जे दू गोट भाषाक प्रासंगिकतामे ओझरा रहल छी। गैर हिन्दी भाषा क्षेत्रक लोक तँ अपन मातृभाषाक संग-संग अंग्रेजीकेँ आत्मसात् कऽ रहल छथि। हमरा लोकनि किंकर्त्तव्यविमूढ़ छी जे अंग्रेजी तँ स्वीकार करैए पड़त मुदा हिन्दीकेँ छोड़ि मैथिली कोना पढ़ी? वर्तमान पीढ़ी तँ किछु-किछु मैथिलीक लाज रखने छथि मुदा ऐ पिरहीक प्रांजल साहित्यकारक लोकनि अपन करेजपर हाथ राखि कऽ कहथु जे अपन-परिवारक नेना-भुटकामे देसिल वयनाक प्रति निष्ठासँ ज्योति प्रज्जवित करैत छथि? जखन साहित्यकारक परिवारक ई स्थिति तँ आम मैथिलीक स्थिति कोना कहब? दशा ततेक मर्मस्पर्शी भऽ गेल जे किछु पिरहीक बाद नेना-भुटका पूछत मैथिलीकेँ छलि?

हमरा हिन्दीसँ कोनो पीड़ा नै। बेर-बेर प्रश्न उठैत अछि आ उत्तर सेहो स्वत:स्फूर्त जे हिन्दी राजभाषा छथि मुदा मातृभाषा नै। तखन मातृभाषक रूपमे एकर प्रयोग किए कएल जा रहल अछि।

ऐ दशाक लेल जौं अभिभावक सभ दोषी छथि तँ साहित्यकार सेहो कोनो कम नै। मैथिली साहित्यमे बाल मनोविज्ञानकेँ स्पर्श करएबला रचना

अत्यन्त न्यून। जौं नेना भुटका लेल साहित्य नै तँ ओ साहित्यक मर्मकेँ कोना बूझथि?

कहबाक लेल तँ ऐ बिम्बपर बहुत रास कवि कविताक रचना कएने छथि मुदा प्रथमत: तत्सम् शब्दक रूपेँ बिम्ब विश्लेषण। सभ नेना-भुटका तँ अयाची मिश्रक पुत्र शंकर नै भऽ सकैत छथि जे बालोहं जगदानंद......क अर्थ बूझि जएताह। जौं तत्सम् नहिओ तँ एहेन रचना जे कवि स्वयं बुझताह, समीक्षक दिग्भ्रमित भऽ जाइत छथि तँ नेना ओइ रस सरितामे विचरण करथि प्रश्नवाचक अछि। मैथिलीमे बाल साहित्यक रचनाक न्यूनताकेँ भरवाक लेल समीक्षक वा साहित्यक अधिष्ठाता लोकनि नीति सम्वन्धी पद्य आ वंदना सभकेँ बाल साहित्यसँ जोड़ि दैत छथि। हम ऐ दृष्टिकोणकेँ उचित नै मानैत छी। बाल कविता तँ एहेन होएवाक चाही जइमे मिथिला-मैथिलीक खॉटी शब्दकेँ बिम्वित कएल गेल हुअए। कोनो आवश्यक नै जे बिम्ब साहित्य रसकेँ छूबैत तात्विक हो, जखन बाल मन चंचल तँ नीति आ वैराग्यक समावेश अनिवार्य नै। ऐ तरहक रचनामे बाल श्रृंगार अवश्यांभावी छैक। जेना कोनो कविक कविताक किछु पॉति- ''आम छू अमरौरा छू/ बाबा गाछीक औड़ा छू/ नेनपन बीति गेलै/ ककरा कानमे कहबै कू/'' वा ''सूति रहँ नूनू बिलैया एलौ/ रहू माछ लऽ तोहर भैया एलौ/''

हमरा बुझने ई थिक बाल कविताक वास्तविक रूप मुदा एखन धरि कतए-कतए की-की लिखल गेल ओकर चर्च सेहो आवश्यक अछि। हमर अध्ययनशीलता व्यापक नै, एखन धरि मैथिली कवि वा कवयित्री लोकनिक रचना सभ बहुत रास नै पढ़ने छी तँए हमर विवेचनकेँ अन्यथा नै लेल जाए। हम वएह कवि वा कवयित्री सबहक चर्च करब जनिक रचनासँ अवगत भेल छी।

नीति संवंधी बाल साहित्यक अन्तर्गत कविवर सीता रामझाक शिक्षासुधा, जनसीदनजीक नीति पदावली, पंडित वेदानंद झाक रत्नवटुआ अछि प्रमुख अछि। शिक्षा प्रधान बाल साहित्यमे श्री गोविन्दक पाकल आम आ श्री कांचीनाथ झा किरण जीक ''प्रभात'' कविता महत्वपूर्ण अछि। ओना तँ सुमन जी बाल साहित्यमे किछु छिटफुट तत्सम मिश्रित कविताक रचना कएलनि मुदा शिशु मासिक पत्रिकाक प्रकाशनमे हुनक उल्लेखनीय योगदान अछि जइमे तन्त्रनाथ झाक वानर आ ईशनाथ झाक ''वन्दना'' कविता छपल छल। ओना तँ तन्त्रनाथ झा रचित ''मुसरी झा'' कविता तरूण पाठकक लेल लिखल गेल मुदा ऐसँ

शिक्षाक मध्य पएर पसारैत नेना सेहो प्रभावित भेल छथि। कवि चूड़ामणि मधुप तँ श्रृंगार आ विचारमूलक भावनासँ भरल गीतक रचनाकार छथि मुदा हिनक किछु गीत बाल बिम्बसँ ओत-प्रोत नै रहितहुँ ततेक लोकप्रिय भेल अछि जे मिथिलाक नेना-भुटका चाहे ओ शिक्षित परिवारसँ संबंध राखथु वा नै स्वत: गबैत अपन कर्मपथपर मिथिलाक गाम-गाममे गतिमान एखनो रहैत छथि। ''बटुक आ धीयापूता'' सन पत्र-पत्रिका बाल साहित्यकें प्रोत्साहित अवश्य कएलक अछि जइमे सरस कवि ईशनाथ झा, सुमन, किरण, मणिपद्म, यात्री बुद्धिधारी सिंह रमाकर, चन्द्रनाथ मिश्र अमर, श्री धीरेन्द्र सन कविक कविता छपैत छल। मिथिला मिहिर निश्चित रूपेँ मैथिलीमे बाल साहित्यक धाराकेँ नवल गति देलक। ऐ पत्रिकाक पैघ विशेषता छल जे नवतुरिया कवि वा कवयित्री सभकेँ सेहो ऐ पत्रिकामे स्थान देल गेल। मिथिलाक गाम-गाममे ऐ पत्रिकाक वितरण व्यवस्था छल जइसँ ऐमे छपल रचनाक व्यापक प्रचार-प्रसार भेल। राज दरभंगा द्वारा स्थापित एवं संरक्षित रहवाक कारणेँ रचनाकारकेँ उपहार वा पारिश्रमिक रूपेँ किछु कैंचा सेहो भेट जाइत छल जइसँ बाल साहित्यक कोन कथा मैथिली साहित्यक सभ विधाक विकासमे मिथिला-मिहिरक योगदान अविस्मरणीय अछि। बाल स्तंभमे अनेकानेक वालोपयोगी कविता संग्रहक दृष्टिऍ डॉ. श्रीकृष्ण मिश्रित अग्रदूत उल्लेखनीय अछि। मैथिली साहित्य मंजरी, मैथिली साहित्य बोध आदि साहित्यक पाठ्यपुस्तकमे सुमनजी, तंत्रनाथ झा, ईशनाथ झा, हरिमोहन झा, आरसी बाबू आ गोविन्द झा सन कविक बालोपयोगी रचना देल गेल अछि।

बाल साहित्यमे व्यापक कवित्वक प्रदर्शन आधुनिक कालक कवि आ कवयित्री पूर्वकालक रचनाकारसँ बेसी कएलनि अछि। ऐमे जीवकान्तजी प्रमुख छथि। जीवकान्त जीक तीन गोट बाल कविता संग्रह छपल अछि जइमे गाछ झूल-झूल आ छॉव सोहावनि प्रमुख अछि। हिनक पश्चात् जे कवि ऐ दिशामे क्रियाशील भेल छथि- ओइमे श्रीचन्द्रभानु सिंह, मार्कण्डेय प्रवासी, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सियाराम झा सरस, मंत्रेश्वर झा, हंसराज, मायानंद मिश्र, रामलोचन ठाकुर, भीमनाथ झा, कालीकान्त झा बूच, गोपालजी झा गोपेश, डॉ. नरेश कुमार विकल, डॉ. केदारनाथ लाभ, डॉ. इन्द्रकांत झा, रमाकान्त राय रमा, उपेन्द्र ठाकुर मोहन सन स्थापित कविक नाओं प्रमुख अछि।

दुर्भाग्य अछि जे ऐ कवि लोकनिक बाल साहित्यपर कोनो संकलित कविता संग्रह नै भऽ कऽ मात्र किछु छिट-फुट कविता वा गीत नेना भुटका लग परसल गेल अछि। कवयित्रीमे ''शिशुकलकत्ता'' शीर्षक कविताक रचनाकार इलारानी सिंह, डॉ. शेफालिका वर्मा, वाणी मिश्र, रोटी शीर्षक कविताक कवयित्री कामिनी, विभारानी, एकटा भीजल बगरा शीर्षकक कवयित्री ज्योति सुनीत चौधरी आदिक नाओं प्रमुख अछि मुदा हिनको लोकनिक वएह हाल कोनो संकलित कविता संग्रह नै मात्र छिट-फुट कविता।

सन् २००८ई.मे विदेह पत्रिकाक आगमनक संग-संग बाल साहित्यमे क्रांति आबि गेल। ऐ पत्रिकाक संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुर बाल साहित्यक उत्प्रेरणक लेल उद्यत छथि। हुनक सप्त विधामे लिखल रचना संग्रह कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक सातम खण्ड ''बाल मंडली आ किशोर जगत'' नेना भुटकाक लेल समर्पित अछि। ऐ खण्डमे एक साएसँ ऊपर कविता देल गेल अछि। कविता सभ पढ़लाक बाद बाल साहित्यक तादात्मयकेँ निश्चित रूपेँ बूझल जा सकैत अछि। ऐ संकलनमे वातानुकूलित महलमे रहनिहार नेना भुटकासँ लऽ कऽ गामक सोती-नदीक कातमे घोंघा बिछनिहार बाल-वालिकाक मनोदशाक विवेचन कएल गेल अछि। मैथिलीक संग ई विडम्बना रहल जे ऐमे अर्थनीति आ सामाजिक समरसताकेँ व्यापक रूपेँ बिम्वत नै कएल गेल। सामंतवादी प्रवृतिक लोकसभ चाहे ओ कोनो जातिक होथु हुनके मानसिकताकेँ समाजक मानसिकता मानि लेल गेल। जगतजननी सीताक लोकगााथापर तँ केओ बाँचि सकैत छथि मुदा सलहेस, बहुरा गोढ़िन आ नटुआ दलालक संग-संग मोती दाइक व्यथा ककरा मुखसँ सुनैत छी? यएह दशा बाल साहित्यमे सेहो भेल। हिन्दी भाषा साहित्यमे राष्ट्र कवि दिनकर ''बच्चो का दूध'' शीर्षक कवितामे समाजक अंतिम पाँतिक नेनाक भूखसँ कल्हाइत मर्मस्पर्शी दशाक चित्रण कएलनि मुदा मैथिलीमे ऐ प्रकारक रचनाक अभाव खटकि रहल छल, किछु लिखलो गेल तँ ओकरा साहित्यिक मान्यता नै भेटल। गजेन्द्र जी ऐ भ्रमकेँ तोड़वाक प्रयास कएलनि अछि, जइले धन्यवादक पात्र छथि।

गजेन्द्र जीक संग-संग बहुत रास तरूण कवि कवयित्री सबहक बाल रचना विदेहमे छपल अछि। वर्तमानकालक बाल रचनाकार कवि, कवयित्रीमे चन्द्रशेखर कामति, अनमोल झा, श्रीमति मृदुला प्रधान, डॉ. जया वर्मा, राजदेव मण्डल,

कुमार मनोज कश्यप, डॉ. शंभू कुमार सिंग, कामिनी कामयिनी, उपेन्द्र भगत नागवंशी, मनोज कुमार कर्ण उर्फ मुन्नाजी, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, रूपा धीरू, हिमांशु चौधरी, रूपेश कुमार झा त्योंथ, विनीत उत्पल, श्रीमती कुसुम ठाकुर, अशोक दत्त, राजेश मोहन झा गुंजन, किशन कारीगर आ उमेश मण्डल सन नव साहित्यकार प्रमुख छथि। ओना वर्तमान कालक परिधिमे किछु स्थापित रचनाकार जेना गंगेश गुंजन, विभूति आनंद, ज्योत्सना चंद्रम, जयप्रकाश जनक, रामसेवक ठाकुर, कमलाकान्त, अरविन्द अक्कू, परमानंद प्रभाकर, रामपुनीत ठाकुर तरूण, प्रो. रवीन्द्र कुमार चौधरी सन रचनाकारक लेखनी ऊपर वर्णित सभ रचनाकारक संग-संग ऐ विधामे क्रियाशील अछि। सभसँ आश्चर्यक गप्प जे मात्र नौ गोट वसंत देखलि बालिका सुश्री संस्कृति वर्माक लेखनी प्रथमत: बाल साहित्येकेँ स्पर्श कएलक अछि।

ऐ प्रसंगमे किछु एहेन रचनाक उल्लेख करब आवश्यक बूझैत छी जे छेहा मैथिलीमे मात्र नेना-भुटका लेल लिखल गेल हुअए-
(क) "खेत टी खरिहान टी/ आंगन टी दलान टी/ बाबा आब अहींक कानमे/ टिटही टहकय टी-टी-टी../"
(ख) "बापे तोहर बनलौ परदेशी/ चिट्ठी ने एलौ भेलौ दिन वेसी/ मॉंक निनायल व्यथा जगबै छौ/ सुनही रौ तोरे कुचरि सुनबै छौ/" ***(काली कांत झा बूच रचित- पोताक अट्ठास आ दिनक नेना कवितासँ)***

(क) "साले-साल किअए अबै छी/ झणे-झण अबैत रहू/ हर क्षण हर मनकेँ/ अमृतसँ भरैत रहू/ क्षणे-क्षण.../ नव शक्तिक नव उत्साह दऽ/ सृजन शक्ति भरैत रहू/ कर्म-ज्ञानकेँ घोड़ि-घोड़ि/ सिनेहसँ सिनेह सटैत रहू/ क्षणे-क्षन.../ जे हूसल से हम्मर हूसल/ तइले किअए छी कलहन्त/ सभ जागैए सभ सुतैए/ एक दिन हेतै सबहक अंत/ नजरि-उठा देखैत रहू/ क्षणे-क्षण.../ देवी अहाँ, मैया अहाँ/ भेदि कतौ अछि कहाँ/ जोड़ल आँखि उठा-उठा/ पले-पल देखैत रहू/ क्षणे-क्षण अबैत रहू।"
(ख) "आँखि पुछलक/ दीदी, सभ किछु देखितो/ किछु ने देखै छी/ कलपैत मन देख/ भिर-भरि दिन कनै छी/ नजरिक उत्तर/ सगतरि तँ फूल छिटाएल-ए/ गुणसँ

भरल-पुरल/ रस चुसैक ज्योति बनाउ/ भेटत तखने मीठका फल।/ ***(जगदीश प्रसाद मण्डल, "सरस्वती बंदना" आ "नजरि" कवितासँ)***

"बड़ जे जतनसँ हम पोसली पुताकेँ/ भुखे सुतली अपन घर मर ओकरा सुतौली खुआकेँ/ अपने हम मुरूख मुदा बौआकेँ पढ़ौली/ काटि कष्ट पोथी लेल ढौआ जुटौली/" ***(रूपेश कुमार झा त्योंथ)***

(क) "चारिटा छौंड़ा छल गाछ तर फनैत/ जिद लगौने डरिकेँ गनैत/ पहुँचल पाँचम- हे रौ की गनै छेँ/ ई कथीक गाछ छिऐ से जनै छेँ?। सभ भेल अवाक/ अपन जमौलक धाक। सुनने रहि ई गाछ छिऐ। अनचिन्हार...... ।/
(ख) "बच्चा जनमि गेल/ बेटा भेल/ सुनतहि घर खुशीसँ भरि गेल/ सौंसे टोल खबरि पसरि गेल। बढ़ए लगल उछाह। कहलक लोग-वाह-वाह। मुनियाँ अछि लछमिनियाँ/ तब ने एकरापर सँ जनमल छौंड़ा....। ***(राजदेव मण्डल, कथीक गाछ आ मुनियाँक चिन्ता शीर्षक कवितासँ)***

"छुनछुन-छुनछुन बौवा हम्मर/ फुदकैत फुदही जकाँ रहैए/ कखनो मुस्की कखनो मटकी/ कखनो दिदीकेँ चुप्पी कहैए/" ***(अशोक दत्त)***
टुन्ना गेंग पसारै यै/ मुन्ना दाँत चियाड़ै यै/ गुड्डू-टिंकू-बबलू-सबलू/ मुइयो मोंछ उखारै यै/ आब की कहू भाय/ हुरपेट्टे लगै यै/ बाजै छी कोना....।/ ***(चन्द्रशेखर कामति)***

"एक दू तीन/ बौआ गेल सुनि/ चारि पाँच छह/ सुनि भेल भयावह..../" ***(गजेन्द्र ठाकुर)***

"नहला पर अछि दहला/ बौआ बाबू हमरा कहला/ पढू जोरसँ..../" ***(डॉ. नरेश कुमार विकल)***

*"कोन दिशासँ उतरि पपिहरा/ घैल पदक ढरकाबै छैँ/ बिजुवन केर पंछी तों हमरे/ जरल जिआ तरसावै छैँ..../" **(चन्द्रभानु सिंह)***

"पोथी पढ़ि किछु हैत नहि/ तोड़ऽ चाही रोट/ जोड़ू नोट बकोटि कऽ/ भोट बटोरू मोट...../"
(आरसी प्रसाद सिंह)

"एकर चोरौलक ओकर हेरौलक/ बापो माइक नाम बुड़ौलक/ पोथी फाड़य थोथी झाड़य/ एकरा ओकरा झगड़ा लाड़य.../" ***(उदयनाथ झा अशोक)***

"चलू तिरंगा कने उड़ा ली हर्जे की/ आजादी केर रश्म पुरा ली हर्जे की..../"
(रामलोचन ठाकुर)

"देव पितर पातरि-खरना कहिया धरि?/ बैसल खैबें रे रमचरना कहिया धरि?/ पोथी पतरा गामक गाम उपासल अछि/ प्रवल धारमे बड़का-बड़का भासल अछि/"
(डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र)

*"मातृभूमि केर करी बंदना/ ऋतुरानी गुनगान करी/ जननी जन्मभूमि केर खातिर/ अर्पण अप्पन प्राण करी.../" **(अर्जुन लाल कर्ण)***

"तू लोरी गा हम सूति जाएब/ माए लोरी गा हम सूति जाएब..../" ***(डॉ. शंभू कुमार सिंह)***

"नेहरू चाचा, अहाँ कतऽ चलि गेलौं/ देख लिअ अहॉ नेना सभकैँ की कऽ गेलौं/ हमर पीठ पर भारी बस्ता/ ओइमे किताब कॉपीक ठेलमठेल देखू..../"
(सुश्री संस्कृति वर्मा, वएस नौ बरख)

"एक टोलमे बबलू अकलू/ दू नेना छल/ समतुरिया छल/ बबलूकेँ छल बन्तिक खुट्टी/ आमक तख्ता केर पिटना छल..../" ***(जीवकान्त)***

"नन्हें भाय खेलए चललनि/ हाथ नेने बंदूक/ लगलनि दनदन फायर करए/ ओ पक्षी देखि उलूक.../" ***(रमाकान्त राय रमा)***

"जाड़क रौदी सन वेटी/ गरमीक छाहरि सन वेटी/ जीवनक गीत-संगीत बसैत अछि/ ओइमे/ नहि तँ रसहीन अछि जिनगी/" ***(डॉ. जया वर्मा)***

"राम छू रहमान छू/ गीता आर कुरान छू/ मोल विकयबैँ नहि बजारमे/ पहिने बौआ कान छू..../" ***(डॉ. ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म)***

"हे भाय हमरा जुनि मारह/ हम छी तोरे भ्राता/ अग्रज वा अवरज..../" ***(फजलुर रहमान हरसमी)***

"बालुक करेजपर बसा लेलहुँ गाम/ बेरि-बेरि ऑगुरसँ लिखलहुँ जे नाम..../" ***(विलट पासवान विहंगम)***

"कोंचा लेटाइत छनि केश फहराइत छनि/ मोछो हुनक कलकत्ते/ ईहो पुरूष अलबत्ते.../" ***(रवीन्द्र नाथ ठाकुर)***

गोरसपट टकधियान लगेने/ मुन्रिया बैसलि अकानैए। घर-अंगन, द्वारि-दरबज्जा/ भोरे सभ दिन बहारैए/ बर्तन-वासन, छिपली-कटोरी/ सभ दिन चमका कऽ मांजैए/ झक-झक झलकैत/ थारी-बाटी देख/ मुन्रियामाए गुनगुनाइए/ गुनगुन्नीमे अह्लाद भरल छै/ सुख-दुख सेहो उमरल छै/ मुन्रिया आब छोड़त ई दुनियाँ.....।

(उमेश मण्डल रचित नोर कवितासँ..)

"खेल खेल खेल/ खेल बौउआ खेल/ चोरा-नुकी खेल/ अज्ञानक अन्हारमे/ नुकाएल चोरबा/ ज्ञानक किरनसँ/ पकड़ल गेल/ खेल खेल खेल/ खेल दाय खेल/ कनियाँ-पुतरा खेल/ बेइमानक नगरीसँ/ नकलल बहुरिया/ शैतानक माफापर/ बैठा देल गेल/ इमानक चौबटियापर.../" ***(मनोज कुमार मण्डल)***

"जगदंब अहीं अवलम्ब हमर/ हे माय अहाँ बिनु आश ककर..../" ***(प्रदीप मैथिली पुत्र)***

"पढ़ि-लिख बनिहेँ एहन सिपाही/ सभ तरि लोक करौ वाहवाही/ एहन संतानक अलगे धाही/ खगता छै भगत सिंह चाही...../" ***(महाकांत ठाकुर)***

"माँ गै माँ/ घरक ऊपर/ चारक तर/ बगरा बनेलकऊ/ एकटा घर/ माँ गै माँ/ घरक पाछू/ बारीक बिच/ सुगा अनलकऊ/ एकटा फर/ माँ गै माँ/ गामक भीतर/ टोलाक बिच/ नटुआ नचलऊ/ एकटा नाच/ माँ गै माँ/ गामक बाहर/ पोखरिक बिच/ पुरैनिक पातपर/ झिलमिल जल/ माँ गै माँ/ आँगन कात/ ढेकी लग/ बिहरिमे छौ/ गहुमन साँप/ माँ गै माँ/ बस्तुनिया लय/ हम कहलियौ/ सब हाल-चाल/ जल्दीसँ दऽ दहीं/ बस्तुनिया हमर/ हम चललियऊ/ खेलय लेल.../ ***(पंकज कुमार झा)***

"दाइ गे दाइ तोँ बड़ हरजाइ/ भागेँ ओइ दिस देखए जत्तहि/ ढेपा गुड़क गुड़कल जाए...../" ***(राजेश मोहन झा गुंजन)***

ई लिखबाक हमर उद्देश्य अछि बाल कविताक किछु रूपक दर्शन मात्र। ऐसँ इतर सेहो अनेकानेक बालगीत आ कविता मिथिला गाम-गाममे लोरी आ रीति गीतक रूपमे चर्चित अछि। मैथिली साहित्यमे तँ साहित्यक कृतिक विविध विधाक संपादन वा चित्रण पहिनेसँ बेसी भऽ अछि मुदा मर्मस्पर्शी कथा जे

पाठकक गणनामे लगातार कमी आबि रहल अछि। गोलमेज सम्मेलन कऽ कऽ तँ हम मैथिल अपन पाठक लोकनिक गणना चारि करोड़ धरि पहुँचा दैत छी मुदा सभ गोट मैथिल जौं मात्र अपन परिवारेक अवलोकन करथु तँ सत्यतासँ अवगत भऽ सकैत छथि मात्र माता-पितासँ वैदेहीक अस्तित्व नै बॉचत तँ....। जौं बाल भावनाकेँ देसिल वयनामे प्रचार-प्रसार नै हएत तँ भऽ सकैत अछि जे कवि कालीकान्त झा बूच जीक कविता देसिल वयनाक अस्तित्वक बिम्ब सत्य प्रमाणित भऽ जाए। एकर किछु पॉति-

"चन्दा-सुमन-यात्री-मधुपक/ जुनि करू भावना पर आधात/ दिवस निकट ओ आवि रहल अछि/ हेती मैथिली सभसँ कात..../"

नेना-भुटकामे देसिल वयनाक प्रति सिनेह जगाएव आवश्यक अछि। ऐ लेल बाल साहित्यकेँ प्राथमिकता देब अति आवश्यक अछि। विशेष कऽ कऽ वर्त्तमान पिरहीक साहित्यकारकेँ ऐ दिशामे सजग रहए पड़त।

१९.पोथी- **समीक्षा भावांजलि**

नैसर्गिक आ आत्मिक भावसँ निकसैत कविताकेँ आशु कविता कहल जाइत अछि। ऐ भावक सृष्टि आशुकवि वा आशु कवयित्री मानल जाइत छथि। आशु कवितामे मैथिली साहित्यक स्थान एकात परंच विलक्षण। कवि कोकिल विद्यापति, कविशेखर बदरीनाथ झा, कविवर सीताराम झा, सरस कवि ईशनाथ झा, कवीश्वर चन्दा झा, कवि चूड़ामणि मधुप, कवि सरोज भुवन, यात्री, आरसी, अणु, गोपेश, श्रीमति श्यामा देवी, चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', रवीन्द्र, सरस, नवल, श्रीमति इलारानी, सुरेश सिंह स्नेही, प्रवासी, विभूति आनंद, प्रदीप मैथिली पुत्र, मणिपद्म, नचिकेता, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, राजदेव मंडल, श्रीमति ज्योति सुनीत चौधरी, विलट पासवान विहंगम, हासमी जी, मंत्रेश्वर झा, राजकमल, अशोक दत्त, रूपेश कुमार त्योंथ, जगदीश प्रसाद मंडल, चन्द्रशेखर कामति, उमेश मंडल, कीर्ति नारायण मिश्र, मायानंद मिश्र, कुमार पवन, डॉ. शंभु कुमार सिंह, श्रीमती मृदुला प्रधान, श्रीमती कुसुम ठाकुर, विवेकानंद ठाकुर, चन्द्रभानु सिंह, कालीकान्त झा 'बूच', रमाकान्त राय रमा, डॉ. केदारनाथ लाभ, जय प्रकाश जनक, डॉ. नरेश कुमार विकल, गजेन्द्र ठाकुर प्रभृत आशु कवि आ कवयित्री सभसँ जगमगाइत मैथिली साहित्य सरितामे एकटा चंचला मुदा अर्न्तमुखी नक्षत्रक उदय मैथिली साहित्यकेँ घृतगंधा बनौने अछि- ओ छथि डॉ. शेफालिका वर्मा।
हिनक तृण-तृणमे काव्य धारा अविरल गतिसँ गतिमान अछि। ओना तँ विप्रलब्धा आ मधुगंधी बसात सन कविता संग्रहक रचना कऽ अपन विशेष स्थान बनौने छथि शेफालिका जी। मुदा हिनका एकटा गद्य गीत संग्रह 'भावंजलि' मैथिली भाषा साहित्यमे कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोरक स्थान शून्यताकेँ भरबाक लेल पूर्णत: नै तँ आंशिक रूपेँ अवश्य प्रतीत हएत।

जीवनक वास्तविक संरचना, एति, उदेश्य, दुख-दुख, आश-छोहसँ ऐ रचनाक कोनो संबंध नै। ककरा प्रतीक्षा अनचिन्ह सिनेह, अकथ्य मर्मक अकुलाएल अनुभूतिकेँ ऐ गद्य-गीतमे प्रदर्शित कएल गेल अछि- ई संभवत: त्रिवेणीक वाक् धारा जकाँ मात्र अनुभूति एकल जा सकैछ, प्रत्यक्ष दर्शन नै। स्वभाविक अछि पुष्प, नीर, क्षीर आ अमिय-गुग्गुलक अंजलि तँ देखबाक योग्य होइत अछि, 'भावांजलि'केँ कोना देखल जाए? हिन्दी काव्य गगनक आत्मा- 'एक भारतीय आत्मा'क प्रेमक विवेचन असंभव तँ नै मुदा अति क्लिष्ट- है कौन सा

वह तत्व जो सारे भुवनमे व्याप्त है, ब्रह्माण्ड पूरा भी नहीं जिसके लिए पर्याप्त है?

कवयित्रीक हंसिनी मोन विरहक शंकामे जरैत अछि तँ दोसर दिस मिलनक उन्मादसँ दीपित अछि। सिनेहिल स्पर्शक आश तँ करैत छथि मुदा स्पर्शनक कल्पना मात्रसँ सिहरि जाइत छथि। समस्त तन सितारक तार जकाँ झंकृत भऽ जाइत छन्हि।

ऐ सिनेहक बिम्ब तँ अनमोल मुदा ककरासँ सिनेह? कतौ नाथक रूपैँ भगवान बुझना जाइत छथि तँ कतौ कंतक भान। कतौ स्पर्शनसँ वैराग्य भावक प्रदर्शन तँ कतौ स्पर्शनक आशमे नैका वनिजाराक नायिका जकाँ- 'उत्ताप प्रेम तिल सुनगि रहल नै आब ई यौवन अछि वशमे'

मात्र एकावन पृष्ठक पोथीमे राजा भर्तृहरिक नीति, श्रृंगार आ वैराग्य तीनू गोट शतकक दर्शन ऐ गद्य गीतकेँ विलक्षण बना देलक।

मृत्युसँ वएह प्रेम कऽ सकैत अछि जे जीवनसँ उबि गेल हो वा जीवनक पूर्णताकेँ देख नेने हुअए। जै कालमे शेफालिका जी ऐ पोथीक रचना कएलनि ओइ काल जीवनमे शून्यता तँ नै छल। पूर्णता ऐ दुआरे नै कहि सकैत छी जे ओइ समैकेँ छोड़ल जाए हिनक लेखनी एखन धरि गतिशील अछि। आब प्रश्न उठैत अछि जे जीवनक गति आ नियतिमे जीवंत नारीक जीवनक कोन अकथ्य व्यथाक चित्रण ऐ पोथीमे कएल गेल जे मृत्युक अवाहन कऽ लेली।

ऐठाम तीर्थस्थानक बिम्बक विश्लेषणमे गृहस्थ जीवनकेँ परम तीर्थ स्थल बना देल गेल। कवयित्रीक लघुआत्मामे सभ देव-देवी समाएल अछि।

अंतिम पद्यमे संभवत: अपन पतिकेँ अपन इष्टदेवक संग-संग प्रेरणा स्त्रोत, रक्षक, पिता भाय सभ रूपमे मानने छथि। तखन अदृश्य मृगमारीचिका कतऽ सँ आएल?

रचनाक सभटा पक्ष तँ बड़ नीक अछि मुदा दुर्बल पक्ष अछि अनुत्तरित प्रश्न पाठक धरि कोना परसल गेल? ई सत्य अछि जे आदित्यक अंशु सेहो कविताकेँ इजोरिया नै दऽ सकैत अछि मुदा एहेन कवित्वक प्रदर्शन समीचीन नै लागल। भऽ सकैत अछि जे आशु कविताक नवल धारा कवयित्रीक गातसँ स्वत: स्फूर्त रूपैँ अंकुरित भेल हुअए।

भौतिकता आ बौद्धिकतापर सिनेह भारी बुझना गेल। सिनेहक प्रकार भिन्न-अकथ्य

सिनेह। स्व. मनमोहन झा'क 'यात्राक स्मृति'क नायकक दृष्टिसँ सुमित्राक प्रति उपटल सिनेहो ऐ काव्य गीतक आगाँ ओछ पड़ि जाइत अछि। अपराध कएलापर अपराधबोध प्रासंगिक मुदा बिनु अपराध कएने अपराधक लेल क्षमायाचना, ककरासँ क्षमायाचना इहो स्पष्ट नै।

सम्पूर्ण रचनामे प्रश्न- नव-नव प्रश्न मुदा ककरो दोसर लेल प्रश्न नै कवयित्री तँ अपन जीवनसँ प्रश्न पुछैत छथि।

हमरा मतेँ देसिल वयनामे 'भावांजलि' नव प्रकारक रचना थिक। अपन आत्मासँ साक्षात्कार, निर्विकार ब्रह्माण्डसँ साक्षात्कार......।

पोथीक नाओं- भावांजलि
कवयित्री- डॉ. शेफालिका वर्मा
प्रकाशन वर्ष- १९९६

२०.कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक- (समीक्षा)

किछु लोकक ई प्रवृति होइत अछि जे सदिखन अपन चल जीवनमे नव-नव प्रकारक प्रयोग करैत रहैत अछि। ऐ नव प्रयोगक कारण जहानमे अपवर्गक विहान देखएमे अबैत अछि। प्रयोग धर्मिता व्यक्तिक इच्छासँ नै जन्म लऽ सकैछ, ई तँ नैसर्गिक प्रतिभाक परिणाम थिक। मैथिली साहित्यमे प्रयोग धर्मी सरस्वती पुत्रक अभाव नै परंच वर्तमान कालमे एकटा एहेन प्रयोगधर्मी मिथिला पुत्रकँ माॅ मिथिले अपन ऑचरमे सक्रिय कएलनि, जे तत्कालिक मैथिलीक दशा वदलवाक प्रयास कऽ रहल छथि। क्रांतिवादी आ सम्यक विचार धाराक सम्पोषक ओ व्यक्ति केओ अनचिन्हार नै- मैथिली साहित्यक प्रथम अंतर्जाल पाक्षिक पत्रिका विदेहक सम्पादक- श्री गजेन्द्र ठाकुर छथि। भऽ सकैत अछि जे किछु लोक मैथिली साहित्यकेँ अन्तर्जालसँ जोड़वाक प्रयास कए रहल हएताह परंच एकटा मूर्त्त रूप दऽ ६४ अंक धरि पहुँचेवाक कार्य गजेन्द्रे जी कएलन्हि। साहित्यक नव-नव विधा आ समाजक वेमात्र वर्गकेँ मैथिलीक आलिंगनमे आवद्ध कऽ साम्यवाद आ समाजवादकेँ वैदेहीक माटिपर आनि हमरा सबहक माथपर लागल अनसोहांत कलंककेँ धो देलनि। मात्र ६४ अंकमे जे कार्य भेल अछि ओ कतऽ-कतऽ पहिने भेल छल, आत्म अवलोकन करबाक पश्चात् जानल जा सकैत अछि। समाजक फूजल, बेछप्प आ उदासीन वर्गकेँ अपन वयनाक मानस पटलपर आच्छादित करबाक लेल साहस सभ केओ नै जुटा सकैत अछि। मात्र भाॅज पुरयवाक लेल मानस पुत्र एहेन कार्य नै कएलनि, ओइ उपेक्षित वर्गक रचना कारक रचनामे विषए-वस्तुक गतिशीलता आ तादात्म्य वोध ककरोसँ कम नै अछि। प्रयोगधर्मी गजेन्द्र जीक कर्मक दोसर आमुख थिक हिनक लेखनीक धारसँ निकलल इन्द्रधनुषक सतरंगी गुलालसँ भरल भावक आत्मउदवोधन- ‘‘कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक’’

ऐ पोथीकेँ की कहल जाए उपन्यास, गल्प, बाल साहित्य, समालोचना, प्रवंध वा काव्य? साहित्यक सभ विधाक अमिर रसकेँ घोरि वंगोपखाड़ी वना देलनि जतए ई कहब असंभव अछि जे गंगा, कोशी, यमुना वा हुगली ककर नीर कतए अछि?

शीर्षक देख अकचका गेल छलहुँ, ई महाभारत मचौता की! मुदा अपन हृदेसँ सोचल जाए प्रत्येक मानवक हृदेक दूटा रूप होइत अछि मुदा अन्तर्मन सदिखन सत्य बजैत अछि ओइठाँ मिथ्याक स्थान नै।

कुरूक्षेत्र रणभूमि अवश्य छल परंच ओइठाँ सत्यक विजयक लेल युद्ध भेल। ओइठाँ धर्मसंस्थापनार्थ विनाश लीला मचल छल। हमरा सभकेँ अपन अन्तर्आत्मामे कुरूक्षेत्रक दर्शन करएवाक लेल दिशा निर्देशन कऽ रहल छथि गजेन्द्र जी।

मैथिली साहित्यक कोन असत्यकेँ त्याग करबाक चाही? किअए सुमधुर वयनाक एहेन दशा भेल? नव पथक निर्माण नवल दृष्टिकोणसँ हएत। हमरा बुझने ऐ पोथीमे साहित्य समागमक लेल दृष्टिकोणकेँ प्राथमिकता देल गेल अछि। एहेन विलक्षण साहित्यपर आलेख लिखव हमरा लेल आसान नै अछि- मुदा दु:साहस कऽ रहल छी-

भऽ रहल वर्ण-वर्ण नि:शेष
शब्दसँ प्रकटल नहि उधेश्य
मोनमे रहल मनक सभ वात
अछिंजलसँ सध: स्नात

सात खण्डमे विभक्त ऐ पोथीकेँ सम्पूर्ण परिवारक लेल सनेश कहि सकैत छी।

प्रवंध-निवंध-समालोचना:- ऐ खण्डक आदि लोकगाथापर आधारित कथा सीत-वसंतसँ कएल गेल अछि। उत्तर मध्यकालीन इतिहासमे अल्हा-ऊदल, शीत वसंत सन कतेक कथा प्रचलित छल, जकर मंचन पद्यक रूपमे वर्तमानकालमे विहारक गाम-गाममे भऽ रहल अछि। एक राज परिवारक विषए-वस्तुक चित्रण करैत लेखक सतमाएक सिनेहपर प्रश्न चिन्ह लगैवाक प्रयास कएलनि अछि? कथाक आरंभसँ इति धरि मर्मस्पर्शक अनुभव होइत अछि। कथाक अंतमे विमाताकेँ ओइ पुत्रक छाया भेटलनि जकर पराभव ओ कऽ देने छलीह।

श्री मायानन्द मिश्र मैथिली साहित्यक सभ विधाक मांजल साहित्य कार मानल जाइत छथि। हुनक इतिहास वोधक चारू प्रमुख स्तंभ प्रथमं शैलपुत्री च, मंत्रपुत्र, पुरोहित आ स्त्रीधनपर सम्यक आलेख प्रस्तुत कऽ गजेन्द्र जी पूर्वमे लिखल गेल प्रबंधक दृष्टकोणकेँ चुनौती दऽ रहल छथि। ऋृग्वैदिक कालीन

इतिहासपर आधारित मंत्रपुत्र मायानन्द जीक प्रमुख कृति मानल जाइत अछि। ऐ पोथीक लेल माया जीकेँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल अछि। मंत्रपुत्र पाश्चात्य इतिहाससँ प्रभावित अछि। मंत्रपुत्रक संग-संग पुरोहितमे सेहो पाश्‍चात्य संस्कृतिक झलकि देखए अबैत अछि। अपन समालोचनाकेँ गजेन्द्र जी अक्षरश: प्रमाणित कऽ देने छथि मुदा मायाबाबूक रचना संसारपर कोनो तरह प्रश्न चिन्ह नै ठाढ़ कएलनि। समीक्षाक रूप एहने होएवाक चाही। समीक्षककेँ पूर्वाग्रह रहित रहलासँ साहित्यिक कृतिक मर्यादा भंग नै होइत अछि।

केदारनाथ चौधरी जीक दू गोट उपन्यास 'चमेली रानी' आ 'माहुर'पर गजेन्द्र जीक समीक्षा पूर्णत: सत्य मानल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यमे बहुत रास रचनाक विक्री सम्पूर्ण मैथिल समाजमे जतेक नै भऽ सकल, 'चमेली रानी'क ओतेक विक्री मात्र जनकपुरमे भेल। ऐसँ ऐ साहित्यक प्रति पाठकक श्रद्धाकेँ देखल जा सकैत अछि। 'माहुर' मैथिली साहित्यक लेल क्रांतिकारी उपन्यास थिक। अरविन्द अडिगक कृतिक चरित्रसँ ऐ उपन्यासक एक पात्रक तुलना लेखकक भाषायी समृद्धताकेँ प्रदर्शित करैत अिछ।

विदेह-सदेहक सौजन्यसँ श्रुति प्रकाशन द्वारा नचिकेता जीक एकटा नाटक 'नो एण्ट्री मा प्रविश' प्रकाशित भेल अछि। ऐ नाटकक लेखनपर नचिकेता जीकेँ कीर्ति नारायण मिश्र सम्मान देल गेल अछि। नाटकक चारू कल्लोलक तर्क पूर्ण विश्लेषण कऽ गजेन्द्र जी समीक्षाक रूप बदलवाक प्रयास कएलनि अछि। ऐ नाटकमे तार्किकता आ आधुनिकताक विषए-वस्तु निष्ठताकेँ ठाम-ठाम नकारल गेल अछि।

रचना लिखवासँ पहिने अध्यायमे गजेन्द्र जी मैथिली साहित्यमे भाषा सम्पादनपर विशेष धियान देबाक प्रयास कएलनि। अपन साहित्यमे भाषायी त्रुटिपर पूर्णरूपसँ धियान नै देल जा रहल अछि।

कविशेखर ज्योतिरीश्वर, विद्यापति शब्दावली, रसमय कवि चर्तुभूज शब्दावली आ बद्रीनाथ शब्दावली द्वारा मिथिला-मैथिलीक सर्वकालीन शब्द विन्यासक आ शब्द भंडारक विस्तृत वर्णन कएल गेल अछि। ऐसँ निश्चय भाषा सम्पादनमे सहायता भेटल। कतेक रास एहेन शब्द अछि जकर विषएमे हम की साहित्यक पैघ-पैघ वेत्ता पहिने नै जनैत होएताह। निश्‍चित रूपसँ ई अध्याय पाठकक संग-संग साहित्यकार आ असैनिक सेवाक ओइ प्रतियोगीक लेल उपयोगी हएत जे

मैथिलीकेँ मुख्य विषएक रूपे प्रतियोगितामे सम्मिलित होएवाक लेल प्रयत्नशील छथि। समीक्षक हमरा सबहक मध्य एकटा नव पद्य विधाक चर्च कऽ रहल छथि- हाइकू। ऐ विधापर मैथिलीमे पहिनहुँ रचना होइत छल जेना- ‘‘ई अरदराक मेघ नै मानता रहत बरसिकेँ। मुदा ऐ विधाकेँ क्षणिका नाओसँ जानल जाइत छल। जापानी साहित्यक द्वारा सृजित ऐ पद्य रूपक वास्तविक चित्रण मैथिली साहित्यमे गजेन्द्र जी आ ज्योति झा चौधरी कएलनि अछि।

मिथिलाक लेल प्रलय कहल जाए वा विभीषिका- ‘बाढ़ि’ ई शब्द सुनितहि कोशी, कमला, बलान, गंडकी, बागमती आ करेहक आंतसँ ओझराएल लोक सभ काँपि जाइत छथि। ऐ समस्याक स्थिति, सरकारी प्रयासक गति आ दिशाक संग-संग बचवाक उपाएपर लेखकक दृष्टिकोण नीक बुझना जाइत अछि।

कोनो ठाम आ कोनो आन धाममे जौं हमरा लोकनिक विषएमे पता चलए-की मैथिल छथि, लोकक दृष्टकोण स्पष्ट भऽ जाइत अछि- हम सभ मछगिद्धा छी। एकर कारण जे धारक कातमे रहनिहार जीवक जीवन जलचरे जकाँ होइत अछि।

जलीय जीवक भक्षण अधिकांश व्यक्ति करैत छथि। तँए ने हमरा सभकेँ माँछ आ मखानक प्रेमी बुझल जाइत अछि, आ वास्तवमे हम सभ माँछक प्रेमी छी। अधिकांश मैथिल ब्राह्मण परिवारमे सोइरीसँ श्राद्ध धरि माँछक भक्षण अनिवार्य अछि। आन जातिमे अनिवार्य तँ नै अछि मुदा ओहु वर्गक अधिकांश लोक माँछक प्रेमी छथि। लेखक ऐ लोकक भक्षण धारकेँ धियान धरैत कृषि मत्स्य शब्दावली लिखलन्हि अछि।

ऐमे सभ प्रकार माँछक आकार, रंग, रूपक विश्लेषण कएल गेल अछि। कृषिकार्यक लेल जोड़ा वरदक संग हर पालो इत्यादिक ज्वलन्त व्यवस्थापर लेखकक विचार नीक मानल जा सकैत अछि। करैल, तारवूज आ खीराक विविध प्रकारक नाओं सुनि गामक जिनगी स्मरण आबि जाइत अछि।

ऐ खण्डक सभसँ नीक विषए जे हमरा अन्तर्मनकेँ हिलकोरि देलक ओ अिछ विस्मृति कवि- पंडित राम जी चौधरीक रचना संसारपर प्रवाहमय आ विस्तृत प्रस्तुति।

हमरा सबहक भाखाक संग किछु विषमता रहल जे ऐमे कतेक रास एहेन रचनाकार भेल छथि जे अपने संग अपन रचनाकेँ गेंठ बन्हने विदा भऽ गेलाह।

एकर कारण ऐमे सँ किछु रचनाकारक रचनाक संकलन नै भऽ सकल वा भेवो कएल तँ पाठक धरि नै पहुँचल। ऐ लेल ककरा दोष देल जाए रचनाकारकैँ आ हमरा सबहक भाषाक तत्कालीन रक्षक लोकनिकैँ? ऐ भीड़मे राम जी चौधरीक नाओं सेहो अछि। मैथिली साहित्यमे रागपर लिखल रचनामे राम जी बाबूक रचना सेहो अछि। भक्तिमय राग विनय विहाग, महेशवाणी, ठुमरी तिरहुता, ध्रुपद, चैती आ समदाओनक रूपमे हुनक लेखनीसँ निकलैत गीत सभ अलम्य अछि। शास्त्रीय शैलीक मैथिली गायनमे वर्तमान पिरहीक लेल अत्यन्त उपयोगी रचना सभकैँ प्रकाशमे आनि गजेन्द्र जी मिथिला, मैथिली आ मैथिलपर पैघ उपकार कएलनि अछि। सत्यकैँ स्वीकार करबाक सामर्थ्य मात्र किछुए लोकमे होइत अछि। गजेन्द्र जी ओइ लोकक पातरिमे ठाढ़ एक व्यक्ति छथि परिणामत: मैथिली साहित्य भोजपुरीसँ आगाँ मानल जाइत अछि मुदा गुणवताक दृष्टिए भोजपुरी रास परिमार्जित अछि। भोजपुरी साहित्यक काल पुरूष भिखारी ठाकुरक मर्म स्पर्शी विदेशिया ऐ भाषाक अलग पहिचान भेटल। मैथिली भाषामे विदेशियाक कमीक मुख्य कारण रहल-प्रवासक प्रति उदासीनता। जौं लिखलो गेल तँ महाकाव्यक रूप दऽ देल गेल। विदेशिया पद्य आ विधापतिक लिखल? हमरो विश्वास नै भेल छल। विद्यापतिकैँ मुख्यत: श्रैंगारिक कवि मानल जाइत अछि। ओना हुनक रचनाकैँ भक्ति रससँ सेहो जोड़ल जाइत अछि। कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक पोथी पढ़लासँ नव सोच मोनमे आबि गेल। जकरा भोजपुरी साहित्यमे विदेशिया कहल गेल वास्तवमे मैथिलीमे ओ अछि- पिया देशान्तर।

विद्यापतिक नेपाल पदावलीमे ऐ प्रकार रचना सभ संकलित अछि मुदा कहियो ऐ रूपे महिमा मंडित नै कएल गेल। कारण स्पष्ट अछि पिया देशान्तरक नाटय रूप मिथिलाक पिछड़ल जातिक मध्य प्रदर्शित कएल जाइत अछि। तँए अग्रसोची लोकनि एकरासँ दूरे रहव उचित बुझैत छथि। ऐसँ मैथिलीक दशा-दिशाकैँ नव गति कोना भेटि सकैत अछि। मैथिली लोकभाषा अछि, लोक संस्कृतिकैँ बढ़यवाक प्रयास करबाक चाही। गजेन्द्र जीक सोझ दृष्टिकोणकैँ बिम्बित करबाक चाही।

''एतहि जानिअ सखि प्रियतम व्यथा'' श्रैंगारिक-विरह व्यथाक वर्णन मुदा अछि तँ पिया देशान्तर।

श्री सुभाष चन्द्र यादव जीक कथा संग्रह 'बनैत-विगड़ैत'पर गजेन्द्र जीक

समीक्षा अपूर्व अछि। प्रवेशिकामे हुनक कथा 'काठक बनल लोक' पढ़ने छलहुँ। काठक बनल लोकक नायक वदरियाक मर्म देख पाथरो पिघलि जा सकैत अछि। वास्तवमे सुभाष जी मैथिली साहित्यक फनीश्वर नाथ रेणु छथि। महिमा मंडनक कालमे मात्र भाँज पुरएवाक लेल हिनक कथा पाठ्यक्रममे दऽ देल जाइत अछि। आंचलिक रचनाकेँ कहिया धरि उपहासक पथियामे झॉंपि कऽ राखल जाएत? एक नै एक दिन छीप उधिया जएत आ सत्यक सामना करए पड़त। लोक धर्मी साहित्यकार चाहे ओ धूमकेतु, कुमार पवन कमला चौधरी, सुभाष चन्द्र यादव, जगदीश प्रसाद मंडल वा कोनो आन होथु- हुनका सबहक रचनाक उपेक्षा नै होएवाक चाही। सुभाष जीक कथा कनिया-पुतरा, बनैत-विगड़ैत आ दृष्टिक समीक्षा देख समए-कालक दशाक अविरल द्वन्द्व उपस्थित भऽ जाइत अछि। ऋृणी छी जे गजेन्द्र बाबू ऐ पोथीपर समीक्षा लिखलन्हि। इंटरनेटक लेल अन्तर्जाल प्रयोग, नीक लागल। वेवसाइट बनएवाक तकनीकसँ गजेन्द्र जीक उद्बोधन आ नियमन नै बुझि सकलहुँ। तीन वेरि पढ़लहुँ मुदा जेठक तेज विहारि जकाँ मॉथपरसँ उड़ि गेल। नव-नव नेना भुटका बुझि जएताह। तकनीकी युगक नेनाक स्मरण शक्तिक ऑगन पैघ होइत छथि तँए हुनके सबहक लेल ऐ अध्यायकेँ छोड़ि देलहुँ।

लोरिक गाथा समाजक उपेक्षित वर्गक संस्कृतिपर आधारित अछि। सहरसा-सुपौलक वीर आदि पुरूष लोकिकक परिचए-पातमे पौराणिक मैथिल संस्कृतिक दर्शन होइत अछि।

मिथिलाक खोजमे जनकपुर, सुग्गा धनुषा सन नेपालक स्थलसँ लऽ कऽ मधुबनी जिलाक कतेको उत्तर मैथिल गामसँ दक्षिणमे जयमंगलागढ़ (वेगूसराय)क चर्च कएल गेल अछि। पूवमे पूर्णिया किशन गंजक कतेक स्थलसँ लऽ पश्चिममे चामुण्डा (मुजफ्फरपुर)क मॉ दुर्गाक मंदिरक चर्च कएल गेल अछि।

मिथिलाक किछु स्थानक वर्णन ऐ सुचीमे नै भेटल जेना- सती स्थान (गाम-शासन प्रखंड-हसनपुर जिला- समस्तीपुर) आ उदयनाचार्यक जन्म स्थली (गाम-करियन जिला- समस्तीपुर)। ऐ लेल लेखककेँ दोष नै देल जा सकैत अछि, किएक तँ मिथिलाक खोज विदेहसँ लेल गेल अछि, जइमे गजेन्द्र जी अवाहन कएने छथि, जे जिनका लग कोनो प्रसिद्ध स्थलक विषएमे जानकारी हुअए जे ऐमे सम्मिलित

नै अछि तँ ओकर छाया चित्रक संग सूचना पठाओल जाए। किछु स्थल आर छूटल भऽ सकैत अछि, प्रवुद्ध पाठक ऐ विषएपर कार्य कऽ सकैत छी।

सहस्त्रवाढ़नि उपन्यास :- सहस्त्रवाढ़नि एकटा आकाशीय पिण्ड होइत अछि, जकर दर्शन आर्यक धार्मिक दृष्टिकोणमे अछोप बुझना जाइत अछि मुदा उपन्यासकार एक अछोप पिण्डकेँ आत्मसात् करैत एकरा सावित्री बना देलनि। सावित्री अपन पातिब्रत्य आ दृढ़ निश्चयसँ सत्यवानक प्राण यमराजसँ छीनि लेने छलीह। ऐ उपन्यासक दृष्टिकोण तँ एहन नै अछि परंच उपन्यासक नायक आरूणिक मृत्युपर विजयमे सहस्त्रवाढ़निक उत्प्रेरणक उद्बोधन कएल गेल अिछ। कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक मूल पृष्ठपर सहस्त्रवाढ़निक चित्र देल गेल अछि। ऐसँ प्रमाणित होइत अछि रचनाकारक दृष्टिमे सम्पूर्ण पोथीक सातो खण्डमे ऐ उपन्यासक विशेष महत्व अछि। सहस्त्रवाढ़निक अध्ययन कएलापर उन्नैसम शताब्दीक उतरांशसँ वर्तमानकाल धरिक वर्णन कएल गेल अछि।

एक परिवारक एक सए पंद्रह बरखक कथाक वर्णनकेँ कल्प कथा मानव निश्चित रूपसँ रचनाकारक भावनापर कुठाराघात मानल जाएत। सध: ई कथा रचनाकारक पॉजड़िक कथा अछि। जौं एकरा गेजेन्द्र बाबूक आत्मकथा मानल जाए तँ संभवत: अति शयोक्ति नै हएत।

उपन्यासक आदि पुरूष झिंगुर बाबू एकटा किसान छथि। जनिक घरमे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक स्थापना बर्ख सन् १८८५ई.मे एकटा बालक जन्म लेलन्हि-कलित। कलितक नेनपनसँ ऐ उपन्यासक श्री गणेश कएल गेल। कलितकेँ ओइ कालमे वंगाली शिक्षकसँ अंग्रेजीक शिक्षण व्यवस्था दरिभंगामे कएल गेल। ऐसँ दू प्रकारक भावक वोध होइत अछि। पहिल जे झिंगुर बाबू समृद्ध लोक छलाह। ओइ कालमे अवहट्टक शिक्षा सेहो गनल गुथल परिवारमे देल जाइत छल, अंग्रेजीक कथा तँ अति विरल छल। दोसर जे वंगाली लोक हमरा सभसँ शिक्षाक दृष्टिमे आगाँ छलाह। वंगाली जातिक अंग्रेजी शिक्षक, हम सभ कतेक पाछाँ छलहुँ जे हमरा सबहक संस्कृतिक राजधानी दरिभंगामे कोनो मैथिल अंग्रेजी शिक्षक झिंगुर बाबूकेँ नै भेटलन्हि।

सौराठ आ ससौलाक सभा गाछीक चर्च तँ बेर-बेर कएल जाइत अछि मुदा ऐ पोथीमे विलुप्त सभा बलान कातक गाम परतापुरक सभा गाछीसँ कथाकेँ जोड़वाक दृष्टिकोण अलग मुदा नीक बुझना जाइत अछि। कलितक विवाहमे वर

महफामे, बूढ़ वरियाती कटही गाड़ीमे आ जवान लोकक पैदल जाएब वर्तमान पीढ़ीक लेल अजगुत लागत मुदा अपन पुरातन संस्कृतिसँ नेना-भुटकाकेँ आत्मसात कराएव आवश्यक अछि। कलितक मृत्युक पश्चातक कथा हुनक छोट पुत्र- नंद-क परिधिमे धूमए लागल। नंदक पारदर्शी सोच, अपन कनियासँ प्रत्यक्षत: गप्प करब, तृतीय पुरूषक रूपे संवोधन नै। मिथिलामे वर-कनिया, सासु-पुतोहु, साहु जमाएक गप्पमे तृतीय पुरूषक संवोधन अनिवार्य होइत अछि। ऐ प्रकारक व्यवस्थाक विरूद्ध नंदजी अपन नवल सोचकेँ केन्द्रित कएलन्हि। वर-कनियाँक संवंध स्वाभाविक रूपेँ तँ समझौता मात्र होइत अछि परंच संसारक व्यवस्थामे सभसँ पवित्र आ अपूर्व संबंध यएह होइत अछि। जीवन भरि निर्वहन कोनो एक जनक संग छूटलापर दोसरमे व्यथा..... अकथ्य व्यथा। तँए ऐ संबंधमे प्रत्यक्ष संवोधन होएवाक चाही। हमर दृष्टिकोण ई नै जे अपन संस्कृति पराभव कऽ देबाक चाही मुदा संस्कृति आ व्यवस्थाकेँ सेहो कालक गतिमे परिवर्तनक अनिवार्यता प्रतीत होइत अछि।
आर्यावर्त्त न्याय, कर्म, मीमांसा सन प्रांजल दर्शनक आर्विभाव भूमि मानल जाइत अछि। ऐ खण्डमे एकटा नव दर्शनसँ मिथिलाक भूमिकेँ वैशिष्ट्ता प्रदान कएल गेल ओ अछि- इमान आ मर्मक बिम्बमे संबंधक मर्यादा। नंद बाबू इंजीनियर छलाह। जौं अपन धर्मकेँ किछु ढील कऽ दैतथि तँ भौतिकताक बाढ़िसँ परिवार ओत-प्रोत भऽ सकैत छल। मुदा एना नै कऽ सतत अपन कर्मकेँ साकार सत्यसँ बान्हि लेलन्हि। स्वाभाविक अछि अर्थयुगमे इमानक प्रासंगिकता बड़ ओछ भऽ जाइत अछि। असमए मृत्युक पश्चात् परिवारक दशाक विवेचन मर्मस्पर्शी लागल। हुनक सत् कर्मक प्रभाव यएह भेल जे संतान सभ विशेषत: आरूणि भौतिक रूपसँ रास संपन्न तँ नै भऽ सकलाह मुदा पिताक छत्र-छायाक आंगनमे मनुक्ख भऽ गेलाह। कर्मक गतिसँ लोक राज भोगकेँ प्राप्त तँ कए सकैत अछि मुदा मनुक्ख बनवाक लेल नैसर्गिक संस्कार बेसी महत्वपूर्ण होइत अछि। तँए कहलो गेल अछि- ''बढ़ए पूत पिताक धर्मे।'' कतौ-कतौ नीच विचारक मानवक संतान मनुसंतान भऽ जाइत अछि, ऐमे दैहिक संस्कार आ प्रकृतिक लीला होइत अछि। आरूणिक दृढ़ विश्वासपर केन्द्रित ऐ उपन्यासक कथामे सतत प्रवाहक गंगधारा खहखह आ शीतल बुझना गेल। जँ कथाकेँ आत्मसात् कएल जाए तँ कोनो अर्थमे एकरा काल्पनिक नै मानल जा सकैछ। आत्मकथा स्पष्टत: नै मानि

सकैत छी, किएक तँ उपन्यासकार कोनो रूपेँ एकर उद्बोधन नै कएलनि अछि। भऽ सकैत अछि समाजक अगल-बगलक रेखाचित्र हो मुदा हमरा मतेँ ई कल्पना नै, सत्य घटनापर आधारित अछि।

उपन्यासमे एकटा कमी सेहो देखलहुँ। अंग्रेजी आखरक ठाम-ठाम प्रयोग कएल गेल जेना- एनेश्थेशिया, ओपिनियन, इम्प्रेशन आदि। ऐ सभ शब्दक स्थानपर अपन शब्दक प्रयोग कएल जा सकैत छल मुदा नै कएल गेल। हमरा बुझने हम दोसर भाखाक ओइ शब्द सभकेँ मात्र आत्मसात करी जकर स्थानपर हमर अपन भाखामे शब्दक अभाव अछि।

सहस्त्राब्दीक चौपड़पर :- कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनकक तेसर खण्ड कविता संग्रहक रूपमे अछि, जकर शीर्षक 'सहस्त्राब्दीक चौपड़पर' देल गेल। मात्र तैंतालीस गोट कविताक सम्मिलनमे श्रृंगार, विरह हैकू, विचार मूलक कविताक संग-संग एकटा ध्वज गीत सेहो अछि। इन्द्रधनुषक आसमानी रंग जकाँ प्रथम कविता 'शामिल वाजाक दुन्दभी वादक'मे क्षणिक प्रकृतिक आवरणमे स्वर-सरगमक भान होइत अछि मुदा अन्तरक अवलोकनक पश्चात् दशा पूर्णत: विलग। राजस्थानक वाद्य संस्कृतिमे एकटा दर्शक वाद्य यंत्रक प्रासंगिकताक केन्द्रनमे कविक भाव अस्पष्ट लागल। सहज अछि 'जतऽ' नै पहुँचथि, ओतऽ गएलनि कवि'। कवि स्वयं दुन्दभीवादक छथि तँए स्पष्ट दर्शन कोना हएत। हिन्दी साहित्यमे एकटा कविता पढ़ने छलहुँ 'गोरैयो की मजलिसमे कोयल है मुजरिम'। संभवत: समाजक पथ प्रदर्शकक मूक दृष्टकोणकेँ कविताक केन्द्र बिन्दु बनाओल गेल अछि। बहुआयामी व्यक्तित्वक धनी व्यक्ति सेहो जीवनक गतिमे दबावक अनुभव करैत कतौ-कतौ अपन संवेदनाकेँ दवा कऽ दुन्दभी बनवाक नाटक करैत छथि। केओ-केओ दोसरकेँ संतुष्ट करबाक लेल अपन विचारधारा वाह्य मनसँ बदैल दैत छथि। संतुष्टीकरण प्रवृति वा कोनो प्रकारक मजवूरी हो हमरा सभकेँ परिस्थितिसँ सामंजस करबाक बहाने अपन सम्यक विचारकेँ माटिक तरमे नै झँपवाक चाही। समाज जौं एकरा पूर्वाग्रह मानए तँ अपन पक्षक विवेचन कएल जाए मुदा अनर्गल प्रलापकेँ मूक समर्थक नै देबाक चाही।

मोनक रंगक अदृश्य देवालमे परिस्थितिजन्य विषमताक विषए-वस्तुक दर्शन आशातीत अछि। मन्दाकिनी.... आ पक्का जाठि शीर्षक कवितामे प्रकृति आ समाजक स्थितिक मध्य विगलित मानवतापर मूक प्रहारमे कविक नैसर्गिक मुदा

अदृश्य सोच हमरा सन साधारण समीक्षक लेल अनुबूझ पहेली जकाँ अछि। अपन पुरातन इतिहासक ओइ दिवसकेँ लोक स्मरण नै करए चाहैत छथि, जइसँ अतुल पीड़ाक अनुभव होइत अछि। त्रेता युगक घटना, कलियुग धरि पाछाँ धेने अछि। सीता जीक वियाह अगहन शुक्ल पक्ष पंचमीकेँ भेलनि, परिणाम सोझा अिछ। तखन शतानंद पुरोहित जी खरड़ख वाली काकीक विआह ओइ तिथिमे किएक करौलन्हि? भऽ सकैत अछि हुनक भाग्यमे सीताजी जकाँ गृहस्थ सुख नै लिखल दुख मुदा कलंक तँ 'वियाह पंचमी' तिथिकेँ देल गेल। ऐ कवितामे कविक दृष्टकोण तँ विधवा विआहक समर्थन करबाक अछि मुदा सवर्ण मैथिल नै स्वीकार कऽ रहल छथि। अपन पुरान सॉगह लऽ कऽ हम सभ हवड़ाक पुल बनाएवक कल्पनामे कहिया धरि ओझराएल रहव?

ऐ कविता संग्रहमे जे नव विषए बुझना गेल ओ अछि 'बारह टा हैकू'। गिदरक निरैठ, राकश थान, शाहीक मौस आ बिधक लेल शब्द-शब्द बजैत अछि।

हैकूक सार्थक अर्थ लगाएब अत्यन्त कठिन होइत अछि मुदा हमरा बुझने जौं एहेन हैकू लिखल जाए तँ नेनो सभ जे मैथिलीमे माए परिवार कुटुम्वक संग बजैत छथि अवश्य बूझि जएताह।

मिथिलाक ध्वज गीतमे मातृभूमिसँ कर्मक सार्थक गति मांगल गेल अछि। जेना गायत्री परिवारक प्रार्थना वह शक्ति हमे दो दयानिधि मे गाओत जाइत अछि। मातृ वंदनाकेँ कविता संग्रहमे देबाक हिनक दृष्टिकोण रचनाक्रममे उपयुक्त हो मुदा हमरा मतेँ एकरा कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक प्रथम पृष्ठपर वंदनाक रूपमे देल गेल रहिते तँ बेसी सुन्नर होइतए।

'बड़का सड़क छह लेन बला'मे मिथिलाक विकासक क्रमित स्थितिक वर्णन कएल गेल अछि।

सम्पूर्ण कविता संग्रहक अवलोकनक बाद कोनो पद्य अकच्छ करैबला नै लागल। 'पुत्र प्राप्ति' शीर्षक कवितामे लुधियानामे हमरा सबहक समूहक एकटा पंडितक ठकपचीसीक चर्च कएल गेल अछि। एहने ठकक कारण 'विहारी' व्यक्तिकेँ आठ ठाम लोक शंकाक दृष्टिसँ देखैत छथि। मुदा गजेन्द्रजी सँ हमर आग्रह जे ऐ कविताक पंजावी भाषामे अनुवादक अनुमति नै देल जाए नै तँ कतेको भलमानुष बनल मैथिल घुरि कऽ गाम आबि जएताह आ हमरा सबहक समाजमे कुचक्र आरो बढ़ि जाएत।

गल्प गुच्छ :: २३ गोट कथा-लघुकथाक सम्मिलन कऽ गल्प गुच्छक नाओं देल गेल। चौंसठि पृष्ठक ऐ खण्डमे समै-सालक सभ रूपकेँ बिम्वित करैत कथाकार साहित्यक समग्र विधापर लेखनक प्रयास कएलनि अछि। सर समाज कथामे अर्थनीतिक मौन प्रस्तुति नीक लागल मुदा कलात्मक शैलीक अभाव बुझना गेल। घरक मरम्मतिक बिम्वित खिस्सामे कनेक रस-प्रवाह रहितए तँ कथा आर नीक भऽ सकैत छल। हम नै जाएब विदेशमे पलायनवादक विरोध कएल गेल अछि बिम्ब तँ नीक अछि मुदा विश्लेषणमे अलंकारक तादात्म्य नै भेटल। एहेन मार्मिक विषए-वस्तुक कथा तँ ओइ प्रकारक होएवाक चाही जइसँ हियमे हिलकोरि उत्पन्न भऽ जाए। राग भैरवी छोट मुदा संस्कृतिकेँ छूबैत अछि। काल स्थान विस्थापन आ वैशाखीपर जिनगीकेँ औसत मानल जा सकैत छैक।

कोनो साहित्यकेँ ता धरि पूर्ण नै मानल जा सकैछ जा धरि समाजक अंतिम व्यक्तिसँ संबंधत भाषा साहित्यकेँ जोड़ल नै गेल हुअए। ''सर्व शिक्षा अभियान'' कथाकेँ पढ़लाक बाद मैथिली साहित्यमे दलित, पिछड़ा आदि वर्गक प्रति सरकारी योजनाक निष्फल होएबाक कारण केर स्पष्टीकरण वास्तविक लगैत अछि। पेटमे अन्नक फक्का नै हो आ पोथी मुफ्तमे भेटए, एहेन शिक्षाक स्थितिपर प्रश्न चिन्ह ठाढ़ करब स्वाभाविक अछि। साम्यवादी सोच राखएबला कथाकार कथाक बहाने स्पष्ट करए चाहैत छथि जे गरीबक मध्य जातिक आधारपर विभाजन हमरा सबहक समाजक कलुष रूप थिक। छोट उद्येश्यपूर्ण कविताकेँ क्षणिका वा हाइकूक नाओं देल गेल मुदा लघुकथाकेँ की कहल जाए? लघुकथामे बिम्बक विश्लेषण अति क्लिष्ट होइत अछि मुदा ''जातिवादी मराठी''मे मैथिली भाषाक अस्तित्वपर लागल जातिक कलंकक प्रस्तुति सराहनीय अछि। थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी विआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, अनुकम्पाक नौकरीक सभक विषए-वस्तु छोट-छीन परंच सारगर्भित लागल। जेना हिन्दी साहित्यक पत्र-पत्रिकामे चर्चित लेखक खुशबन्त सिंह मात्र दू पाँतिमे बहुत-रास गप्प लिख जाइत छथि ठीक ओहिना ऐ सभ लघुकथाकेँ पढ़ि बुझना गेल। जाति-पाति लघुकथा तँ पूर्णत: बेच्छप लागल। एकटा डोम जातिक आइ.पी.एस. परिवीक्षाधीन अधिकारीमे जातिक गरानि कोनो आत्मीय मनुक्खकेँ मर्माहित कऽ सकैत अछि। मृत्युदंड आ वाणवीरक सामाजिक बिम्बक संग-संग सामन्तवादी,

मीडियासँ संबंधित कथा सभकेँ वेजोड़ तँ नै मुदा मैथिली साहित्यक लेल नूतन-धाराकेँ स्पर्श करैबला कथा जौं मानल जाए तँ कोनो दोख नै।

आब प्रश्न उठैत अछि जे गल्प-गुच्छकेँ कोन रूपक मानल जाए। हमरा सबहक भाषाक संग दुर्भाग्य रहल जे कथाक विषए-वस्तुसँ बेसी भाषा विज्ञान, बिम्बक विश्लेसन आ शब्द विन्यासक कलाकारीपर विशेष धियान देल जाइत अछि। साहित्यक अधिकांश अधिष्ठाता एकटा गप्पपर नै धियान देबए चाहैत छथि जे रचनासँ समाजक परिदृश्यमे सम्यक जीवनक सनेश जाएत वा नै। जातिक संग-संग संतुष्टीकरण केर छद्मसँ ऊपर उठब अनिवार्य अछि नै तँ मैथिलीक अस्तित्वपर प्रश्न चिन्ह ठाढ़ भऽ जएत। भौगोलिकीकरणक परिधिमे मैथिली सभसँ बेसी प्रभावित भेल छथि। सौतिन भाषाक संग-संग पाश्चात्य संस्कृतिक प्रभावसँ वैदेही टिम-टिमा गेली। ऐ भाषामे नवल अर्चिस जड़एबाक लेल वर्ग संघर्षक स्थितिसँ ऊपर उठि कऽ कार्य करबाक चाही। पागक अभिप्राय जौं मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक संग-संग बहुल झाँपल मुदा जनभाषाक संरक्षक वर्ग धरि पहुँचबाक प्रयास कएल जाए तँ मैथिलीक दशामे फेर चारि नै आठ गोट चान लागि जाएत।

ऐ कथा सबहक कथाकार कथाक शैली ओ विवेचन जे हुअए एकर निर्णए पाठकपर छोड़ि देबाक चाही मुदा रचनाक उद्येश्य स्पष्ट अछि। गजेन्द्र जी निश्चित रूपैँ ऐ कथा संग्रहक माध्यमसँ समाजमे अपन संस्कृतिक रक्षा करैत नूतन सम्यक ज्योति जड़ाबए चाहैत छथि, जतऽ डोम, चमार, ब्राह्मण, राजपूत, मुसलमान ओ कायस्थ नै मात्र ‘‘मैथिल’’ शब्दक व्योमक परिधिमे मिथिलाक चर्च कएल जाए।

दुर्भाग्य अछि जे मैथिली पोथीक समीक्षा करबामे आलोचना-प्रत्यालोचनाकेँ मूल बिम्ब मानल जाइत छैक जखन की आन भाषामे रचनाकारक मनोवृति आ दृष्टिकोणपर धियान देल जाइत अछि।

नाटक- संकर्षण

मात्र १६ पृष्ठक नाटक, सुनबामे कनेक अनसोहाँत जकाँ लगैत अछि मुदा जौं तन्मय भऽ कऽ पढ़ल जाए तँ स्पष्ट भऽ जाइत जे हिन्दी साहित्यमे मात्र किछु कथाक कथाकार श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जीकेँ कोना आ किए आत्मसात् कऽ लेल गेल?

संकर्षण सन अभिनेता जै नाटकमे हुअए ओइमे विशेष भावक उपस्थिति स्वाभाविक अछि। अभिनेताक कोनो गुण नै मुदा गजेन्द्र जी एकरा प्रधान नायक बना देलनि। समाजक कुहरैत अवस्थाक यएह सत्य रूप थिक एक दिश महीसक चरवाह आ दोसर दिस कलक्टरक चाटुकार। मिथिलाक समाजिक बिम्बकेँ स्पर्श करैत छोट नाटक संकर्षणमे नुक्कड़ नाटकक रूप अछि। ''हौ गोनर! पानि कोना लागए देबैक एकरा। पएरक चमड़ा सड़त तँ फेर नवका आबि जाएत। मुदा ई सड़ि जाएत तखन कतएसँ अएत।'' कहवाक तात्पर्य जे जै व्यक्तिकेँ शरीरसँ बेसी किछु कैंचाक जुत्ता विशेष महत्वपूर्ण लगैत हुअए ओइ व्यक्तिमे जीवनक तादात्म्यक कोन प्रयोजन?

धर्मनीतिसँ अर्थनीति बेसी महत्वपूर्ण अछि। कालक बदलैत स्वरूपक चिन्तन करबाक योग्य- संभवत: ऐ नाटकक यएह उद्येश्य थिक। मंचन करबाक लेल एकरा कोनो अर्थमे उपयुक्त नै मानल जा सकैछ। किएक तँ पर्दा उठत आ आधा धंटामे नाटक समाप्त। मुदा जीवनक नाटकमंडलीकेँ केन्द्रित करए बला संकर्षण चिन्तन करबाक योग्य अवश्य लागल। सभटा नाटकमे कोनो ने कोनो रूपेँ हास्य आ श्रृंगारक सम्मिलन होइत अछि मुदा अइठाम अभाव किएक तँ समाजक मनोवृत्तिकेँ छुबैत ऐ नाटककेँ पढ़ि कोनो कविक एकटा कविताक एक पाँति मोन पड़ि गेल-

''ठोप-ठोप चारक चुआठकेँ आँगुरसँ उपछैत रहल छी''

गजेन्द्र जीक प्रयास छोट परंच अनुकरणीय लागल।

<u>त्वन्चाहन्च आ असंजाति मन-</u> जेना की नाओसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे दुनू काव्य ऐतिहासिक धटनाकेँ बिम्वित कऽ लिखल गेल। धर्म आ कर्मक्षेत्रक परिधिमे आर्य संस्कृतिक विवेचन नीक लागल। ऐ महाकाव्यक विषएमे मात्र यएह कहल जा सकैत अछि जे सुरेन्द्र झा सुमन, वैधनाथ मल्लिक विधु आ मार्कण्डेय प्रवासी जीक काव्य लेखन परम्पराकेँ जीवंत रखवाक प्रयास कएल गेल।

बालमंडली आ किशोर जगत- हम सभ गौरवान्वित छी जे मैथिली भाषा समग्र आर्य परिवारक भाषा समूहमे सभसँ सरस भाषा मानल जाइत अछि। साहित्य चिन्तन सेहो पाठकक गणनाकेँ देखैत ककरोसँ कम नै। मुदा एकटा पक्ष जे सभसँ कमजोर रहल ओ थिक मैथिली भाषा साहित्यमे ''बाल साहित्यक दरिद्रता।'' कहबाक लेल तँ बहुत रास लेखक वा कवि अपनाकेँ बाल साहित्यसँ जोड़वाक सतत् वाक् पटुता देखबैत छथि मुदा जौं पूर्ण रूपसँ बाल साहित्यक रचनाक गणना कएल जाए तँ जीवकांत जी सन मात्र किछु साहित्यकार छथि जिनक लेखनी ऐ दिशामे क्रियाशील रहल। जखन की बाल साहित्य जौं परिमार्जित नै हएत तँ निकट भविष्यमे मातृभाषाक स्वरूप विगलित भऽ सकैत अछि।

ऐ दिशामे गजेन्द्र जीक प्रयाससँ कृतज्ञ होएबाक चाही जे कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक सातो खण्डमे सभसँ नीक खण्ड बाल मंडली। किशोर जगतपर अपन लेखनीकेँ हाथसँ नै हृदेसँ लिखलन्हि।

ऐ खण्डमे दू गोट बाल नाटक तैइस गोट बाल कथा, वर्णमाला शिक्षा आ एक सएसँ ऊपर बाल कविता देल गेल अछि। सभ बिम्बकेँ केन्द्रित करैत लिखल गेल रचना सभक भाषा अत्यन्त सरल अछि। नेना-भुटकाकेँ एहने रचना चाही। जौं तत्सम मे बाल साहित्य लिखल जाए तँ ओकर कोन प्रयोजन? कविता सभ तँ खूब नीक मानल जा सकैत अछि-

आइ छुट्टी
काल्हि छुट्टी
घूमब फिरब जाएब गाम......।

बाल बोधक लेल अलंकारसँ बेसी मनक चंचलता उपयोगी होइत छैक तँए ऐ खण्डकेँ आलोचनात्मक स्वरूपसँ देखब उचित नै।

निष्कर्ष- सात खण्डमे विभक्त ऐ पोथीमे साहित्यक समग्र रसक स्वादन करएबाक प्रयास कएल गेल। मुदा एकर सभसँ पैघ नकारात्मक स्वरूप जे एकरा की मानल जाए? भऽ सकैत अछि सभ धाराकेँ छूबि गजेन्द्र जी मैथिली साहित्यमे एकटा नव रूपक धारा केन्द्रित करए चाहैत होथि।

एकटा पोथीमे प्रबन्ध, समालोचना, उपन्यास, गल्प, कविता संग्रह, महाकाव्यक संग-संग बाल साहित्य पोथीकेँ विशाल बना देलक। भऽ सकैत अछि समीक्षक लोकनिक संग-संग किछु पाठककेँ नीक नै लागनि मुदा हम ऐ प्रकारक प्रयोगक स्वागत करब उचित बूझैत छी। ओना पाठकक सुविधाक लेल अलग-अलग सेहो प्रकाशित कएल गेल अछि।

सभसँ बेसी प्रकाशक धन्यवादक पात्र छथि जे एतेक विशाल पोथीक नीक रूपेँ आ सम्यक् मूल्यमे प्रकाशन कएलन्हि। भाषा सम्पादन सेहो नीक लागल, शाब्दिक आ व्याकरणीय अशुद्धता अत्यन्त न्यून अछि।

पोथीक नाओं- कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक
लेखक- गजेन्द्र ठाकुर

२१.रमाजीक काव्य यात्रा

मैथिली साहित्यक काव्य धरातलपर किछु एहेन कविक पदार्पण भेल अछि जनिक समर्पण आगाँ साक्षात् सरस्वती मूक भेल छथि ओइ साहित्यिकारक समूहमे श्री रमाकान्त राय रमा'क नाओं सम्मानसँ लेल जाइत छन्हि। ५ जनवरी १९४७ ई.कँ समस्तीपुर जिलाक विभूतिपुर प्रखण्डक मानाराय टोलमे रमाजीक जन्म भेलन्हि। म.वि. दलसिंहसरायमे शिक्षकक रूपँ प्रथमत: योगदान देलन्हि आ अवकाशग्रहण उ.वि. शिरोपट्टी खतुआहाक शिक्षकक रूपमे कएलनि। संस्कृत साहित्यमे आचार्य आ विशारद्सँ विभूषित रमाजी मैथिली आ हिन्दीमे कविता अपन छात्र कालहिंसँ लिख रहल छथि। कविताक संग-संग गद्य साहित्यमे सेहो हिनक किछु योगदान छन्हि। एकटा कथा संग्रह कटैत पॉखि : हँसैत ऑखि तीनिटा बबाजी (अनुदित कथा)क संग संग विविध पत्र-पत्रिकामे हिनक कथा, निवंध आदिक प्रकाशन भेल। एकटा निवंध संकलन कूटल-छॉटल आ एकटा नाटक घर-छोड़ू हिनक अप्रकाशित कृति छन्हि।

रमा जीक पहिल कविता १९६४ई.मे मिथिला भूमिक प्रति समर्पण भावसँ मिथिला महान शीर्षक रूपँ इलाहावादसँ प्रकाशित बटुक पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल। लगभग सएसँ ऊपर कविता लिख रमाजी एखन धरि साहित्य धारामे गोंता लगा रहल छथि। ऐ यात्राक क्रममे मैथिलीक कोपभाजन सेहो भेलाह। सन् २००७ई.मे साहित्य अकादमी आ मैथिली साहित्य संस्कृति विकास परिषद् समस्तीपुरक संयुक्त तत्वावधानमे रमाजी अपन जन्मभूमि मानाराय टोलमे काव्य संध्या आयोजित करबाक योजना बना रहल छलाह। ऐ क्रममे मैथिली साहित्यक वयोवृद्ध साहित्यकार श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर जीसँ भेंट करबाक लेल दरिभंगा जा रहल छलाह। यात्राक क्रममे अपन गृह स्टेशन नरहनमे रेलगाड़ीसँ पिछड़ि गेलथि आ हिनक दहिना पएर नीचासँ कटि गेलनि। एहेन समर्पणसँ ककर हृदए नै पिघलि जाएत.....।

अमरजी अपन आत्मकथा *अतीत मंथन'मे* ऐ घटनाक उल्लेख कएने छथि। अस्पतालसँ छुट्टी भेटलापर रमाबाबू चुप नै बैसलनि आ हिनक इच्छा पूर्ण भेल। ८ जून २००८कँ मनारय टोलमे *काव्य संध्या'क* आयोजन कएल गेल। श्री चन्द्रभानु सिंह कवि सम्मेलनक अध्यक्षता कएलनि। उद्घाटनकर्त्ताक रूपमे अमरजी

आ साहित्य अकादमीक प्रतिनिधिक रूपमे मैथिली परामर्शदातृ समितिक अध्यक्ष श्री विद्यानाथ झा विदित जी उपस्थित भेल छलाह।

मात्र एतबे नै विकलांग भऽ गेलाक पश्चात् रमा जीक इच्छा शक्ति आ समर्पणमे कोनो कमी नै आएल, एखनहुँ अपन अर्द्धांगिनीक संग सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्रक काव्य गोष्ठी आ कथा गोष्ठीमे उपस्थित होइत छथि। एखन धरि हिनक दू गोट काव्य संकलन प्रकाशित भेल अछि- फूल पात आ भांगक गोला।

फूलपात- १९७८मे पल्लव प्रकाशन, मानारय टोलसँ प्रकाशित *फूलपात'मे* १५ गोट कविता संकलित अछि।

यस्याप्रभावमतुलं भगवानन्तो'क नीतिक आधारपर पहिल कविता वंदना मातृभक्तिसँ ओतप्रोत अछि। देशज छेहा मैथिलीमे लिखल गेल कविताक आवरण तत्सम मिश्रित संस्कृतसँ बनाओल गेल। स्वाभाविक अछि साहित्यक ज्ञाताक शब्द तत्समसँ दूर कोना भऽ सकैछ?

अथिर थिर नर-नारि उर जे

प्रणय लय सिरजन

मिथिला वंदना मातृभक्तिक पश्चात् जन्मभूमिक प्रति निष्ठाकँ देखबैत अछि।

स्वागत सहर्ष हे जनक देश

गौलनि गुण जकर रमा निवेश

शंकर विमुग्ध सुनि शुकक गान

हे धन्य-धन्य मिथिला महान.... ।

'जमकल रस सिंधु' कवितामे रीतिक दर्शन तँ भेल मुदा छन्द आ लयक प्रवाहमे कवि ई विसरि गेलनि जे कविता मैथिलीमे लिखने छथि आकि हिन्दीमे-

मगन चलय मन्द मन्द

मादक मधुमय मिलिन्द

मंजु मुकुल मृदु मरन्द

वासन्ती मलयानिल.....

स्वाभाविके अछि जे मैथिली साहित्यकमे ई धारणा भऽ गेल अछि जे जै पद्यक अर्थ सामान्य पाठक नै लगा सकैत छथि ओ उत्तम पद्य मानल जाइत अछि, तँए संभवत: कवि ऐ कविताक रचना मात्र प्रबुद्ध रचनाकारकँ अपन लेखनीक धारासँ मुग्ध करबाक लेल लिखलनि, सामान्य पाठकक लेल ऐ रचनाकँ कोनो रूपँ

उपयुक्त नै मानल जाए।

बाजल प्रणय वेणु कविताकेँ सरस श्रृंगार पद्य मानल जा सकैछ। बसन्त गीत कविताकेँ आरसी प्रसाद सिंह जकाँ प्रकृतिक मनोरम चित्रण करबाक प्रयास तँ कएल गेल मुदा विश्लेषण औसत मात्र भेटल-

मलयानिल नित भोरे सँ बहि
भेल विकल जगत भरि की कहि?
सुनि-सुनि आँचर ससरय
कुसुमित कानन कण-कण विहुंसय।।

हम अजेय सरल क्रांति गीत बुझना जाइत अछि। *डूबैत तरेगन'मे* पाक आ बांगला देशक प्रसंगक उल्लेख कएल गेल अछि। जौं ऐ बिम्बकेँ कविताक स्थानपर कथा रूपमे प्रदर्शित कएल गेल रहितए तँ अवश्य नीक भऽ सकैत छल।

शरद निशा' कविताक बिम्ब आ विश्लेषण दुनू प्रासंगिक अछि। मुदा एकटा बात खटकि रहल अछि जे जखन ऐ कविताक प्रकाशन फूलपातमे १९७८ई.मे रमा जी कएलन्हि तँ पुन: कर्णामृत त्रैमासिक पत्रिकाक नयना जोगिनी अंक अक्टूबर-दिसंबर २००९मे किए प्रकाशन हेतु पठा देलन्हि। ऐ सँ कविक अपन रचनाक प्रचार-प्रसारक प्रति अविश्वसनीयता झलकैत अछि। जौं एना कएलन्हि तँ संग्रहक प्रति साभार लिख देबाक चाही।

ओनी-मानी' कविता बालमनोविज्ञानकेँ नीक जकाँ देखबैत अछि-

अएथुन तोहर बाबू बौआ
कौआ बाजय काँव-काँव
रूसि रहव जँ अखनहिसँ तऽ
के देतन पीढ़ी खरॉव....।

पीढ़ीक स्थानपर पिरही लिखबाक चाही छल।

'नहि आयल चिर चोर' कविता विद्यापतिक श्रृंगार रससँ ओत-प्रोत रचना जकाँ लिखबाक प्रयास कएल गेल मुदा रमाजी होथु वा किओ आन महाकवि विद्यापतिक नकल करबाक प्रयास नै करबाक चाही।

ग्रीष्म ॠृतु आ पावस गीत सेहो सामान्य मानल जा सकैत अछि।

भांगक गोला- भांगक गोला रमाजी हिन्दी साहित्यक महाकवि हरिवंश राय वच्चन जीक मधुशालासँ प्रेरित भऽ कऽ लिखने छथि। ऐ रचनाक प्रकाशन नवंवर २००४ई.मे भेल। चारि खण्डक ऐ रूबाई संग्रहमे पहिल खण्ड ओरिआओन, दोसर भांगक गोला तेसर धोनइ धांइन आ चारिम परिशिष्ट अछि।

ऐ प्रकारक नूतन प्रयोगकेँ कोन रूपेँ देखल जाए एकर निर्णए पाठकपर छन्हि मुदा अन्तर्मनसँ कएल गेल कविक प्रयासक हम सराहना करैत छी। ऐ संग्रहमे सभसँ नीक लागल अपन देसिल वयनामे कविक मनोवृत्तिक सहज प्रदर्शन-

स्वीकार करू हम चढ़ा रहल छी

अपन पहिल भांगक गोला।

रमा जीक दुनू काव्य संकलनक दृष्टिकोण आ विश्लेषणसँ पाठककेँ की भेटल ऐसँ बेसी महत्वपूर्ण अछि हिनक साहित्य समर्पण।

अपन रचनासँ पाठकक हृदेकेँ स्पर्श करथु वा नै मुदा साहित्यक दधीचि बनि रमाजी मैथिली आ मिथिलाक आत्मामे अवश्य प्रवेश कऽ गेल छथि।

२२.सूर्यमुखी-

मैथिली साहित्यमे अंग्रेजी अथवा हिन्दी भाषा साहित्य जकाँ पद्य विधाकेँ कालक आधारपर रेखांकित नै कएल गेल अछि। किएक तँ छायावाद, हालावाद, रीति, क्रांति आदि विषए मूलक पद्यक रचना हमरा सबहक वयनामे सभ युगक साहित्यकार कऽ रहल छथि, कोनो विशेष कालकेँ एकवादसँ जोड़ब उचित आ प्रासंगिक नै।

एतदर्थ पद्य विधाक आत्मा जौं आशु कविता आ गीतकेँ मानल जाए तँ किछु पद्य संग्रह मैथिली साहित्यकेँ भारतीय भाषाक प्रवर समूहमे स्थापित करैत अछि ओइमे यात्रीजी रचित चित्रा आ पत्रहीन नग्न गाछ, चंदा झा रचित गीत सप्तसती, सीता राम झा रचित उनटा बसात, भुवन कृत आषाढ़, मधुप कृत शतदल, उपेन्द्र ठाकुर मोहन कृत बाजि उठल मुरली, सुरेन्द्र झा सुमन कृत पयस्विनी, उपेन्द्रनाथ झा व्यास रचित प्रतीक, अमर कृत गुदगुदी, गोपाल जी झा गोपेश कृत गुम्म भेल ठाढ़ छी, चन्द्रभानु सिंह रचित के ई गीत अलापि छेँ, सोमदेव कृत कालध्वनी, नचिकेता कृत कवयो: वदन्ति, रवीन्द्र नाथ ठाकुर कृत रवीन्द्र पदावली, नवल कृत असमंजस, शेफालिका वर्मा रचित मधुगन्धी वसात, श्यामादेवी रचित कामना, इलारानी सिंह रचित विन्दन्ती, मार्कण्देय प्रवासी रचित एतदर्थ, कीर्ति नारायण मिश्र सिंह कृत सीमान्त, सरस रचित आंजुर भरि सिङरहार, कालीकान्त झा बूच जीक संकलित पद्य संग्रह कलानिधि, राजदेव मंडल रचित अम्बरा, ज्योति चौधरी रचित अर्चिस प्रमुख अछि।

यात्री जीक दुनू पद्य संग्रहमे साम्यवादक धरातल चिक्कन चुनमुन आ उपेक्षितक प्रति विशेष अनुलोम भाव प्रस्फुटित भेल छै मुदा समग्र साहित्यिक विचार धाराकेँ जौं आधार मानल जाए तँ सर्वकालिक मैथिली भाषा साहित्यिक पद्य संग्रहमे *सूर्यमुखी* केँ सर्वश्रेष्ठ मानल जा सकैछ। एकर मुख्य कारण जे यात्री जीक रचनामे समाजमे साम्यवादकेँ मान्यता देबाक प्रयास तँ कएल गेल मुदा यात्रीजी असहज जीवनक मनोवृत्तिसँ कतौ-कतौ उद्वेलित भऽ कऽ पलायनवादक पक्षधर

भऽ जाइत छथि हुनक मनोदशासँ ककरो कोनो द्वेष नै, समग्र मिथिला यात्री जीक प्रतिभाकेँ नमन करैत छन्हि परंच रचनाकारकेँ अपन हृएयक व्यथाकेँ रचनापर प्रकट नै होमए देलासँ रचनाक स्तर किछु बेसी मान्य भऽ जाइछ जकर प्रत्यक्ष प्रमाण आरसी प्र. सिंह रचित सूर्यमुखी अछि। यात्री भुवन, चंदा आ मधुपकेँ छोड़ि कोनो मैथिली साहित्यकारक कविता आरसीबाबूक सूर्यमुखीक जड़ि धरि नै पहुँच सकल, डाढ़ि आ पातकेँ छूबाक कल्पना सेहो असंभव अछि।

सन् १९६९सँ लऽ कऽ १९८१ई. धरिक रचनाक संकलनमे ६१ गोट पद्यक संग-संग ३६ गोट लधुकविता संकलित अछि। सन् १९८४ई.मे *सूर्यमुखी* पद्य लेल आरसी प्र. सिंहकेँ साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित कएल गेल। रचनाक आरंभमे २२ पृष्ठक आरसी बाबूक शब्दमे लिखित प्रवेशिका सन्निहित कएल गेल अिछ। ऐ प्रवेशिकाकेँ आमुख वा भूमिका सेहो मानल जाए। कविताक परिभाषाकेँ आन अग्रणी साहित्यसँ जोड़ि कऽ जे बिम्ब तैयार कएल गेल ओकरासँ पाठककेँ काव्यधाराक प्रति निश्चित रूपेँ नव आयाम भेटत। आरसी बाबू हिन्दी साहित्यक प्रवीण कवि छथि। कवि सरोज भुवनेश्वर सिंहक प्रेरणासँ आरसी मैथिली साहित्यमे पएर रखलनि। अपन पहिल कविता *शेफालिका'क* रचना १९३६ई.मे कएलनि। ओइकाल धरि आरसी बाबूक दृष्टिकोणमे मैथिली मात्र एकटा बोली छल मुदा भाषाक हृदेमे प्रवेश करिते कृत-कृत्य भऽ गेलाह आ हिन्दी जकाँ अपन तृण-तृणमे देसिल वयनाकेँ समाहित कऽ लेलनि। शेफालिकामे आरसीकेँ सत्यक बोध भेटलनि तँ रजनीगंधामे सौन्दर्य बोध। सूर्यमुखीमे साक्षात् मंगल मूर्तिक दर्शनसँ कवि भाव विभोर भेल छथि।

सूर्यमुखी ऐ पोथीक पहिल कविता अछि कोनो एकटा कविताक शीर्षककेँ कविताक संग्रहक शीर्षक बनएबाक दृष्टिकोण कोनो पाठक लेल झाँपल नै भऽ सकैछ। निश्चित रूपेँ आरसी सूर्यमुखीकेँ अपन प्रखर कवित्वक आवरण मानैत छलथि। आदित्य आ सूर्यमुखीक मध्यक संबंध विचारणीय अपन सिनेही दिस मात्र देखबाक लेल सूर्यमुखी प्रेरणा स्त्रोत भऽ सकैछ। रीति वा प्रीतिक एहेन रूप मूक जीवे टा मे भेट सकैछ। साकार रहितहुँ आरसीक जीवन निरंकार जकाँ छल।

जलमे रहितहुँ पुरनिपातक जकाँ परंच पुष्पसँ सिनेहकेँ सीख श्रृंगारक भान स्वाभाविक, किएक तँ प्रकृतिस्थ वस्तुमे पुष्पक सौन्दर्यसँ निरंकुशोमे आसक्ति पनपि जएवाक संभावना भऽ सकैछ। *सूर्यमुखी* पद्यमे ऋृतुराजक अवाहान कालमे आन फूलक सौन्दर्यसँ सूर्यमुखीक तुलनामे परार्थ प्रेमक अनुभव अनुशासित आ निष्ठासँ कएल गेल। वसंतक माधुर्य बेलामे पारिजातकेँ अमरत्व भेटल, हरसिंगार ब्रह्मबोला मे वसुन्धराकेँ स्पर्श कएलक, रजनीगंधा रैनक मादक मधुगंधी बसातकेँ आलोकित कएलक। अभिसार पथक प्रशांत बनि बेला मधुर मिलनक स्पर्श कएलक, संगहि जूही आ चमेली सखी बहिनपा बनि वसंतकेँ उन्मादित कएलक। ऐ पावन परिणयकालमे उपेक्षित रहि गेली तँ मात्र- सूर्यमुखी। ऐ नवल विम्बित सिनेहक प्रदर्शन मैथिली की सभटा भारतीय भाषामे विरले देखैमे आबैत अछि। सूर्यमुखीकेँ भेटल मात्र तँ दिवाकरक प्रति सिनेहिल दृष्टि। जखन धरि रवि वसुन्धराकेँ देखैत छथि, तखन धरि सूर्यमुखी हुनक परम समर्पिता प्रेमिका बनि हुनके दिस तकैत छथि, रविक, ज्योति दुआरि बन्न होइते सूर्यमुखीक नयन पट बन्न। सूर्यमुखी जकाँ जौं आदित्यक कोनो आन सिनेही तँ ओ पंकज.....।

विरले आत्मा कोनो पंकजे सन उठबै छै माथा

जन्म पंक मे लैत, सरोवर-सलिल राशि कऽ लंघन

तोहर सन सौभाग्य ककर जे परम प्रकाश बनौलक

उद्घाटन ले तोहर आनने अपन चेतना दर्पण

प्रभात मे पुनीत प्रेमक झलकि *अरूणोदय* कविता मे भेटैत अछि। कोनो अनुभव मात्रक व्यथित सिनेहसँ कविक मन भीजल छन्हि मुदा अदृश्य विद्युत धारक अनुभव मात्रसँ अपन सुधि-बुधि बिसरि गेल छथि। *उगैत सूर्य कें प्रणाम* पद्यक शीर्षकसँ भान होइछ जे मात्र सकल साध्य पूर्णकेँ नमन करबाक चाही मुदा कविताक बिम्ब एकदम अलग लागल। प्रभातक लालिमासँ पहिने जगबाक उद्घोष

कऽ रहल छथि- आशुकवि। अपन स्वदेश भूमिकेँ वैश्विक मानचित्रपर स्थापित करबाक लेल ई कविता जागरण-गान जकाँ छै। *चेतना तरंग* मैथिली साहित्यमे लिखल गेल छाया गीत रूपक अनुभव करा रहल अछि। प्रकृति सौन्दर्य बोधमे महुआक भंगिमा मिथिलाक बहुत रास संस्कार परम्पराक द्योतक थिक, तँए कोइली पपिहा आ चैतीकेँ चेतना तरंगसँ जोड़ब प्रासंगिक लागल। प्रात:कालमे हरसिङार झड़ि कऽ प्रभातकेँ अनुगामी बनबैत अछि, कविक चंचल मन शरत ऋृतुक उषाकाल जकाँ आ प्राण हरसिंगार बनि गेल। रीतिक निशामे कवि अपन नाओं आ गाओं सेहो बिसरि गेल छथि ऐ आशुगीतक अनुभव *हरसिंगार* कवितामे भेल *सनातन पुरूष* कवितामे द्वैत आर्य संस्कृतिकेँ नील नदीक सभ्यतासँ जोड़ि कवि सत्य, अहिंसा, करूणा, मैत्री आ सिनेहक पाठ प्रस्तुत करैत छथि। कोनो धर्म यथा-हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, इसाइ पंथक निर्वाह करैबला लोकक आचार विचार कतवो भिन्न हुअए मुदा हृदेक स्पन्दन आ रक्तक प्रवाह सरिता सभमे सम अछि। *सनातन पुरूष* शीर्षक कविताक माध्यमसँ पाथरमे देवत्वक प्रवेश करएबाक प्रयास कएलनि। *वर्षा उल्लास* शीर्षक कवितामे पावस ऋृतु कालक चराचर जीवनक रंग भावुक लागल। *शस्य गान* कृषि प्रधान भारत भूमिक हरियरी भरल वसुधाक विप्लव चित्रण करैछ। *अखण्डता मे एकताक* दृष्टिकोण *हम एक छी* शीर्षक कवितामे देखएमे आएल परतंत्रताक कलुप अध्याय तँ सन् १९४७ई.मे समाप्त भेल मुदा आर्शिक सामाजिक आ वैश्विक दृष्टिसँ हमरा लोकनिक देश सन् १९६२ई. धरि पाछाँ रहल। चीन युद्धमे पराजयक कलंक लागल मुदा शनै: शनै: राष्ट्रीय एकताक रक्षा करैत हम सभ १९६५मे एकटा पड़ोसी राष्ट्रकेँ धराशायी केलहुँ। तदुपरांत अन्तर्राष्ट्रीय परिदृष्यमे भारत भूमिक चर्च हुअए लागल।

सन् १९६९ई.मे आरसी बाबू ऐ दशापर *हमर देश जागल* कविताक रचना कएलनि। मुदा संगहि-संग किछु व्यभिचारसँ कविक मोन उद्विग्न छन्हि-

जमाना क मोफिल, जुआनीक नटुआ

मगन भेल जनता हेरा गेल बटुआ

घरक बेचि कनियाँ

लेलक कीनि धनियाँ

भगत भेल बनियाँ, जगत ज्ञान जागल

हमर भाग जागल हमर देश जागल

सन् १९७२-७३मे मिथिला दर्शन, गोतिया आ अँजौर सन् पत्रिकामे ई काव्यगीत प्रकाशित भेल आ लोकप्रिय सेहो भेल। एकर प्रमाण जे आरसी बाबूक कवितासँ प्रेरित भऽ कऽ काव्य जगतमे प्रवेश करएबला एकटा कवि काली कान्त झा 'बूच', ऐ ऊपरलिखित कविताकेँ पढ़ि अपन प्रेरणास्त्रोतकेँ *जागरण गान* लिख समर्पित कएलनि-

असम बंग पंजाब गुजरात जागल

अहीं टा पड़ल छी उठू औ अभागल।

समाजमे जागृति उत्पन्न करबाक लेल हिन्दी साहित्यमे जे स्थान दिनकर नेपाली, सुभद्रा कुमारी चौहान आ महादेवी वर्मा सन कवि-कवयित्रीकेँ देल गेल अछि ठीक ओहिना आरसी बाबूक किछु कविता जेना जन-जागरण, राष्ट्र गीत, युवाशक्ति, राग भारू, हाक, निबोधन, ललकारा, क्रांतिपूत आदिकेँ पढ़ि मैथिली साहित्यक लेल हिनका देल जा सकैछ। *मैथिली मन्दिरमे* शीर्षक कविताक माध्यमसँ वैदेहीक संग-संग विदेह आ मिथिलाक वन्दनामे मातृत्वक सिनेह अविरल लागल।

आन भाषा जकाँ मैथिली साहित्यक संग ई बिडम्वना रहल जे कविता सभमे अधिक ठाम रीतिक आड़िमे आसक्तिक रूप अवांछित भेटैत अछि। सुमित्रा नंदन पंत जकाँ मैथिलीमे नगण्य रीति कवि छथि-

मानस मंदिर मे सती, प्रिय की प्रतिमा थाप,

जलती थी प्रिय विरह मे बनी आरती आप।

मुदा सूर्यमुखीक किछु पद्य जेना आसंगिनी, मनोरथ, मनक बात शीर्षक कविता सभमे प्रीतिक आकुलता आ लावण्य स्त्रोत कवि पंतसँ कनेको कमतर नै।

विचार मूलक कविताक रचनामे आरसी बाबूक एकटा अलग स्थान छन्हि। सूर्यमुखीमे बहुरूपिया, विभावना, आत्मज्योति, सत्यआस्वप्न, अछाह, जगजीवन, विरोधाभास, मिथ्यापाथर, युगवोधक विपति, अस्वीकृतिक आयाम, आनंदक खुजल दुआरि आ जीवन संध्या सन बहुआयामी विचारमूलक कविताकेँ संकलित कऽ पोथीक मर्यादा निश्चित रूपेँ बढ़ल। एक वस्तुकेँ प्राप्त करबाक आशमे कविकेँ कतेको बेर प्रयास करए पड़ैत छन्हि। क्षण भरिक तृप्तिक लेल सम्पूर्ण जीवनकेँ समाप्त कऽ देलनि। जकरा लेल लोक संसारक सुख-दुखकेँ किछु नै बूझैत अछि ओ कतऽ धरि लोकक संग दैत छन्हि।

बहुरूपिया शीर्षक कवितामे समाजक द्वैध नीतिक अनमोल प्रदर्शन कएल गेल। ऐ कवितामे समाजक अन्तर्द्वन्दक मध्य विषम अर्थनीतिकेँ छायावादितासँ झाँपि आरसीबाबू रचनाकेँ अमरत्व प्रदान कऽ देलनि-

एक मंगल रूप मोहन रूप दोसर घोर

एक निर्मम बनि कनाओल एक पोछय नोर

के एहन बहुरूपिया? के कऽ रहल अछि खेल?

जान ककरो जाए, उत्सव खेल ककरो लेल।

विचार मूलक कवितामे दृष्टिक महत्व होइत छै, किओ एक रूप तँ दोसर आन रूपसँ देख सकैत छथि। उपरलिखित पद्यकेँ बलि प्रथा वा दोहरि मानसिकता कोन रूपमे देखल जाए, एकर दृष्टान्त तँ आब असंभव......।

साम्यवादी वएह भऽ सकैत छथि जिनकामे व्यथा हुअए, ओ व्यथा अभावक हो वा संत्रासक मुदा जे मात्र कलमे टा मे नै, नित्य कर्ममे समग्र संसारकेँ आत्म सात्

करबाक शक्ति रखैत होथि। आरसी बाबूक जीवन सरल छलनि तँए समाजक ओछ होथि वा उच्च सबहक मानसिकतामे अभावक दर्शन करैत छलाह। कतौ जीवन जीवाक लेल साधनक अभावक दर्शन होइत छलनि तँ कतौ साधनक प्राप्तिक लगातार प्रयास करबाक क्रममे असंतोष दर्शन-

डूबै अछि देह मुइल सूर्यक प्रकाशमे,

शीशा केर भीत छेद आबै अछि पासमे

अप्पन प्रति विम्व सँ अपनहि टकराइ छी

धुआँ जकाँ बन्न घर मे हम औनाइ छी

हमरा सबहक लेल दुर्भाग्य अछि जे मिथिलाक परिधि कोशी, कमला, गंडकी, बागमती, बलान, करेह आ किछु गंगा माएक हड़होरिसँ साओन मासमे तबाह हुअए प्रारंभ भऽ जाइत अछि। ऐ बाढ़िक विनाश लीलासँ मिथिलाकेँ प्राय: प्रतिवर्ष भारी कलेषक सामना करए पड़ैत छन्हि। कविवरक जन्म भूमि समस्तीपुर जिलाक एरौत गाम बागमतीक किछेरमे छन्हि तँए ऐ विषएपर लेखनी मूक कोना राखथि। बाढ़िक हकरोस, सजल कुशल, वागमतीक धारमे आिद शीर्षक कविताक माध्यमसँ कवि जीवनक नाओं कतऽ लागत केर उद्घोष करैत छथि। बाढ़ि हकरोसमे जनजीवन परेशान भऽ जाइत अछि। मुदा एक अर्थमे बाढ़ि समाजक एकताक प्रतीक सेहो थिक-

एहन आपत्काल विसरल वैरियो अरि-भाव,

साप मूसक मिलन देखल रंक भेटल राव।

मात्र सभ जीवे टा एकत्रित रहैत छथि, किएक तँ सबहक साधन समाप्त भऽ जाइत छन्हि, प्राणकेँ तनमे रखवाक मात्र आशा तँए ककरोसँ कोनो द्वेष नै। ऐ

विषम परिस्थितिमे आरसी बाबू बहुत बेर घेराएल छलथि, तँए राजधर्मसँ निश्चित रूपेँ अवगत भेल हेताह-

खाली शुभकामनाक कोनो ने मानि,

उपछऽ मे लागि गेला हाथे सँ पानि

तर्पण मे भीड़ल छथि, जूटि कऽ किसान

दाहर मे डूबि गेल कुशलक सभ धान।

एक दिस प्रलयक भयंकर लीला मुदा दोसर दिस हमरा सबहक भौतिकवादी दृष्टिकोणक प्रवृतिमे चार्वाक दर्शनक अनुपालन आवश्यक तँए कवि मर्माहित छथि जे भोजनक अभाव मुदा अय्याशीक साधनक लेल लोक सभ उद्यत छथि-

सान्त्वनाक हस्तलिखित पोथी गलि गेल,

पान एक ढोली ले गोली चलि गेल....।

उछाह शीर्षक कवितामे कवि दु:खक सागरमे गोता तँ लगा रहल छथि मुदा कँपैत छन्हि आत्मा जे संसारमे दु:ख मुदा कतऽ जाएब।

अर्थावलम्वी संसारमे सभटा उनटा-पुनटा भऽ रहल अछि। वाचक चुप्प छथि आ गोंग वाचाल बनवाक प्रयास कऽ रहल छथि। *जगजीवन* शीर्षक कवितामे बिम्ब आ विवेचन दुनू नीक मुदा ऐ कवितासँ अपन जीवनकेँ नीरस मानएबला लोककेँ कोन प्रकारक चेतना भेटत? आरसीक अर्थ होइत अछि-दर्पण मुदा आरसी बाबूक ऐ कवितासँ दार्शनिक केँ तँ अवश्य दर्शन भेटल मुदा अल्पज्ञ समाजकेँ मात्र छोह आ आकुलताक दर्शन भेटतनि तँए ऐ कविताकेँ आरसी बाबू सन रचनाकारक

अतिसाधारण प्रस्तुति मानल जाए। विरोधाभास शीर्षक कविता सेहो देशकालक दशासँ उबल मनुक्खक लेल कोनो अर्थमे प्रेरणास्त्रोत नै मानल जा सकैत अछि-

कतहु चैन नहि पाबइ छै नर,

आशा तृष्णा शरसँ बेधल

एक फांस सँऽ जखनहि छूटल,

दोसर मे तखने उद्वेगल।

ज्ञान झाक वियोग शीर्षक कविता कोनो व्यक्ति विशेषकेँ निर्देशित नै कए कऽ सरस्वतीक भंगिमामे जीवनक तादात्म्यकेँ झलकाबैत अछि। समए कालक दशापर वृति चित्र जकाँ लिखल गेल कवितामे भ्रष्टाचार आ जाति समाजक कुण्ठाक विवरण प्रसंगिक मानल जा सकैछ। प्रेमक रूप जौं अनुशासित हुअए तँ प्रेमी-प्रेमिकाक चरित्र आ विचारकेँ नकारात्मक मानव उचित नै। मैथिली साहित्यमे ऐ विषएपर बहुत रास कविता लिखल गेल अिछ मुदा सूर्यमुखीमे सन्निहित *रूप-राशि* कविताकेँ किछु आर अनुशासित पद्यक श्रेणीमे राखब उचित। कविक दृष्टिमे प्रेमिकाक देह चानन जकाँ, कंठ मुरली सन, करतल किसलय सन, रूप दर्पण सन, आँखि कालिन्दी सन आ छाँह चुम्बक जकाँ लगैत छन्हि। कवि प्रेमिकाक गामकेँ वृन्दावन जकाँ आ जइठाम प्रेमिकाक चरण पड़ैछ ओइ भूमिकेँ गोकुल जकाँ पवित्र मानैत छथि। वास्तविक जीवनमे आरसी बाबू पवित्र आचरणक व्यक्ति छलाह तँए व्यक्तिगत जीवनमे भऽ सकैछ जे अपन अर्द्धांगिनीक प्रति समर्पित कविता लिखने होथि वा समाजक लेल प्रेम संदेश सेहो ऐ पद्यकेँ मानल जा सकैछ। राग लय आ गतिमे महाकवि विद्यापतिक पद्य सबहक कोनो तुलना नै भऽ सकैछ मुदा नीक लागल जे आरसी बाबूक दू गोट पद्य विद्यापतिक पदावलीमे सन्निहित गीत जकाँ सूर्यमुखीमे लिखल गेल अछि- हरिगीतिका आ

अनुराधा दुनू पद्य विद्यापतिक रचनाक छाँह जकाँ लागल। *अनुराधा* तँ राग भैरवीमे महाकविक लिखल बहुत रास कवितासँ मिलैत अछि।

मैथिली साहित्यमे गजल नाओं सँ तँ बहुत कविक बहुत रास पद्य लिखल गेल अछि मुदा जौं श्रृंगार रसकेँ सरावोरि कऽ गजल वनएबाक चर्च कएल जाए तँ आरसी बाबू रचित *गुलाबी गजल* केँ एकटा अलग स्थान देल जाए। गजलक पाँति-पाँतिमे बिम्ब अलग-अलग होइत छैक। तँए परिधि निश्चित नै। *गुलाबी गजल* पढ़लाक बाद ई भम्र दूर भऽ गेल जे एकटा प्रेमीकेँ अपन प्रेमिकाकेँ समर्पित कएल गेल अछि। चूँकि कवि अपन सिनेहीसँ अलग-अलग दिवसक रूप सरिताक चर्च करैत छथि तँए ऐ पद्यकेँ कोनो पतिकेँ अपन पत्नीक प्रति परम सिनेह भरल उद्वोधन मानल जा सकैछ। वसंतक नहुँ-नहुँ शीतल वयारसँ प्रेमिका मोन आ अंग-अंग फूलल गुलाव जकाँ भऽ गेल अछि। बिनु निसा ग्रहन कएने कवि उन्मत्त छथि, अपन प्रेमिका वा वामाक रूप फण बढ़ाएल सर्प जकाँ लहलहाइत देखाइत छन्हि। वास्तवमे फागुनक रंगसँ आरसी रंगा गेल छथि। १९८१ई.क होली विशेषांक (मिथिला मिहिर) मे ई कविता छपल छल। कविक मोन कहिओ वृद्ध नै भऽ सकैत छै तँए ने कवि अपन अर्द्धांगिनीसँ कहैत छथि- ‘‘कतहु ने जाउ भरि फागुन हमरे लग रहू।’’ वास्तवमे आरसी बाबू ककरा मुखसँ किनका प्रति समर्पित ई गजल लिखलन्हि ई प्रश्नवाचक चिन्ह रहि गेल। मात्र एतवे मानल जाए जे सामाजिक जीवन आ पारिवारिक मर्यादासँ बान्हल आरसी गृहस्थ धर्मक किछु रूपकेँ सदिखन अपन लेखनीसँ स्पर्श करैत रहलाह।

किछु पद्यक विषएमे मैथिली साहित्यमे अखनो मतैक्य नै। ओइमे सँ एक- ‘‘विरहमासा’’ अछि। सामान्य रचनाकार ऐ प्रकारक पद्यकेँ बारहमासा लिखैत छथि आ वर्ख भरिक प्रेमिकाक विरहवेदनाक वर्णन करैत छथि। परंच वास्तवमे वारहमासा नै भऽ कऽ एहेन पद्य विरहमासा थिक। विरहिनी जतेक मास धरि पतिक वियोगमे विलग छथि मात्र ततेक मासक चर्च कएल जाए। कवि मधुपक विरहमासा तँ कतौ पाॅच-छ: मास तँ कतौ वर्ष धरि लिखल गेल। सूर्यमुखीमे देल गेल *विरहमासा* कातिकसँ लऽ कऽ आसिन धरिक प्रेमिकाक वेदना थिक। शब्द-शब्दमे स्वत: मर्मस्पर्शी झंकार मुदा एकटा कमजोर पक्ष जे वर्ख भरिक वेदनामे

कार्तिकक पश्चात् अगहनक चर्च तँ कएल गेल मुदा तकरा बाद मूस माध लुप्त। फागुनक पश्चात् सोझे जेठ मासमे कवि प्रवेश कऽ गेलनि। अषाढ़क चर्च आरसीक मोनेमे रहि गेलनि। विरहक सभसँ हिलकोरि भरैबला मास भादवक ऐ पद्यमे कोनो प्रयोग नै कएलनि। तँए विरहमासाकेँ पूर्ण नै मानल जा सकैत अछि। जौं मात्र छ: मासक चर्च करबाक छलनि तँ लगातार करबाक चाही, सम्पूर्ण सालकेँ छ: मासमे समेटब उचित नै लागल।

कवि कोनो राजनेता नै जे गरीवी भगेबाक योजना तैयार करथि मुदा लेखनीसँ प्रगती शीर्षक पद्य लिख गरीबी दूर करबाक कल्पना अनुखन लागल। वचनिका, उपराग, दिलासा, मुइल सती, परिपाटी, ज्योतिवरण, ललित स्मृति, ॠतुराज दर्शन, असीम आहवान, अर्थीक अर्थ, संक्रान्ति आदि कविताक माध्यमसँ ई ज्ञात होइत अछि जे कवि आरसी कोनो योजना बना कऽ कविता नै लिखैत छलाह, कवित्वक संचार हिनक कण-कणमे व्याप्त छलनि यएह कारण जे आधुनिक मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ आशुकविक श्रेणीमे आरसीक स्थान विलक्षण मानल जाए। आरसी वीसम सदीमे रहितहुँ भूतकालमे प्रवेश कऽ कखनो-कखनो कविता लिखैत छलाह, जकर प्रत्यक्ष प्रमाण *दोहा दोहन* कविता थिक। जइमे १२ गोट दोहा लिखल गेल अछि। कवीर, रहीम जकाँ समए कालक दोहा सभमे वर्त्तमान कालक कलुषित मनोवृत्तिक विविध रूप चित्रण ऐ सभमे भेटैत अछि-

पोथी पढ़ि किछु हैत ने, तोड़ऽ चाही रोट,

जोड़ू नोट बकोटि कऽ भोट बटोरू मोट

अस्पताल सँ नीक अछि हमरा लगै पताल

कालक ओतऽ अकाल अछि काल एतऽ तत्काल।

दीपक दर्प आ नव पद्धुआक संग-संग ३६ गोट मुक्त मुक्तावली सभमे कविताक विविध धाराक ऑचलमे कवि समाजक लेल किछु नव आ वहुआयामी दृष्टिकोण उत्पन्न करए चाहैत छथि। कखनो कवि बाढ़िक पसाहीमे पानिसँ तबाह छथि तँ लघुकविता *पानि* मे *जल-महिमा* क गुणगान करैत छथि-

पानि विना नहि धानक जीवन,

मोतीक रूप न पानि बिना

पानि विना नहि चूनक रौनक

शोभित भूप न पानि बिना...... ।।

एवं प्रकारे आरसीक सूर्यमुखी मात्र सूर्येटा कें नै दर्शन करैत छन्हि, ऐमे सम्पूर्ण मानवताक लेल विविध विषएक दृष्टि समाहित अछि। मैथिलीक लेल दुर्भाग्य जे जनिक कविताक अर्थ किओ नै बूझए ओ मंचपर ज्ञानक शेखी छँटैत छथि, आ आरसी सन आशुकविकेँ अखन धरिक कथाकथित किछु समाज जेना-तेना कवि स्वीकार कएलकनि। वास्तवमे जौं दृष्टिकेँ हृदेसँ जोड़ि *सूर्यमुखी* पढ़ल जाए तँ स्पष्ट भऽ सकैत अछि जे ई मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कविता संग्रह थिक।

२३.अम्बरा- (कविता संग्रह, राजदेव मण्डलक)

बक हॅसैत अछि कुटिल हॅसी,
कलपै छथि लुब्ध मराल।
जे कॅपैत छल डरसँ थरथर,
आब ने तकरो लाज।
पड़ल छथि बंधनमे मृगराज।।

प्रस्तुत पद्यांश कवि सरोज भुवनेश्वर सिंहक कवितासँ लेल गेल अछि। ऐ कवितामे समाज विस्मयकारी अवस्थासँ कवि क्षुब्ध छथि। ऐमे देखाएल युगक विषमताक मार्मिक उद्बोधनसँ जौं अपन भाषा ओ साहित्य दु:दशाक तुलना कएल जाए तँ कोनो अतिशयोक्ति नै। किछु महान साहित्यकार विस्मृत रहि कालक गालमे समा गेलाह। लोक कहै छथि कवि कहियो नै मरैछ ओ तँ अपन रचनामे जीवंत रहै छथि मुदा जखन रचने मरि गेल तँ कवि कोना जीबथि। जे भेल से भेल मुदा हमर दृष्टिकोण जे आबहु चिन्तन कएल जाए। एखनो किछु एहेन रचनाकार उदीयमान छथि वा उगवाक प्रयास कऽ रहल छथि जनिक लेखनीकेँ प्रोत्साहित नहियों तँ कमसँ कम किछु चर्च कएल जाए तँ ओहि रचनाकारक संग-संग भाषा-साहित्यकेँ अमरत्व अवश्य भेटत।

एकटा परिपक्व मुदा साहित्यक भाषामे नवतुरिया कवि मैथिलीक पल्लवकेँ वसन्तक वातसँ हिलएवाक अपना भरि प्रयास कऽ रहल छथि श्री राजदेव मण्डल। हिनक पहिल कविता संग्रह- अम्बरा, श्रुति प्रकाशनक सौजन्यसँ पाठकलोकनि लग परसल गेल अछि। राजदेवजी परिपक्व ऐ दुआरे किएक तँ ओ नव रचनाकार नै छथि मैथिलीकेँ के कहए राजभाषा हिन्दीमे हिनक तीन गोट उपन्यास- पिंजरे के पंछी, दरका हुआ दरपन आ जिन्दगी और नाव छद्म नाओं राजदेव प्रियंकर'क नामें प्रकाशित अछि। बाहर सम्मान

अपन घर अपमानसँ नै वाँचि सकलाह तँए कतेक बर्ख ठकाइते रहलाह। जखन आत्मीय लोक मैथिली अकादमीक अध्यक्ष बनाओल गेलाह तँ राजदेव जीकेँ आश जगलनि, जे समाजक कात लागल वर्गक लोक अकादमीमे अएलनि, रचना प्रकाशित होएत वा किछु मदति भेटत। अकादमीक अध्यक्षक संग-संग अकादमीक पत्रिकाक संपादक मण्डलमे सेहो अपनलोक देख दोहरि आश नेने येनकेन प्रकारेण संपर्क स्थापित कएलनि। करीब तीसटासँ उपरे कविता देबो केलखिन किन्तु मृग मरीचिका मात्र देखबैत रहलखिन। परिणाम निराशावादी रहल।

विदेह' पत्रिकाक पदार्पणक पश्चात श्री उमेश मण्डल जीक माध्यमसँ संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुर जी संग जुड़ि रचना पठाबए लगलाह। श्रुति प्रकाशनक अंतिम मुहर लगितहिं अम्बरा समान्य अर्थमे तँ छाँह मुदा नवल-धवल इजोत नेने पाठक धरि पहुँच गेल अछि।

राजदेव जीकेँ नवतुरिया ऐ दुआरे कहल जाए किएक तँ पूर्वमे लिखल गेल कविता एखन धरि पाठकक लोचनसँ दूर छल। ऐ संग्रहमे 75 गोट कविता देल गेल अछि। आह'सँ श्री गणेश आ ऑखिक प्रतीक्षासँ इतिश्री। एकर तात्पर्य जे रसहीन जीवनसँ आकुल मनुक्ख कुपित अछि मुदा अंतिम स्वप्न वा कल्प आशक संग मूर्त्त रूपमे क्षणहिंमे परिवर्तित भऽ जाइछ। बाह्य रूपमे शीतलता अर्थात शांति देख'मे अबैत अछि परंच भीतरमे धाह.....। कोन प्रकारक धाह? एकरा अश्रु उच्छ्वास, आकुलता, संत्राह वा प्राप्तिक आश नै पूर्ण होएबाक क्रममे उद्विग्नताक नाओं देल जाए। जै व्यक्तिक जीवनक चौमुख आह वा क्षोभसँ घेरल हुअए ओ जौं आकाशकेँ छूवाक कल्पना करए तँ ओकरा विक्षिप्त नै तँ कमसँ कम अतिविश्वासी अवश्य कहल जा सकैत छैक। कुरूक्षेत्रक युद्ध समाप्तिक पश्चात् गांधारीक मनोदश जकाँ अकाश स्पर्शक कल्पनामे अकाश तँ शून्य दृष्टिगोचर होइछ मुदा पाएरक नीचाँ असंख्य लहास आ बॉचल बन्धु बांधब केर कंठ दोहन कविक मोनकेँ अशांत कऽ देलकनि।

भौतिकवादी युगक हीराक चमकिमे अपन साहसक रजत नेने नव मार्गकेँ ताकि रहल छथि-

बिनु लेने आह
कि भेटि सकत
वाह-वाह
परंच,
नहि छी लापरवाह
खोजब नवका राह।

'खोजव' शब्दक स्थानपर ताकब वा हेरब लिख रहितए तँ आर नीक लगितए। संग-संग छंद लेपनक क्रममे कतौ-कतौ अपन भावकेँ कवि व्यक्त नहि कऽ सकलाह।

ज्ञानक झंडा' कवितामे ज्ञानक परिभाषा विज्ञानक अन्वेषणक रूपैँ कएल गेल। विज्ञानक विकास-क्रममे अन्ध विश्वास शनैः शनै समाप्त भऽ रहल अछि-

आब नहि चलत
अंध विश्वासक हथकंडा
फहरा रहल विज्ञानक झंडा....।

प्रयोग धर्मितामे ई गप्प तँ सत्य मुदा वास्तविकताक अवलोकन कएलापर स्थिति भिन्न होइ छैक। ऐ युगमे सेहो पितृ कर्म आ देवकर्ममे विश्वास जागले अछि जखन कि विज्ञानक शब्दकोषमे स्वर्ग-नर्कक परिभाषा असंभव। लोक एखनो श्राद्ध करै छथि, जीवनकालमे भरि पेट अन्न नै मुदा मुइलाक पश्चात सोहल अचार। मिथिलामे जमीन बेच कऽ पितृ श्राद्ध कएल जाइत अछि। साधनविहिन मानव अपन जीवित संतानक प्रति अपन दायित्वक पालन कोना करथि, समाजकेँ एकर कोनो परवाहि नै ओ तँ मात्र पितृधर्म पालनक उपदेश दै छथि। तँए 'ज्ञानक झंडा'मे कविकेँ अनुकरणीय बिम्बक चित्रण करबाक चाही छल जे नै कएलनि।

राजदेवजी शिल्पी नै छथि, किएक तँ कोनो शिल्पक कृत्रिम बिम्ब नै तैयार कएलनि, स्वाभाविक अछि जै व्यक्तिकेँ आरसी, यात्री, चन्द्रभानु, बहेड़ आ बूच जकाँ अपन गृहस्थ धर्मक पालन हेतु अभाव आ संत्रासक अनुभव नित्य-प्रति होइत हुअए ओइ व्यक्तिकेँ कल्पनाशीलताक शिल्प बिम्बित करबाक लेल समए कखन भेटए? ओ तँ जौं अपन जीवन दशासँ समाजक तुलना कर' लागए तँ सदिखन बिम्बे-बिम्ब।

झाॅपल अस्तित्व'क शीर्षक कविता हृदेकेँ स्पर्श करैत अछि-

भीतरमे ओ लगा रहल अछि फानी,
सुनि रहल छी बक्रवाणी
प्राप्त करबाक लेल उत्कर्ष
करऽ पड़त आब संघर्ष....।।

विरोध कोनो जीव ताधरि कऽ सकैत अछि जाधरि ओकरामे संघर्ष करबाक सार्मथ्य जीवित हुअए। पराजयक बेर-बेर हिलकोर लगलासँ आत्म समर्पणक संभावना प्रबल भऽ जाइछ। कखनो कखनो आसक्तिक कारणेँ लोक सेहो आत्मसमर्पण कऽ दै छथि। जेना कुरूक्षेत्रमे भीष्मपितामह अर्जुनकेँ चाहितथि तँ धाराशायी कऽ सकैत छलथि मुदा ओ तँ अर्जुनक विजय हृदेसँ चाहै छलाह।

रहब अहींक सभक संग' कविता आसक्ति, मृगतृष्णा वा मजबूरी कोन रूपक समझौता थिक एकर विवेचन संभव नै, ई तँ कविक जीवनक अनुभवक सार अछि, ओ स्पष्ट रूपेँ बॉटए चाहै छथि-

नहि करब आब नियम भंग
नहि करब अहाँ सभकेँ तंग
लिअ अपन राज,
नहि चाही हमरा ताज....।।

एकटा अर्न्तमुखी सोझ विचारक लोक जखन स्वयंसँ लड़ैत-लड़ैत थाकि जाइत अछि तखन एहने वेदना कृत्रिम हंसीक संग-संग निकसैत। फेरो अपन परिवारिक धर्म मोन पड़िते नदीक माछ बनि जाइछ। जीव जखन

प्राणकेँ छोड़ि दैछ वा प्राण जीवकेँ छोड़ि दैछ तखन लहासक रूप.....ओहि प्रकारें कवि नदीक माछकेँ जलदुनियासँ बाहर निकलबाक प्रयास करै छथि। परिणाम हुनके मुखसँ सुनल जाए-

सुनने छल ओ अपनहि कान
कहने रहथिन बूढ़-पुरान
कहियो नहि जाइहेँ ओहि दुनिया
ओहिठाम भरल अछि खुनियाँ।''

सभ किछु रहितौं अर्थाभाव एखन समाजक सभसँ पैघ अभिशाप बनि गेल छथि समाजक मध्य जत' इमानदरी आन्हर जकाँ गांधारी बनि ठाढ़ छथि, तँए उद्विग्न भऽ जलदुनियासँ बाहर जएबाक प्रयास कएलनि परंच क्षणहिंमे अपन मातृभूमिक सिनेहक कड़ीमे फँसि फेर पानिमे कूदि गेलाह-

मुदा ओ अछि अभागल
जलबून्द कड़ी अछि लागल
विफल भेल छल बलमे
पुन: खसल ओहि नदीक जलमे

जखन लोक अपनाकेँ पूर्णत: एकसरि मानि लैत अछि ओहि कालक मनोदशाक अभिव्यक्तिकेँ करए?

नहि किओ दऽ रहल अछि साथ,
पहाड़ीपर पटकब आब माथ
हूबा देबैक हम खूनसँ
अपना घामक बूनसँ.....।

ऐ प्रकारक परिस्थितिजन्य पद्यक संग-संग सीमा परक झूला, कांध परक मुरदा, दीप, हित-अहित, प्रयास, ऑफिसक भूत, कठुआएल रूप, सुनगैत चिनगी, अहाँक अगवानीमे, लाल ज्योति, बीखक घैल, पत्रोतर, अन्हारक खेल, नाचक विखाह आदि-आदि विचारमूलक मर्मस्पर्शी पद्य ऐ संग्रहमे संकलित अछि। मुदा अंत धरि नव जीवनक आशमे कविक आँखि मात्र प्रतीक्षा कऽ रहल छन्हि-

मन्द-मन्द सिहकैत बसात
केना रहब अहाँसँ भऽ कात
एको बेर तँ बोलू
आबो ऑखि खोलू
निकलए नेह वा धिक्कार
हमरा दुनू अछि स्वीकार...।।

सम्पूर्ण संग्रहमे अश्रुरोदनक बिम्बित चित्रमे नूतन आयामक संग-संग जीवनक नवल आश धएने कवि 'अम्बरा'सँ मुक्तिपर रहब चाहे चलैत, सूतल, ठार वा बैसल....। अम्बरा अर्थात् छायाकेँ लोक एकाकार तँ नै कऽ सकैत अछि परंच भगाएब सेहो असंभव। तँए दुनू रूपेँ कवि अपन जीवनक अम्बराकेँ स्वीकार कऽ लिअ चाहै छथि। रचनाक निर्बल पक्ष जे कतौ आकर्षण नै, कतौ शिल्प नै, कतौ बिम्ब नै मुदा सभ छंद आयामक अभावक बादो राजदेवजी अनचोकेमे एहेन 'कविता संग्रह' लिख देलनि जकर तुलना दोसर कविसँ करब प्रासंगिक नै किएक तँ मैथिली भाषाक लेल एकटा नव प्रकारक प्रयोग ऐमे भेटल।

२४. *मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान*

अपन जन्म कालहिसँ ''मैथिली'' समाजक अग्र आसनपर बैसल वाचकगण द्वारा महिमामंडित होइत रहलीह। स्वाभाविक अछि शिक्षित लोक ऐ वर्गसँ संबंध रखैत छलथि। आर्य परिवारक सभ

भाषा समूहक जननी संस्कृत मानल जाइत अछि तँए मैथिली कोना तत्समसँ बचथि? सरिपहुँ मैथिलीक अधिष्ठाता ब्राह्मण आ कर्ण-कायस्थ रहल छथि, तँए काव्य, महाकाव्य, कथा वा नाटक हुअए सभ साहित्य पल्लवक उदय तत्सम मिश्रित मैथिलीसँ भेल।

आिदकवि विद्यापतिक पदावली पुरान-रहितौं ऐ रूपेँ अपवाद अछि मुदा हुनक *पुरूष परीक्षा* संस्कृतक आवरणसँ बाहर नै निकलि सकल।

संभवत: मैथिलीक कथाक आरंभ पुरूष परीक्षाक मैथिली अनुवाद कऽ चन्दा झा कएलनि। प्रथम मैथिलीक मौलिक *कथा विद्यासिन्धुक* कथा, कथा संग्रह थिक। तत्पश्चात् स्वतंत्र रूपेँ मैथिलीमे कथा लिखब प्रारंभ भऽ गेल। भुवन जीसँ लऽ कऽ वर्त्तमान युगक कथा यात्रामे किछु एहेन कथाकार भेल छथि जनिक यात्रासँ ऐ भाषाकेँ स्थायी स्तंभ भेटल। ऐमे कुमार गंगानंद सिंह, नगेन्द्र कुमर, मनमोहन झा, शैलेन्द्र मोहन झा, रामदेव झा, हंसराज, व्यास, किरण, रमानंद रेणु, गौरी मिश्र, लिली रे, नीरजा रेणु, रूपकान्त ठाकुर, रमेश, धीरेन्द्र धीर, अशोक, मन्त्रेश्वर झा, धूमकेतु, विभूति आनंद, चित्रलेखा देवी, रामभरोस कापड़ि भ्रमर, श्यामा देवी, शेफालिका वर्मा, कमला चौधरी, कामिनी कामायनी, प्रदीप बिहारी, हीरेन्द्र, ललन प्रसाद ठाकुर, गौरीकान्त चौधरी कान्त, अरविन्द ठाकुर, अशोक मेहता, राजाराम सिंह राठौर, परमेश्वर कापड़ि, विजय हरीश, उमानाथ झा, योगानंद झा, सुधांशु शेखर चौधरी, गोविन्द झा, राधाकृष्ण बहेड़, मणिपद्म, मायानंद मिश्र, जीवकान्त, राजमोहन झा, प्रभास कुमार चौधरी, इन्द्रकान्त झा, दिनेश कुमार

झा, नरेश कुमार विकल, सुभाष चन्द्र यादव, केदार कानन, बलराम, अमर, चन्द्रेश, रमाकान्त राय 'रमा', कुमार पवन, सियाराम झा सरस, रामभद्र, रौशन जनकपुरी, राजेन्द्र विमल, रमेश रंजन, सुजीत कुमार झा, जितेन्द्र जीत, नारायणजी, शैलेन्द्र आनन्द, अनमोल झा, उग्रनारायण मिश्र कनक, राजदेव मण्डल, कपिलेश्वर राउत, वीणा ठाकुर, कैलाश कुमार मिश्र, देवशंकर नवीन, महाप्रकाश, धीरेन्द्र नाथ मिश्र, साकेतानंद, सोमदेव, अशोक अविचल, रविन्द्र चौधरी, विद्यानाथ झा 'विदित', शिवशंकर श्रीनिवास, मानेश्वर मनूज, अनलकांत, श्रीधरम, सत्यानंद पाठक, मिथिलेश कुमार झा, नवीन चौधरी, आशीष अनचिनहार, विरेन्द्र यादव, बेचन ठाकुर, गंगेश गुंजन, मनोज कुमार मण्डल, अकलेश कुमार मण्डल, संजय कुमार मण्डल, भारत भूषण झा, लक्ष्मी दास, नीता झा, उषा किरण खान, रामकृपाल चौधरी 'राकेश', विद्यापति झा, ज्योत्सना चंद्रम, सुस्सिमा पाठक, शुभेन्द्र शेखर, कुसुम ठाकुर, दुर्गानन्द मण्डल, ज्योति सुनीत चौधरी, शंकरदेव झा आ गजेन्द्र ठाकुर प्रमुख छथि।

ऐ बीछल कथाकारक समूहसँ विलग किछु एहेन कथाकार भेल छथि जनिक सृजनशीलतासँ मैथिलीकेँ नव गति भेटल। जइमे प्रो. हरिमोहन झा, ललित आ राजकमलकेँ राखल जाए। हरिमोहनबाबू हास्य आ दर्शनसँ समाजक सत्यकेँ नाङट करैत इतिश्री मर्म वा अनुशासित मजाकसँ कएलनि। जइसँ हिनक गंभीर कथा बिम्बपर हास्य भारी पड़ि गेल आ ओहीमे समाहित दर्शन दिस समान्य

पाठकक धियाने नै गेलनि। ललित जीक कथामे सम्यक समाजक परिकल्पना तँ भेटैत अछि मुदा समाजक कात लागल वर्गक विवरण स्वातीक बून जकाँ कतौ-कतौ भेटैत अछि। राजकमल चौधरी प्रयोगवादी कथाकारक रूपेँ प्रसिद्ध छथि। जौं एकैसम शताब्दीक कथा विकासक चर्च कएल जाए तँ ऐ विधामे संतान रहितौं मैथिली बॉझ जकाँ भऽ गेल छलथि। सन् २००१सँ २००८ई. धरिक कथा विकासक चर्च करब प्रासंगिक नै अछि।

सन २००८ई.क उत्तरार्धमे मैथिली साहित्यकेँ एकटा बेछप्प कथाकार भेटल। ओ मात्र कलमें वा वाचक रूपे नै वरण जीवनक सभ क्षेत्रमे, सम्यक चरित्र रखैबला साम्यवादी साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डल। हिनक पहिल कथा भैंटक लावा आ बिसाँढ़ घर-बाहरमे आ चूनवाली मिथिला दर्शन पत्रिकामे प्रकाशित भेल। मुदा घर बाहरमे हिनक रचनाक भाषामे तोड़-मरोड़, उनटा-पुनटा आ काट-छाँट सेहो कएल गेल, जइसँ भाषा-प्रदूषणक गंधसँ गनहा गेल। मैथिलीक किछु तथाकथित कथाकार-कवि हिन्दीक शब्द घोसिया-घोसिया कऽ मैथिलीकेँ प्रदूषित करैत रहल छथि, प्रायः जगदीशजीक खाँटी मैथिली हुनका लोकनिकेँ नै अरघलनि। मुदा तत्पश्चात विदेहक सौजन्यसँ हिनक प्रतिपाद्य कथा बिसाँढ़ वास्तविक रूपरेखाक संग छपल। हम सेहो पढ़लौं। अनेक पाठकक संग श्रुति प्रकाशनक नजरि सेहो पड़लनि आ तखन अविकल रूपमे ई संग्रह छपल।

सन् २००९ई.मे विदेहक संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुरक प्रयाससँ श्रुतिप्रकाशन दिल्लीक अधिष्ठाता श्री नागेन्द्र कुमार झा आ हुनक

साहित्य प्रेमी धर्मपत्नी श्रीमती नीतू कुमारी हिनक पहिल कथा संग्रह ***गामक जिनगी*** प्रकाशित कएलनि। संयोगसँ ऐ पोथीक प्रारंभ भेंटक लावा कथासँ कएल गेल।

एक सए पैंसठ पृष्ठक ऐ संग्रहमे १९ गोट कथा संग्रहीत अछि। आमुख देसिल वयनाक सिद्धहस्त कथाकार सुभाष चन्द्र यादव जी लिखने छथि। जेना-तेना सुभाषबाबू कथाकारक महिमामंडन तँ कएलनि, परंच ऊपर मोने आ हियासँ लिखल आमुखमे भिन्नता होइत अछि, जेकर निर्णए प्रबुद्ध पाठकपर छोड़ि देल जाए।

बंगभाषीकेँ कोलकाता सन महानगर, मागधीकेँ पाटलिपुत्र ऐतिहासिक शहर, भोजपुरी लोकनिकेँ गोरखपुर आ वाराणसी सन धाम भेटल। मैथिली भाषीकेँ गनि-गुथि कऽ दरिभंगा आ सहरसा सन ग्राम्य नगरी। तखन भाषाक शहरीकरण आ आदान-प्रदानक सपनों देखब उचित नै। भारतवर्ष जौं गामक देश तँ मिथिला महागामक भूमि। एक वर्ष बाढ़ि तँ दोसर वर्ष सुखाड़। कोनो उद्योगक साधन नै, शिक्षा, स्वास्थ्य आ सड़क सन मौलिक समस्या मकड़जालमे ओझराएल अछि। परिणाम पलाएन अर्थात पड़ाइनक रूप लऽ रहल। भोजपुरी लोक सेहो पलाएन कएलनि परंच अपन भाषाक संग, दृष्टिकोण नीक लगैत अछि। अपन देशकेँ के कहए मॉरीशस आ फिजी धरि अपन बोली धेने छथि।

अपन जीवन-आचारकेँ हाइटेक बनेबाक क्रममे मैथिल संस्कृतिक दोहन भऽ रहल अछि। आनक कोन कथा? किछु एहेन साहित्यकार भेलाहेँ जिनका साहित्य आकादमी पुरस्कार तँ मैथिली भाषाक लेल

भेटल मुदा हुनक परिवारक नेना-भुटका गलतियोसँ मैथिली नै बजै छथि। कथा जगतक प्रयोगवादी शिल्पी राजकमल जीक कथा रीति-प्रीतिक समागमसँ ओत-प्रोत छन्हि। *ललका पाग, साँझक गाछ, कादम्बरी* उपकथा सन बहुत रास कथामे सिनेहक मर्मस्पर्शी चित्रण कएल गेल अिछ। परंच कतौ-कतौ राजकमल जी सेहो भटकि कऽ अनैतिक प्रेमकेँ चलन्त साहित्यक रूप देलनि। जेना *घड़ी* शीर्षक कथा कोनो रूपेँ समाजमे नीक संदेशक वाहक नै भऽ सकैत अछि। ऐमे उल्लेख तँ समाजक एकात लागल जहूरनीक कएल गेल परंच की अनुशासित सिनेहक प्रदर्शन राजकमल जी कऽ सकलाह? जखन प्रांजल आ प्रवीण कथाकारक ई दशा तँ आनक विषएमे की लिखल जाए।

एक अर्थमे किछु जनवादी साहित्यकार अपन कथा सोतीमे मैथिली पाठककेँ आनन्दित अवश्य कएलनि ओइमे प्रभाष कुमार चौधरी, रामदेव झा आ कांचीनाथ झा किरणक संग-संग धूमकेतु, कुमार पवन, कमला चौधरी आ डॉ. शेफालिका वर्माकेँ राखल जा सकैछ।

जौं सम्पूर्णताक चर्च करी तँ जगदीशबाबूकेँ एकैसम शताब्दीक सर्वश्रेष्ठ कथाकार माननाइ यथोचित। किएक तँ ओलती आ चिनुवार बिसरैबला मैथिली प्रेमीकेँ भेँटक लावा, बिसाँढ़, पीरार, करीन आ मरूआसँ परिचए करौलनि। मैथिली भाषाकेँ नव-नव शब्द देलनि। पाग पहिर कऽ सभामे आगाँ बैसैबला लोकसँ लऽ कऽ मुसहर धरिक प्रति सम्यक सिनेह हिनक कथाक विशिष्टता अछि। जगदीश जी समाजक ओइ वर्गसँ अबै छथि जकरा अखन धरि मंचपर आसन दिअमे हमरा सभकेँ संकोच होइत अछि। परंच कतौ

हिनक कथामे व्यक्तिगत द्वेष आ पूर्वाग्रहक प्रदर्शन नै। जगदीश जी समाजक आगाँक पिरहीकेँ सम्मानित करैत सम्यक ज्योति जगेबाक आश अपन कथा सभमे रखने छथि।

गामक जिनगी'क पहिल कथा भैंटक लावा मिथिलाक बाढ़िक दशाकेँ केन्द्रित कऽ कऽ लिखल गेल अछि। भैंटक लावाक संदर्भमे हमरा सबहक गाम-गाममे एकटा कहबी चर्चित छैक- ''बड़-बड़ जनकेँ भैंटक लावा पदनोकेँ मिठाइ।'' ऐसँ प्रमाणित होइछ जे सोती, मुरदैया, पोखरि, धनखेतामे जलमग्नक परिणाम स्वरूप जनमल भैंटक लावा-निघृष्ठ भोज्य पदार्थ थिक। भोज्य पदार्थ मात्र समाजमे रहितौं यायावरी जीवन व्यतीत करैबला लोक लेल। ऐ कथाकेँ पढ़ि एकर प्रयोजन कनेक विस्मित करएबला परंच उपयोगी लागल। कथा मुसना ओकर अर्द्धांगिनी जीबछी आ दुनू बच्चाकेँ बाढ़िक जीवन दशासँ जोड़ि बिम्बित कएल गेल अछि। अपना ऐठामक लोक संतान प्राप्तिक लेल जीबछ घाटमे मनौती मनैत अछि। जौं पुत्र लेलक तँ जीबछा आ जौं बेटी आएलि तँ जीबछी। ऐ जीबछीक तँ नेनकाल नै देखाओल गेल, ओहेन मॉगल-चॉगल छथियो नै मुदा साहस देखनुक। मुसनाकेँ सर्पदंशक काल जीबछी साहस नै छोड़ली। झाड़-फूक सन भ्रांतिकेँ ऐ कथामे देखाओल गेल परंच परिणाम सकारात्मक- ''मुदा ढोढ़ सॉप कटने रहए तँ बिख लगबे नै केलै।'' ऐसँ रचनाकारक ग्राम्य जीवनक मनोदशाकेँ परिवर्तन करबाक उद्देश्य प्रमाणित होइत अछि।

श्रीकान्त सन गामक छड़ीदारकेँ बाढ़ि उद्देश्य पूरा नै करए देलक। जौं अन्न रहितनि तँ सूदिखोरी चैलतनि मुदा अपने खएबाक लेल नै तँए आगाँ की सोचथि.....?

जीवछी हुनके आश्रममे कुटौनी करति छलीह, श्रीकान्तबाबूकेँ सोगाएल देख जीबछीक कथन- ''एक्केटा बाढ़िमे चिन्ता करै छथि कक्का, कनी नीक की कनी अधलाह, दिन तँ बितबे करतनि।'' मे साहसक संग-संग यथार्थबोध होइत अछि। अभावक नाहमे सवार व्यक्तिकेँ भासि जएबाक कोनो चिन्ता नै, ओ तँ ई सोचि कऽ जल-यात्रा करैत अछि जे अथाह पानिमे नाह डूबबे करत। तँए हेलबाक कला पहिने सीख लेल जाए। दीन-हीन आ साधन विहीन मानवीय जीवनमे विचलन नै होइत छैक। मुसना अर्थात मकसूदन मूसक तीमन आ धुसरी चाउरक भातमे जीबछीक सिनेह आ दुखनीक आश देख अमृत मानि कऽ ग्रहण कऽ लेलक। रातुक कोनो चिन्ता नै जीबछी साक्षात आर्या बनि ठाढ़ छलीह- ''ककरो किछु होउ जकरा लूरि रहतै ओ जीबे करत।'' बाढ़िसँ सभ कियो तबाह कमला महरानीकेँ दीप बाड़ि अपन प्रभाव कम करबाक प्रार्थना सभ कियो करैत छल। यएह थिक मिथिलाक गामक जीवन केर मनोवैज्ञानिक रहस्य। हम-सभ भगवतीक आगाँ बलि प्रदानो कऽ सकैत छी तँ कखनो प्रकृत पूजन सेहो। जखन पानि कम भेल तँ सभ कियो अपन डूबल खेत-पथारक गलल डॉटकेँ गनऽ मे लागि गेलाह मुदा जीबछीक पारखी दृष्टि भैंटक कोखिकेँ देखबामे मग्न छल। श्रीकान्तबाबूसँ आज्ञा लऽ कऽ हुनक खेतसँ भाँटिकेँ उजाड़ि अन्न निका लऽ लगलीह। लावाक सुगंधसँ जीबछीक कल्पनामे चारि चान लागि गेल बाढ़िकेँ जीवनक उपहार मानि कमला-कोसीकेँ धन्यवाद

दिअ लगलीह। ऐ प्रकारक सोचसँ कियो विस्मित भऽ सकैत अछि-बाढ़ि कखनहुँ लाभकारी कोना होएत? मुदा जीबछीकेँ डूबैक लेल तँ किछु रहबे नै करए धास-पातक घर फेर बनि जाएत। महींस नहियो तँ गाइये कीनबाक योजना बनाबऽ लगलीह।

स्वाभाविक अछि कर्मठ लोककेँ दुआरि ताकए नै पड़ैत अछि। कथाक सभसँ नीक प्रसंग लागल जे पहिलुक भैंटक चाउर श्रीकान्तबाबूकेँ देबामे जीबछीक दृष्टिकोण। गरीब कखनहुँ विश्वासधात नै कऽ सकैत अछि। संग-संग कथाक आकर्षण घटना चक्रक क्रममे जखन ठेंगी मुसनाक भरि पोख खून पीब लेलक तखन मुसनाक शंकाग्रस्त हएब जे जीबछी हुनक मरबाक कामना करैत अछि किएक तँ दोसर पुरूष भेंट जेतनि। समाजक दाबल वर्गमे नारी शोषण नै, किएक तँ नारी पुरूषक संग-संग जीवनक वाहनकेँ गति देवामे गतिशील रहैत छथि। ओ दोसरो विवाह करबाक लेल स्वतंत्र छथि। आगाँक जाति तँ नारीकेँ आब अधिकार दिअ लागल पहिने तँ ओ अंगनक लक्ष्मी मात्र छलीह। ऐ कथाकेँ पढ़बाक क्रम सोचऽ मे अबैत अछि जे आगाँ किनका मानल जाए मुसना सन मुसहरकेँ वा हमरा सन......।

रचनाकारक एकटा आर दृष्टिकोण नीक मानल जाए जे समाजक दूटा अलग-अलग वर्गक कथा कहितहुँ वर्ग संघर्ष नै वरन् सिनेहिल भाव। श्रीकान्त लावा तँ स्वीकार करै छथि संगहि जीबछीकेँ नव-वस्त्रक संग विदाइ सेहो दै छथि ऐमे सामाजिक सामंजस्यकेँ बढ़ेबाक प्रयास देखएमे आएल।

ऐ कथा संग्रहक दोसर कथा ‘‘बिसाँढ़’’ भैंटक लावाक विपरीत सुखारक स्थितिक मध्य घुमैत अछि। प्रकृति प्रदत्त विपदामे सभसँ बशी प्रभावित समाजक पेटकान लाधल वर्ग रहै छथि। कथाक नायक डोमन चारि बर्खक रौदीसँ तप्त छथि। हिनका खेत-पथार नै। अपन कनियाँ सुगियाक संग मेहनति मजूरी कऽ कऽ कहुना जीवन वसर करैत छलाह मुदा जखन गिरहस्ती समाप्त भऽ गेल तँ नीक-नहाँति गुजर करबाक कल्पनो असंभव। परंच सुगिया तँ छथि मैथिल नारी, ओइ समाजक नारी जतए पुरूषसँ बेसी परिवारक भार नारियेपर रहैछ। हारि कोना मानतीह। डोमनकेँ दुखित देख नूतन ओिरयान करबाक लेल अद्यत भऽ गेली। बड़का-बड़का मजाहन जेना नेङरा काका अपन महाजनी बन्न कऽ लेलनि। ओ अपन झाँपल अन्न-पानिकेँ अगिला साल उच्च भाउपर बेचबाक तैयारी कऽ रहल छथि। गाए-बरदकेँ मरनासन्न देख किसान तँ अरण्यरोदन करैत अछि मुदा गिद्ध प्रसन्नचित्त मुक्त गगनमे मँडराइत रहैछ, यएह हाल छन्हि बौकी काकीकेँ, अपन महाजनीक लेल राखल चाउरकेँ मातृनवमीमे निकालतीह। हाय रे हमरा सबहक संस्कृति नेना भूखसँ कल्हाइत छथि मुदा मातृनवमीमे मरल पूर्वजक स्मृतिमे अरबा चाउर पंडित केर पातपर देल जाएत। सरिपहुँ यथास्थिति जे हुअए परंच दुर्गापूजा, कोजगरा, दीवाली, गोवर्धनपूजा, भरदुतिया छठि आदिकेँ मिथिलाक संस्कृति पर्व मानि रचनाकार सम्यक दृष्टिकोणक परिचय देलनि। जगदीशजीक जन्म एहेन परिवार वा वंशमे भेल जइठाम कोजगरा मनाएब असंभव मुदा ब्रह्मण आ कर्ण कायस्थ सन अपेक्षाकृत कम गणनाक जातिकेँ सेहो आत्मसात् कऽ लेलनि। ऐसँ

पूर्व कोनो ब्राह्मण साहित्यकार गोवर्धनपूजा वा सलहेसपूजाकँ मिथिलाक पावनि मात्र मंचेटा पर मानने हेताह।

कथाक इतिश्री सुखारक मध्य एहेन फलक शोधक रूपमे कएल गेल जकर विषयमे बहुत कम लोक सोचने हेताह। सुक्खल पोखरिकँ डाँड़ भरि कोरि उज्जर-उज्जर अल्हुआ सन फर देख सुगियाक भुक्खल आत्मा जुरा गेल ओतऽ पुरान व्यथाक मध्य वर्त्तमान सुखद अनुभूतिक तुलना करए लगलीह विकल जीक गजल- "शेषांशपर रोदन करू गीत उदित भानपर....।" उपर बिसाँढ़ आ नीचाँ सिंगही माछ जौं वनस्पति शास्त्री रहती छल तँ पुरस्कार निश्चित, मुदा गरीबक शोध तँ पेट खातिर होइत अछि, एकरा अपन समाजमे मोजर नै, आनठाम के देत।

धनिया आ पिचकुनक प्रेम आ वैवाहिक जीवनमे भैंटक लावा वा बिसाँढ़ सन एकटा तेसर उपेक्षित फल- पीरारक फड़ सिनेह वृष्टि करैत अछि।

जगदीश जीक कथा सभमे बिम्ब विस्मयकारी, शिल्प समाजक जीवन शैलीक विषम परिपेक्ष्यक विवेचन करैत छन्हि, मुदा एकटा कमी जे देखल गेल ओ अछि अलंकार आ हास्यक अभाव। वास्तवमे ऐ कथाक प्रति आकर्षण ओकरामे भऽ सकैत अछि जेकर जीवन अछोप हुअए। जौं पातपर भात नै तँ चटनीक कोन प्रयोजन। हिनक कथा ओइठामक समाजकँ हिलकोरि देलक जतए

धरि पंडित हरिमोहन झा सन मॉजल साहित्यकार कहियो नै पहुँच सकलथि, आनक कोन गप्प?

''अनेरूआ बेटा'' कथामे एकटा संतानहीन दंपतिकेँ दोसरक फेंकल पूतक पोषण मैथिली साहित्यमे क्रांतिवादकेँ आगाँ बढ़एबाक प्रयास मानल जाए। गंगाराम आ भुलियाक वरदपूत मंगल कथानायक छथि। ओ मात्र साक्षर भेला उत्तर चाहक दोकानदार बनि गेलाह। मंगल, धर्ममाता आ पालक पिताक मृत्युक पश्चात अपन पेटसँ लड़ैत-लड़ैत कोना साहित्यकार भऽ गेलथि संभवत: जगदीशजी लेखनी उठबैसँ पहिने नै सोचने हेताह।

एकटा प्रसंग कनेक अनसोहाँत लागल जे गंगारामक स्त्री अबोध मंगलकेँ दुग्धपान करएबाक लेल अपन पितिऔत दियादिनी कबूतरी लग पहुँचै छथि। कबूतरी विस्मित नै भऽ कऽ भुलियासँ कहलनि जे हिनक बुढ़ाढ़ीक नेना कतेक पोरगर। मातृत्वक अवधि नौ मासक होइत अछि जखन पहिने भुलियामे कोनो एहेन लक्षण नै तँ कबूतरीक ऐ प्रकारक संवाद रचनामे कल्पनाशीलता भरबाक असफल प्रयास मात्र मानल जाए। भऽ सकैछ कथाकार कबूतरीकेँ हँसी-ठठाबला प्रवृत्तिक कलाकार बनबैत लिखने होथि।

मंगलकेँ साहित्यकार बनेबामे रूपचन सन खिसक्करक बड़ पैघ हाथ छल। कहियो राजा-रानी तँ कहियो रानी-सरंगा तँ कहियो रजनी-

सजनीसँ लऽ कऽ गोनू झा, डाकक कथा, अल्हा रूदल, दीना-भदरी, लोरिक आ सलहेसक कथाक संग-संग गामक लोकक मुँहसँ सेहो सुनि-सुनि कऽ चाह विक्रेता मंगल कथाकार बनि गेलथि। ऐ प्रकारक कथा नाट्य रूपमे ‘‘भफाइत चाहक जिनगी’’मे शेखरजी लिखने छथि। समग्र समाजक प्रति सम्यक दृष्टिकोण रखैत अर्थनीतिकेँ रचनाक मूल विषय वस्तु बनएबामे जगदीश जीक कोनो जोड़ मैथिली साहित्यमे नै भेटत। कलान्तरमे वकील साहेबक पुत्री सुनएना मंगलसँ प्रभावित भऽ हिनका अपन जीवन संगी बनएबाक लेल आतुर भऽ गेली। ऐ निर्णएमे वकील साहेब सुनयनाक संग छथि। कथाक अंत धरि निष्कर्ष नै निकलि सकल मुदा एकटा प्रश्न हमरा सबहक माथपर रचनाकर लादि देने छथि- ओ अछि जाति, धर्मसँ ऊपर उठि कऽ आत्मिक मिलनक आधारपर विवाह करबाक निर्णए। भऽ सकैत अछि जे कथाकार अपन व्यक्तिगत जीवनमे एहेन क्रांतिकारी कदमक विरोधी होथि, मुदा हम अपन छठम ज्ञानेन्द्रिय अनुभूतिक आधारपर कहि सकै छी अगिला पचास वर्षक अंदर हिनक रचना आर्यावर्त्तमे क्रांतिक सूत्रपात करैत बदलैत दृष्टिकोणक प्रत्यक्षदर्शी रहत।

समग्र ग्राम्य जीवन शैलीकेँ छुबैत एकसँ बढ़ि कऽ एक कथाक संग्रह ‘‘गामक जिनगी’’ मैथिली साहित्यक लेल बेछप्प संकलन थिक।

‘‘डीहक बटवारा’’मे शहरी जीवनकेँ जीबि अंतिम अवस्थामे पितृभूमिकेँ अपन शेखी ओ शानक भूमि बनएबाक अविरल प्रस्तुति

कएल गेल अछि। गामकेँ खराब शहरी लोक कऽ दैत छथि। ''बाबी''कथामे बाबी मुरूख रहितहुँ गामक पथ प्रदर्शक महिला छथि। छठिमे एकटा छोट नेना पूजासँ पूर्व पाकल केरा खा गेल सभ ओकरा मारए लागल मुदा बाबी सिनेह देखबैत भगवानकेँ श्रद्धासँ प्रसन्न करबाक प्रयास करए लगलीह। आडंवरपर मूर्ख महिलाक विजयी उद्घोष ऐसँ नीक शिल्प कतए-कतए देखाओल गेल। रहमतक माए बाबीसँ खरनाक बासि प्रसाद लऽ संध्या अर्घक लेल फल-फूल देलनि आ बाबी हृदेसँ स्वीकार कऽ लेलथिन। वास्तवमे मिथिला यएह छल, मुदा किछु छद्म स्वार्थी तत्व एकरा जाति धर्मक खाधिमे ठाम-ठाम खसा देलक। संध्या अर्ध्यमे रहमतक माए किछु देरीसँ औतीह किएक तँ हटिया जएबाक छन्हि। ''कर्म प्रधान विश्व करि राखा'', बाबी हिनक निर्णएसँ सिनेहिल छथि किएक तँ भगवान प्रेमक भुक्खल, श्रद्धा कियो अखनहुँ प्रकट कऽ सकैत छथि।

कामिनी कथाक प्रारंभ अर्थक विजय मुदा अंतमे टकासँ कीनल वर द्वारा अर्धांगिनीक प्रताड़नासँ भेल। अंतमे प्रश्ने रहि गेल ''कामिनी कतए गेली?''

राजकमल जीक कथा जकाँ जगदीशजी सेहो प्रश्न छोड़ि इतिश्री कएलनि। प्रयोगवादिताकेँ मैथिलीक धरातलपर दोसर बेर प्रयोग, मुदा राजकमलजी सँ नीक रूपेँ कएलनि। गामक जिनगीक कथाकार सभसँ पैघ जे वस्तु मैथिलीकेँ देलनि ओ थिक नव-नव शब्द। ऐ प्रकारक शब्द कोनो अकाशसँ नै खसल, शोषित समाज आ अगिला पातिक गरीब समाजमे एखनो बाजल जाइत अछि, मुदा मैथिली साहित्यकारक रचना सभमे लुप्त।

मात्र किरणजी, हरिमोहन झा, सोमदेव आ शेखरजी सन किछु कथाकारक किछुए रचनामे एहेन प्रकार शब्द भेटैत अछि। मुदा ओ सभ शब्द ओतेक रूपक नै जतेक जगदीशबाबूक रचनामे ठाम-ठाम प्रयोगमे अबैत अछि।

आब प्रश्न उठैत अछि जे मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ कथा संग्रह ‘‘गामक जिनगी’’केँ किएक नै मानल जाए। नि:संदेह हरिमोहन झा, किरण, राजकमल, धूमकेतु, ललित आदि मैथिलीक सिद्धहस्त कथाकार छथि। हरिमोहनबाबू हास्य, दर्शन ओ मर्मक त्रिवेणीसँ कथा सभकेँ बोरैत सभसँ जनप्रिय कथाकार मानल गेलाह, मुदा हिनक कथामे हास्य समागमक क्रममे गंभीर लेखन सुशुप्त भऽ गेलनि। चर्चरीमे जौं गंभीरता अछि तँ ओ मात्र समाजक अगिला लोकक प्रतिनिधित्व करैत छन्हि, अगिला लोक साहित्यक अधिकारी तँ छथि, मुदा भाषासँ दूर भऽ रहल छथि। समाजक अंतिम पाँति धरि हरिमोहनजी अधिकांश कथामे नै पहुँचलाह। किरण जीक किछु कथा जेना मधुरमनि ऐ रूपक छन्हि, मुदा जगदीश जीक कथाक दर्शनसँ हुनको तुलना केनाइ उचित नै। फनीश्वरनाथ रेणु जौं मैथिलीमे लिखतथि तँ स्थिति थोड़े फराक भऽ सकैत छल। रेणुजी उपन्यासकारक रूपेँ हिन्दीक प्रेमचन्द्रक पश्चात सर्वश्रेष्ठ गद्यकार मानल जा सकैत छथि मुदा कथाकारक रूपेँ हमरा सबहक जगदीश जीसँ आगाँ नै। पाठक जौं आत्मीय भऽ कऽ ‘‘गामक जिनगी’’ पढ़थि तँ निश्चित रूपेँ हम कहि सकैत छी जे ई पोथी मैथिली साहित्यक एखन धरिक सर्वश्रेष्ठ कथा संग्रह थिक।